दुआए जौशने कबीर

यह दुआ बलदुल अमीन और मिस्बाहे कफअमी में नक्ल की गई है। और इसकी रवायत इमामे ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) से उनके पिता के हवाले से पैगंबरे इस्लाम से की गई है। के इस दुआ को जिब्रईले अमीन किसी जंग के मौके पर लाए थे। जब आपके शरीर पर एक भारी ज़िरा थी। जिसके आप खस्ता हाल हो रहे थे। तो जिब्रईल ने कहा पैगम्बर परवरदिगार आपको सलाम भेजता है और फरमाता है इस जौशन को उतार दे और इस दुआ को पढें जो आपके और आपकी उम्मत के लि अम्नो अमान का वसीला है। उसके बाद उन हज़रत ने एक दुआ के बेशुमार फज़ाएल नक्ल किये हैं जिनके नक्ल करने का यह मौका नहीं है। उनमें से एक फ़ज़ीलत यह भी है के जो शख्स यह दुआ को अपने कफन पर लिख ले तो अल्लाह फरमाता है के मुझे उस बंदे पर अज़ाब करते हुए हया आती है। और जो व्यक्ति भी इस दुआ को खुलूस के साथ माहे रमज़ान की पहली रात में पढ ले परवरदिगार उसे शबे कद्र की

तौफीक इनायत करता है। और उसके लिए सत्तर हज़ार फरिश्ते पैदा करता है जो उसकी तरफ से तसबीह और तकदीस करते रहते हैं और उसे सवाब मिलता रहता है। यहाँ तक के रवायत में यह भी है के अगर कोई व्यक्ति रमज़ान के महीने में उसे तीन बार पढले तो परवरदिगार उसके शरीर को जहन्नम पर हराम कर देता है। और जन्नत उसके लिए लाज़म करार दे देता है। और मलक मोअय्यन कर देता है जो उसे ज़िंदगी भर गुनाहों से बचाते रहें और उसे अम्नो अमान में रखें।

आखिर रवायत में है के इमाम हुसैन (अ.स.) ने फरमाया के मुझ से मेरे पिता ने इस दुआ को याद करने की वसीय्यत फरमाई है। और फरमाया है के इसे कफन पर लिखा जाए और अपने अहलो अयाल को इसकी तालिम दी जाए। और इसके पढने की तरगीब दिलाई जाए। इस दुआ में परवरदिगार के हज़ार नाम है जिनमें इसमे आज़म भी है।

लेखक: इन दोनो रवायतों से दो बातों का इस्तेफादा होता है:

१. इस दुआ को कफन पर लिखना मुस्तहब है जैसा के अल्लामा बहरूल उलूम ने अपनी किताबे दुर्रा में इसकी तरफ इशारा फरमाया है।

२. अव्वल माहे रमज़ान में इस दुआ का पढना मुस्तहब है। शबहाए कद्र में बिल खुसूस इस दुआ के पढने का एक रिवायत में कोई ज़िक्र नहीं है। लेकिन अल्लामा मजलिसी ने ज़ादुल माद में शबे कद्र के आमाल में तहरीर फरमाया है के बाज़ रवायात से मोलूम होता है के तीनो शबहाए कद्र में इस दुआ को पढना चाहिए। और ज़ाहिर है के उनका फरमा देना ही काफी है। उनका मुतालेआ बेहद वसी था।

बहरहाल इस दुआ में सौ फसलें है और हर फस्ल में अल्लाह के दस नाम है। और हर फस्ल के आखिर में यह फिक्रा पढे:

बलदुल अमीन में कहा गया है के हर फस्ल के शुरू में बिस्मिल्लाह भी पढे और आखिर में इस प्रकार कहे:

سُبْحَانَكَ يَا لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْغَوْثَ الْغَوْثَ خَلِّصْنَا مِنَ النَّارِ يَا

पाक है तेरी जात। तेरे सिवा कोई माबूद नही है। पनाह दे, पनाह दे, पनाह दे। ऐ रब हमे जहन्नम

رَبِّ.

की आग से बचा।

पाक है तेरी जात। तेरे सिवा कोई माबूद नही है।
पनाह दे, पनाह दे, पनाह दे। मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत भेज और हमको जहन्नम की आग से सुरक्षति रख ऐ रब। ऐ जलाल व इक्राम वाले ऐ रहमान व रहीम।
दुआ इस प्रकार है:

١. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَآ اَللّٰهُ يَارَحْمٰنُ يَا رَحِيْمُ يَا

१. खुदाया! मैं भीख मांगता हूं तेरे नाम से। ऐ अल्लाह! ऐ रहमान। ऐ रहीम! ऐ करम करने वाले। ऐ कायम। ऐ बुजुर्गा वाले। ऐ हमेशा रहने

كَرِيْمُ يَامُقِيْمُ يَاعَظِيْمُ يَا قَدِيْمُ يَا عَلِيْمُ يَا حَلِيْمُ يَا

वाले। ऐ दाना। ऐ बुर्दबार। ऐ हिकमत वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे

حَكِيْمُ. ٢. يَاسَيِّدَ السَّادَاتِ يَا مُجِيْبَ الدَّعَوَاتِ يَارَافِعَ

हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। २. ऐ सरदारों के सरदार ऐ दुआओं के कुबूल करने वाले ऐ मतबों के बुलन्द करने वाले ऐ नेकियों

الدَّرَجَاتِ يَا وَلِيَّ الْحَسَنَاتِ يَا غَافِرَ الْخَطِيْئَآتِ يَا مُعْطِيَ

के वाली ऐ गुनाहों के बखशने वाले ऐ अता करने वाले सवालात के। ऐ तौबा कबूल करने वाले ऐ आवाज़ों के सुन्ने वाले ऐ पोशीदा बातों के

الْمَسْئَلَاتِ يَا قَابِلَ التَّوْبَاتِ يَا سَامِعَ الْاَصْوَاتِ يَا عَالِمَ

जानने वाले ऐ बलाओं के दफा करने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे

الْخَفِيَّاتِ يَا دَافِعَ الْبَلِيَّاتِ. ٣. يَاخَيْرَ الْغَافِرِيْنَ يَا خَيْرَ

हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ३. ऐ बहतरीन बखशिश करने वाले। ऐ बेहतर कशाइश करने वाले। ऐ बहतरीन नुसरत करने

الْفَاتِحِيْنَ يَا خَيْرَ النَّاصِرِيْنَ يَا خَيْرَ الْحَاكِمِيْنَ يَا خَيْرَ

वाले। ऐ बेहतरीन हुकम करने वाले। ऐ बहतरीन रिज़्क करने वाले। या बेहतरीन वारिसों के (वारिस)! ऐ बहतरिन हम्द करने वाले। ऐ

الرَّازِقِيْنَ يَا خَيْرَ الْوَارِثِيْنَ يَا خَيْرَ الْحَامِدِيْنَ يَا خَيْرَ

बेहतरीन ज़िक्र करने वाले। ऐ बेहतरीन नाज़ल करने वाले। ऐ बहतरीन एहसान करने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है

الذَّاكِرِيْنَ يَا خَيْرَ الْمُنْزِلِيْنَ يَا خَيْرَ الْمُحْسِنِيْنَ. ٤. يَا مَنْ لَهُ

और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ४. ऐ वह जिसके वास्ते इज़्ज़त दीन की है ऐ वह

الْعِزَّةُ وَ الْجَمَالُ يَا مَنْ لَهُ الْقُدْرَةُ وَ الْكَمَالُ يَا مَنْ لَهُ

जिसके वास्ते कुदरंत व कमाल है ऐ वह ज़ात जो बुज़ुर्ग व आली मरतबा है। ऐ पैदा करने वाले भारी भारी बादलों के, ऐ वह खुदा जो सबसे

الْمُلْكُ وَ الْجَلَالُ يَا مَنْ هُوَ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ يَا مُنْشِءَ

ज़्यादा मुंशिअस्सहाबिस्सिक़ालि या मन हुव शदीदुल मिꣳहालि या मन हुव शदिदु मिहालि या मन हुव सरीअुल ह़िसाबि या मन हु-व शदिदुल

السَّحَابِ الثِّقَالِ يَا مَنْ هُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ يَا مَنْ هُوَ

इक़ाबि या मन इन्दहु हुस्नुस्सवाबि या मन इंदहु उम्मुल किताब है। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद

سَرِيْعُ الْحِسَابِ يَا مَنْ هُوَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ يَا مَنْ عِنْدَهُ

रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ५. खुदावन्दा! ब तहकीक सवाल करता हूं मैं तेरे नाम से ऐ मेहरबान ऐ एहसान

حُسْنُ الثَّوَابِ يَا مَنْ عِنْدَهُ اُمُّ الْكِتَابِ. ٥. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ

करने वाले ऐ जज़ा देने वाले ऐ रौशन दलील ऐ बादशाह ऐ खुश्नूद करने वाले ऐ बखशन वाले ऐ पाक ऐ अज़ीज़ों के मददगार ऐ साहिबे नेमत

اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَا حَنَّانُ يَا مَنَّانُ يَا دَيَّانُ يَا بُرْهَانُ يَا

और ज़ाहिर करने वाले चीज़ों के। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख

سُلْطَانُ يَا رِضْوَانُ يَا غُفْرَانُ يَا سُبْحَانُ يَا مُسْتَعَانُ يَا ذَا

की आग से ऐ पालने वाले। ६. ऐ वह खुदा जो सब पर गालिब है ब सबब अपनी बुज़ुर्गा के ऐ वह खुदा कि जिसकी कुदरते कामिला से हर

الْمَنِّ وَ الْبَيَانِ. ٦. يَا مَنْ تَوَاضَعَ كُلُّ شَيْءٍ لِعَظَمَتِهٖ يَا مَنِ

चीज़ की सलामती व बका है। ऐ वह खुदा जिसकी बुज़ुर्गा के नज़दीक हर चीज़ जलील है ऐ वह खुदा कि जिसकी हैबत से हर चीज़ आजिज़ी

اسْتَسْلَمَ كُلُّ شَيْءٍ لِقُدْرَتِهٖ يَا مَنْ ذَلَّ كُلُّ شَيْءٍ لِعِزَّتِهٖ يَا

करती है ऐ वह खुदा कि जिसके खौफ से हर चीज़ ताबेदार है ऐ वह खुदा कि फट जाते हैं पहाड़ जिसके खौफ से ऐ वह खुदा जिसके हुक्म से

مَنْ خَضَعَ كُلُّ شَيْءٍ لِهَيْبَتِهٖ يَا مَنِ انْقَادَ كُلُّ شَيْءٍ مِنْ

आसमान कायम हैं, ऐ वह खुदा कि जिस के हुक्म से ज़मीन बरकरार है ऐ वह खुदा जिसकी तसबीह परिश्ता रअद हम्द के साथ करता है

خَشْيَتِهٖ يَا مَنْ تَشَقَّقَتِ الْجِبَالُ مِنْ مَخَافَتِهٖ يَا مَنْ قَامَتِ

और वह खुदा जो अपने बन्दों में से किसी पर ज़ुल्म नहीं करता। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद

السَّمٰوَاتُ بِاَمْرِهٖ يَا مَنِ اسْتَقَرَّتِ الْاَرَضُوْنَ بِاِذْنِهٖ يَا مَنْ

रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ७. ऐ गुनाहों के बख़्शने वाले ऐ बलाओं के दूर करने वाले ऐ उम्मीदों की इंतेहा।

يُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ يَا مَنْ لَّا يَعْتَدِىْ عَلٰى اَهْلِ مَمْلَكَتِهٖ. ٧.

ऐ बखशिशों के तमाम करने वाले ऐ निमतों के अता करने वाले।ऐ तमाम मखलूक के रोज़ी देने वाले। ऐ बन्दों के हाकिम। ऐ शिकायतों के

يَا غَافِرَ الْخَطَايَا يَا كَاشِفَ الْبَلَايَا يَا مُنْتَهَى الرَّجَايَا يَا مُجْزِلَ

सुन्ने वाले। ऐ मखलूक के ज़िन्दा करने वाले। ऐ असीरों के रिहा करने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों

الْعَطَايَا يَا وَاهِبَ الْهَدَايَا يَا رَازِقَ الْبَرَايَا يَا قَاضِىَ الْمَنَايَا

का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ८. ऐ साहिबे हम्द व सताइश। ऐ साहिबे फर्ख व बुज़र्गी। ऐ साहिबे

يَا سَامِعَ الشَّكَايَا يَا بَاعِثَ الْبَرَايَا يَا مُطْلِقَ الْاُسَارٰى. ٨. يَا

इज़्ज़त व रफअत। ऐ साहिबे अहद व वफ़ा। ऐ साहिबे बखशिश व खुश्नूदी। ऐ साहिबे एहसान व अता। ऐ साहिबे फ़ज़ीलत व फ़ैसला बर हक।

ذَا الْحَمْدِ وَالثَّنَآءِ يَا ذَا الْفَخْرِ وَالْبَهَآءِ يَا ذَا الْمَجْدِ وَالسَّنَآءِ

ऐ साहिबे बुलन्दी व हमैशगी। ऐ साहिबे बखशिश व सखावत। ऐ साहिबे निमाते कसीरा। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और

يَا ذَا الْعَهْدِ وَالْوَفَآءِ يَا ذَا الْعَفْوِ وَ الرِّضَاءِ يَا ذَا الْمَنِّ

फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ९. खुदावन्दा मैं बेशक तेरे नाम के साथ तुझसे सवाल

وَالْعَطَآءِ يَا ذَا الْفَضْلِ وَالْقَضَآءِ يَا ذَا الْعِزِّ وَ الْبَقَآءِ يَا ذَا

करता हूं ऐ आफतों के रोकने वाले ऐ बलाओं के दूर करे वाले ऐ बुलन्द करने वाले ऐ पैदा करने वाले ऐ नफ़ा देने वाले ऐ सुन्ने वाले ऐ जमा

الْجُوْدِ وَالسَّخَآءِ يَا ذَا الْاٰلَآءِ وَالنَّعْمَآءِ. ٩. اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ

करने वाले ऐ शफाअत करने वाले ऐ बहुत बखशने वाले ऐ निमतों के ज़्यादा करने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और

اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَا مَانِعُ يَا دَافِعُ يَا رَافِعُ يَا صَانِعُ يَا نَافِعُ يَا

फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। १०. ऐ हर शै को बनाने वाले ऐ हर मख़लूक के पैदा करने

سَامِعُ يَا جَامِعُ يَا شَافِعُ يَاوَاسِعُ يَامُوْسِعُ. ١٠. يَا صَانِعَ كُلِّ

वाले ऐ हर रोज़ी हासिल करने वाले को रोज़ी देने वाले ऐ हर बन्दे के मालिक ऐ हर सख़्ती के दफा करने वाले ऐ हर गमज़दा को खुश करने

مَصْنُوْعٍ يَا خَالِقَ كُلِّ مَخْلُوْقٍ يَا رَازِقَ كُلِّ مَرْزُوْقٍ يَا مَالِكَ

वाले ऐ हर लायके रहम पर रहम करने वाले हर ज़लील व ख़्वार की मदद करने वाले ऐ तमाम अैबदारों की अैब पोशरी करने वाले ऐ हर

كُلِّ مَمْلُوْكٍ يَا كَاشِفَ كُلِّ مَكْرُوْبٍ يَا فَارِجَ كُلِّ مَهْمُوْمٍ يَا

निकाले हुए को पनाह देना वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख

رَاحِمَ كُلِّ مَرْحُوْمٍ يَا نَاصِرَ كُلِّ مَخْذُوْلٍ يَا سَاتِرَ كُلِّ مَعْيُوْبٍ

की आग से ऐ पालने वाले। ११. ऐ मेरे मोतमद हर सख़्ती में ऐ हर मुसीबत में मेरी उम्मीदगाह ऐ मेरी तंहाई में मेरे मूनिस ऐ मेरी साथी मेरी

يَا مَلْجَاَ كُلِّ مَطْرُوْدٍ. ١١. يَا عُدَّتِيْ عِنْدَ شِدَّتِيْ يَا رَجَائِيْ عِنْدَ

मसाफत में ऐ मेरे दोस्त मेरी आज़माइश के वक्त ऐ मेरी सख़्तियों में मेरे फ़रयाद रस ऐ मेरी गुमराही में रहनुमा ऐ मेरी एहतियाज में मेरी तवांगरी

مُصِيْبَتِيْ يَا مُوْنِسِيْ عِنْدَ وَحْشَتِيْ يَا صَاحِبِيْ عِنْدَ غُرْبَتِيْ يَا

ऐ जाये पनाह मेरे इतराब के वक़्त ऐ मेरे मददगार मेरे ख़ौफ़ के वक्त। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का

وَلِيِّيْ عِنْدَ نِعْمَتِيْ يَا غِيَاثِيْ عِنْدَ كُرْبَتِيْ يَا دَلِيْلِيْ عِنْدَ حَيْرَتِيْ

फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। १२. ऐ पोशीदगियों के जानने वाले ऐ गुनाहों के बख़्शने वाले ऐ अैबों के

يَا غَنَآئِيْ عِنْدَ افْتِقَارِيْ يَا مَلْجَائِيْ عِنْدَ اضْطِرَارِيْ يَا

छुपाने वाले ऐ गमों के दफा करने वाले ऐ दिलों को फैरने वाले ऐ दिलों की दवा करने वाले ऐ दिलों को रौशन करने वाले ऐ दिलों के मसाहिब

مُعِيْنِيْ عِنْدَ مَفْزَعِيْ. ١٢. يَا عَلاَّمَ الْغُيُوْبِ يَا غَفَّارَ الذُّنُوْبِ

ऐ ग़मों के खोलने वाले ऐ ग़मों के बरतरफ़ करने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है।

يَا سَتَّارَ الْعُيُوْبِ يَا كَاشِفَ الْكُرُوْبِ يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ يَا

नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। १३. ऐ ख़ुदा ब तहक़ीक़ में सवाल करता हूं साथ तेरे नाम के ऐ बुज़ुर्गवार ऐ नेकोकार ऐ

مُنَوِّرَ الْقُلُوْبِ يَا طَبِيْبَ الْقُلُوْبِ يَا اَنِيْسَ الْقُلُوْبِ يَا

हिफाज़त करने वाले। ऐ बख़शिश करने वाले ऐ रहनुमा ऐ रोज़ी के ज़ामिन। ऐ नेमत देने वाले ऐ दौलत देने वाले ऐ माफ़ करने वाले ऐ कुव्वत

مُفَرِّجَ الْهُمُوْمِ يَا مُنَفِّسَ الْغُمُوْمِ. ١٣. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ

देने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने

بِاسْمِكَ يَا جَلِيْلُ يَا جَمِيْلُ يَا وَكِيْلُ يَا كَفِيْلُ يَا دَلِيْلُ يَا

वाले। १४. ऐ भटके हुँ ओं के रहनुमा ऐ फरयाद करने वालों के फ़रयाद रस ऐ फ़रयाद करने वालों की फ़रयाद सुन्ने वाले ऐ तालिबान मदद

قَبِيْلُ يَا مُدِيْلُ يَا مُنِيْلُ يَا مُقِيْلُ يَا مُحِيْلُ. ١٤. يَا دَلِيْلَ

की मदद करने वाले ऐ ख़ौफज़दों को अमान देने वाले ऐ मोमिनों के मददगार ऐ मिस्कीनों पर रहम करने वाले ऐ ना फ़रमानों की जाये पनाह

الْمُتَحَيِّرِيْنَ يَا غِيَاثَ الْمُسْتَغِيْثِيْنَ يَا صَرِيْخَ

ऐ गुनहगारों के बख़शने वाले ऐ दुआ ओं को कुबूल करने वाले परेशान लोगों की। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद

الْمُسْتَصْرِخِيْنَ يَا جَارَ الْمُسْتَجِيْرِيْنَ يَآ اَمَانَ الْخَآئِفِيْنَ يَا

रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। १५. या ज़ल जूदि वल इहसानि फज़ल व इमतनान, ऐ साहिबे

عَوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ يَا رَاحِمَ الْمَسَاكِيْنَ يَا مَلْجَاَ الْعَاصِيْنَ يَا

अमन् व अमान, ऐ साहिबे तक़दुस व पाकी ऐ साहिबे हिकमत व ज़ाहिर करने वाले चीज़ोंके ऐ साहिबे रहमत और ख़ुशनूद करने वाले ऐ

غَافِرَ الْمُذْنِبِيْنَ يَا مُجِيْبَ دَعْوَةِ الْمُضْطَرِّيْنَ. ١٥. يَاذَا الْجُوْدِ

साहिबे दलीले रौशन ऐ साहिबे बरतरी और बादशाही ऐ साहिबे रहम और मदद मरने वाले ऐ साहिबे अफ्व व बख़शिश। ऐ वह जिसके सिवा

وَالْاِحْسَانِ يَاذَا الْفَضْلِ وَالْاِمْتِنَانِ يَاذَا الْاَمْنِ وَالْاَمَانِ

कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। १६. ऐ वह जो परवरदिगार

يَا ذَا الْقُدْسِ وَالسُّبْحَانِ يَا ذَا الْحِكْمَةِ وَالْبَيَانِ يَا ذَا

हर शै का ऐ वह ख़ुदा जो हर चीज़ का माबूद है और ऐ वह ख़ुदा जो हर चीज़ पैदा करने वाला है और ऐ वह ख़ुदा जो हर चीज़ का बनाने वाला

الرَّحْمَةِ وَالرِّضْوَانِ يَا ذَا الْحُجَّةِ وَالْبُرْهَانِ يَا ذَا الْعَظَمَةِ

है ऐ वह ख़ुदा जो हर चीज़ का बनाने वाला है ऐ वह ख़ुदा जो हर चीज़ के बाद भी पहले है ऐ वह ख़ुदा जो हर चीज़ के बाद भी रहेगा ऐ वह

وَالسُّلْطَانِ يَا ذَا الرَّافَةِ وَالْمُسْتَعَانِ يَا ذَا الْعَفْوِ

ख़ुदा जो हर चीज़ से बरतर है ऐ वह खुदा जो तमाम चीज़ों का जानने वाला है ऐ वह ख़ुदा जो हर चीज़ पर क़दरत रखता है ऐ वह ख़ुदा जो

وَالْغُفْرَانِ. ١٦. يَا مَنْ هُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ يَا مَنْ هُوَ اِلٰهُ كُلِّ

बाकी रहने वाला और हर चीज़ फना होने वाली है। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात

شَيْءٍ يَا مَنْ هُوَ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ يَا مَنْ هُوَ صَانِعُ كُلِّ شَيْءٍ يَا

दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। १७. खुदावन्द तहक़ीक़ मैं सवाल करता हुं तेरे नाम के साथ। ऐ अम्र देने वाले ऐ निगहबान ऐ

مَنْ هُوَ قَبْلَ كُلِّ شَيْءٍ يَا مَنْ هُوَ بَعْدَ كُلِّ شَيْءٍ يَا مَنْ هُوَ فَوْقَ

पैदा करने वाले ऐ इल्म देने वाले ऐ ज़ाहिर करने वाले ऐ आसान करने वाले ऐ जगह देने वाले ऐ ज़ीनत देने वाले ऐ ज़ाहिर करने वाले ऐ

كُلِّ شَيْءٍ يَا مَنْ هُوَ عَالِمٌ بِكُلِّ شَيْءٍ يَا مَنْ هُوَ قَادِرٌ عَلٰى كُلِّ

तक़सीम करने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग

شَيْءٍ يَا مَنْ هُوَ يَبْقٰى وَ يَفْنٰى كُلُّ شَيْءٍ. ١٧. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ

से ऐ पालने वाले। १८. ऐ वह ख़ुदा हो अपनी सलतनत में क़याम करने वाला है ऐ वह ख़ुदा जो अपनी बादशाही में क़दीम है ऐ वह ख़ुदा जो

بِاسْمِكَ يَا مُؤْمِنُ يَا مُهَيْمِنُ يَا مُكَوِّنُ يَا مُلَقِّنُ يَا مُبَيِّنُ يَا

अपनी बुज़ुर्गी में बहुत बड़ा है ऐ वह ख़ुदा जो अपने बन्दों पर रहम करने वाला है ऐ वह ख़ुदा जो हर शै जानने वाला है ऐ वह ख़ुदा जो अपने

مُهَوِّنُ يَا مُمَكِّنُ يَا مُزَيِّنُ يَا مُعْلِنُ يَا مُقَسِّمُ. ١٨. يَا مَنْ هُوَ فِيْ

ना फ़रमान बन्दों पर बुर्दबार है ऐ वह ख़ुदा जो उम्मीदों पर करम करने वाला है ऐ वह ख़ुदा हो अपनी संअते कामिला में हकीम है ऐ वह ख़ुदा

مُلْكِهٖ مُقِيْمٌ يَا مَنْ هُوَ فِيْ سُلْطَانِهٖ قَدِيْمٌ يَا مَنْ هُوَ فِيْ

जो अपनी हिकमत में लुत्फ़ करने वाला है ऐ वह ख़ुदा जो अपनी लुत्फ़ करने में कदीम है। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है

جَلَالِهٖ عَظِيْمٌ يَا مَنْ هُوَ عَلٰى عِبَادِهٖ رَحِيْمٌ يَا مَنْ هُوَ بِكُلِّ

और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। १९. ऐ वह ख़ुदा जिससे उम्मीद नहीं की जाती मगर

شَيْءٍ عَلِيمٌ يَا مَنْ هُوَ بِمَنْ عَصَاهُ حَلِيمٌ يَا مَنْ هُوَ بِمَنْ

फ़ज़ल की ऐ वह ख़ुदा जिससे सवाल नहीं किया जा सकता मगर उसकी बखशिश का ऐ वह ख़ुदा नहीं देखी जाती मगर उसकी नेकी ऐ वह

رَجَاهُ كَرِيمٌ يَا مَنْ هُوَ فِي صُنْعِهِ حَكِيمٌ يَا مَنْ هُوَ فِي

ख़ुदा कि नहीं ख़ौफ किया जाता मगर उसके इंसाफ का ऐ वह ख़ुदा हमैशगी नहीं रखती कोई चीज़ मगर उसकी बादशाही ऐ वह ख़ुदा नहीं है

حِكْمَتِهِ لَطِيفٌ يَا مَنْ هُوَ فِي لُطْفِهِ قَدِيمٌ. ١٩. يَا مَنْ لَا يُرْجٰى

बादशाही मगर बादशाही उसकी ऐ वह खुदा कि वसी है हर चीज़ के लिए उस रहमत ऐ वह खुदा पेश दस्ती करती है उसकी रहमत उसके

إِلَّا فَضْلُهُ يَا مَنْ لَا يُسْئَلُ إِلَّا عَفْوُهُ يَا مَنْ لَا يُنْظَرُ إِلَّا بِرُّهُ يَا

गज़ब से, ऐ वह ख़ुदा कि उसके इल्म ने हर चीज़ को इहाता किया हुआ है ऐ वह ख़ूदा कि उसके मिस्ल कोई चीज़ नहीं है। ऐ वह जिसके सिवा

مَنْ لَا يُخَافُ إِلَّا عَدْلُهُ يَا مَنْ لَا يَدُومُ إِلَّا مُلْكُهُ يَا مَنْ لَا

कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। २०. ऐ रंज को दूर करने

سُلْطَانَ إِلَّا سُلْطَانُهُ يَا مَنْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ رَحْمَتُهُ يَا مَنْ

वाले ऐ ग़म के खोलने वाले ऐ खताओं के बख़शने वाले ऐ तौबा क़बूल करने वाले ऐ ख़िलकत के पैदा करने वाले ऐ सच्चा वादा करने वाले

سَبَقَتْ رَحْمَتُهُ غَضَبَهُ يَا مَنْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمُهُ يَا مَنْ

ऐ अहद के वफ़ा करने वाले ऐ भेद के जानने वाले ऐ दाना के शगाफ़्ता करने वाले ऐ मख़लूक को रिज़क देने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई

لَيْسَ اَحَدٌ مِثْلَهُ. ٢٠. يَا فَارِجَ الْهَمِّ يَا كَاشِفَ الْغَمِّ يَا

माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। २१. ऐ ख़ुदावन्दा ब तहकीक

غَافِرَ الذَّنْبِ يَا قَابِلَ التَّوْبِ يَا خَالِقَ الْخَلْقِ يَا صَادِقَ

सवाल करता हूं मैं तेरे नाम के साथ ऐ बुलन्द ऐ वफ़ा करने वाले ऐ बे नियाज़ ऐ तवांगर ऐ पोशीदा राज़ के वाकिफ ऐ पसंदीदा तर ऐ नफ़्स को

الْوَعْدِ يَا مُوْفِيَ الْعَهْدِ يَا عَالِمَ السِّرِّ يَا فَالِقَ الْحَبِّ يَا رَازِقَ

पाक करने वाले ऐ हमेशा रहने वाले ऐ कुव्वत रखने वाले ऐ बेहतरीन दोस्त। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद

الْاَنَامِ. ٢١. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَا عَلِيُّ يَا وَفِيُّ يَا غَنِيُّ يَا

रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले २२. ऐ वह कि ज़ाहिर करता है ख़ूबी बन्दा की और ऐ वह कि जो

مَلِيُّ يَا حَفِيُّ يَا رَضِيُّ يَا زَكِيُّ يَا بَدِيُّ يَا قَوِيُّ يَا وَلِيُّ. ٢٢. يَا مَنْ

बुराईयों को छुपाता है और ऐ वह कि मुआखिदा नहीं करता बन्दे के गुनाहों पर ऐ वह कि जो फ़ाश नहीं करता वह बन्दों का ऐ बहुत अफ्व

اَظْهَرَ الْجَمِيْلَ وَ يَا مَنْ سَتَرَ الْقَبِيْحَ وَ يَا مَنْ لَّمْ يُؤَاخِذْ

करने वाले ऐ ख़ूब दर गुज़र करने वाले ऐ बहुत मगफ़िरत करने वाले ऐ खोलने वाले दोनों हाथों के रहमत से बन्दों पर ऐ तमाम भेदों की जानने

بِالْجَرِيْرَةِ وَ يَا مَنْ لَّمْ يَهْتِكِ السِّتْرَ يَا عَظِيْمَ الْعَفْوِ يَا حَسَنَ

वाले ऐ हर शिकवा की इंतेहा। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख

التَّجَاوُزِ يَا وَاسِعَ الْمَغْفِرَةِ يَا بَاسِطَ الْيَدَيْنِ بِالرَّحْمَةِ يَا

की आग से ऐ पालने वाले २३. ऐ साहिबे नेमत बे शुमार ऐ साहिबे रहमत बे इंतेहा ऐ साहिबे मुंतहाये साबिका ऐ साहिबे हिकमते कामुला ऐ

صَاحِبَ كُلِّ نَجْوٰى يَا مُنْتَهٰى كُلِّ شَكْوٰى. ٢٣. يَا ذَا النِّعْمَةِ

साहिबे कुदरते कामिला, ऐ साहिबे दलीले काते ऐ साहिबे करामते ज़ाहिरा ऐ हमेशा रखने वाले इज़्ज़त के ऐ साहिबे कुदरते इस्तवार ऐ साहिबे

السَّابِغَةِ يَا ذَالرَّحْمَةِ الْوَاسِعَةِ يَا ذَا الْمِنَّةِ السَّابِقَةِ يَا ذَا

बुज़ुर्गा व बुलन्दा मर्तबा। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की

الْحِكْمَةِ الْبَالِغَةِ يَا ذَا الْقُدْرَةِ الْكَامِلَةِ يَا ذَا الْحُجَّةِ الْقَاطِعَةِ

आग से ऐ पालने वाले २४. ऐ आसमानों के ख़ल्क करने वाले ऐ तारीकियों के पैदा करने वाले ऐ गिरया व बुका पे रहम करने वाले ऐ

يَا ذَا الْكَرَامَةِ الظَّاهِرَةِ يَا ذَا الْعِزَّةِ الدَّآئِمَةِ يَا ذَا الْقُوَّةِ

लग़जिशों के दरगुज़र करने वाले ऐ बन्दों के अैब छुपाने वाले ऐ मुर्दो के ज़िन्दा करने वाले ऐ निशानियों को नाज़ल करने वाले ऐ नेकियों के

الْمَتِيْنَةِ يَا ذَا الْعَظَمَةِ الْمَنِيْعَةِ. ٢٤. يَا بَدِيْعَ السَّمٰوٰتِ يَا

ज़्यादा करने वाले ऐ बदयों के मह्व करने वाले ऐ सख़्त मुआखिजा करने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद

جَاعِلَ الظُّلُمَاتِ يَا رَاحِمَ الْعَبَرَاتِ يَا مُقِيْلَ الْعَثَرَاتِ يَا

रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले २५. ऐ ख़ुदावन्दा ब तहक़ीक़ कि सवाल करता हुँ मैं तुझसे तेरी

سَاتِرَ الْعَوْرَاتِ يَا مُحْيِيَ الْاَمْوَاتِ يَا مُنْزِلَ الْاٰيَاتِ يَا

ही नाम के वास्ते से ऐ मुसव्विर ऐ तक़दीर बनाने वाले ऐ मुदब्बिर ऐ पाकीज़ा करने वाले ऐ रौशन करने वाले ऐ आसान करने वाले ऐ बंशारत

مُضَعِّفَ الْحَسَنَاتِ يَا مَاحِيَ السَّيِّئَاتِ يَا شَدِيْدَ

देने वाले ऐ डराने वाले ऐ मुक़द्दम करने वाले ऐ मुअख़्ख़र करने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का

النَّقِمَاتِ. ٢٥. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَا مُصَوِّرُ يَا مُقَدِّرُ

फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले २६. ऐ बैतुल हराम के परवरदिगार ऐ माहे हराम के परवरदिगार ऐ शहरे

يَا مُدَبِّرُ يَامُطَهِّرُ يَا مُنَوِّرُ يَا مُيَسِّرُ يَا مُبَشِّرُ يَا مُنْذِرُ يَا

हराम के परवरदिगार ऐ रूकन और मकाम के मालिक ऐ मश्अरूल हराम के मालिक ऐ मस्जिदुल हराम के मालिक ऐ मकामे हिल व हराम

مُقَدِّمُ يَا مُؤَخِّرُ. ٢٦. يَا رَبَّ الْبَيْتِ الْحَرَامِ يَا رَبَّ الشَّهْرِ

के परवेदिगार ऐ रौशनी और तारीकी के मालिक ऐ तहय्यत और सलाम के परवरदिगार ऐ ख़ल्क में कुदरत व कुव्वत के परवरदिगार। ऐ

الْحَرَامِ يَا رَبَّ الْبَلَدِ الْحَرَامِ يَا رَبَّ الرُّكْنِ وَالْمَقَامِ يَا رَبَّ

वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले २७. ऐ

الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ يَا رَبَّ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ يَا رَبَّ الْحِلِّ

हाकिमों के मालिक ऐ इंसाफ करने वाले के मुंसिफ तर ऐ सच्चों के रास्तगो तर ऐ पाकों के पाक तर ऐ खल्क करने वालों के बेहतरीन ऐ हिसाब

وَالْحَرَامِ يَا رَبَّ النُّوْرِ وَالظَّلاَمِ يَا رَبَّ التَّحِيَّةِ وَ السَّلاَمِ

करने वालों के जल्द हिसाब करने वाले ऐ सुन्ने वालों के ज़्यादा सुन्ने वाले ऐ देखने वालों से ज़्यादा देखने वाले ऐ शफाअत करने वालों से ज़्यादा

يَا رَبَّ الْقُدْرَةِ فِي الْاَنَامِ. ٢٧. يَا اَحْكَمَ الْحَاكِمِيْنَ يَا اَعْدَلَ

शआफ़त करने वाले ऐ बुज़ुर्गो के बुज़र्ग तर। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे

الْعَادِلِيْنَ يَآ اَصْدَقَ الصَّادِقِيْنَ يَآ اَطْهَرَ الطَّاهِرِيْنَ يَآ

हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले २८. ऐ तवानाई देने वाले उनको जो तवानाई नहीं रखते ऐ सहारा उसके जो सहारा नहीं रखता ऐ

اَحْسَنَ الْخَالِقِيْنَ يَآ اَسْرَعَ الْحَاسِبِيْنَ يَآ اَسْمَعَ السَّامِعِيْنَ

निगाह रखने वाले उसके जो निगाह नहीं रखता ऐ जाऐ पनाह उसकी जो जाऐ पनाह नहीं रखता ऐ फ़रयाद रस के जो फ़रयाद रस नहीं रखता

يَآ اَبْصَرَ النَّاظِرِيْنَ يَآ اَشْفَعَ الشَّافِعِيْنَ يَآ اَكْرَمَ الْاَكْرَمِيْنَ.

ऐ उस बुज़ुर्गी के जो बुज़ुर्गी नहीं रखता ऐ इज़्ज़त उसकी जो इज़्ज़त नहीं रखता ऐ मददगार उसके जो मददगार नहीं रखता ऐ दोस्त उसके जो

٢٨. يَا عِمَادَ مَنْ لَا عِمَادَ لَهٗ يَا سَنَدَ مَنْ لَا سَنَدَ لَهٗ يَا ذُخْرَ مَنْ

दोस्त नहीं रखता ऐ पनाह देने वाले उसके जो पनाह देहन्दा नहीं रखता। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का

لَا ذُخْرَ لَهٗ يَا حِرْزَ مَنْ لَا حِرْزَ لَهٗ يَا غِيَاثَ مَنْ لَا غِيَاثَ لَهٗ يَا

फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले २९. ऐ ख़ुदावन्द ब तहक़ीक़ सवाल करता हूँ मैं तुझसे तेरे नाम के साथ ऐ

فَخْرَ مَنْ لَا فَخْرَ لَهٗ يَا عِزَّ مَنْ لَا عِزَّ لَهٗ يَا مُعِيْنَ مَنْ لَا مُعِيْنَ لَهٗ

महफ़ूज़ रखने वाले ऐ क़ायम रखने वाले ऐ हमेशा रहने वाले ऐ सलामती वाले ऐ हाक़म ऐ जानने वाले ऐ तकसीम करने वाले ऐ बन्द करने

يَآ اَنِيْسَ مَنْ لَا اَنِيْسَ لَهٗ يَآ اَمَانَ مَنْ لَا اَمَانَ لَهٗ. ٢٩.

वाले ऐ खोलने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَا عَاصِمُ يَا قَآئِمُ يَا دَآئِمُ يَا رَاحِمُ

से ऐ पालने वाले ३०. ऐ इल्तेजा करने वालों के जाऐ पनाह ऐ रहमत चाहने वालों के रहम करने वाले ऐ बख़शिश चाहने वालों को बख़शने

يَا سَالِمُ يَا حَاكِمُ يَا عَالِمُ يَا قَاسِمُ يَا قَابِضُ يَا بَاسِطُ. ٣٠. يَا

वाले ऐ मदद चाहने वालों के मददगार ऐ हिफ़ाज़त चाहने वालों के हिदायत करने वाले और ऐ दाद रसी चाहने वालों के दाद रस ऐ मदद चाहने

عَاصِمَ مَنِ اسْتَعْصَمَهٗ يَا رَاحِمَ مَنِ اسْتَرْحَمَهٗ يَا غَافِرَ مَنِ

वालों के मददगार ऐ फ़रयाद करने वालों के फ़रयाद सरी करने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का

اسْتَغْفَرَهُ يَا نَاصِرَ مَنِ اسْتَنْصَرَهُ يَا حَافِظَ مَنِ اسْتَحْفَظَهُ

फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले ३१. ऐ वह ज़बरदस्त जो मग़लूब नहीं होता ऐ वह लतीफ़ जो देखा नहीं

يَا مُكْرِمَ مَنِ اسْتَكْرَمَهُ يَا مُرْشِدَ مَنِ اسْتَرْشَدَهُ يَا صَرِيْخَ

जाता ऐ वह तवाना जो सोता नहीं ऐ वह हमेशा रहने वाले जो फौत नहीं होता ऐ ज़िन्दा जो मरता नहीं ऐ वह बादशाह जिसकी सलतनत को

مَنِ اسْتَصْرَخَهُ يَا مُعِيْنَ مَنِ اسْتَعَانَهُ يَا مُغِيْثَ مَنِ

ज़वाल नहीं ऐ वह बाकी रहने वाले जो फ़ना नहीं होता ऐ वह आलिम जो भुलता नहीं ऐ वह बे नियाज़ जो खाने पीने से मुबर्रा है ऐ वह कवी

اسْتَغَاثَهُ. ٣١. يَا عَزِيْزًا لَّا يُضَامُ يَا لَطِيْفًا لَّا يُرَامُ يَا قَيُّوْمًا

जो ज़०ईफ़ नहीं होता। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग

لَّا يَنَامُ يَا دَآئِمًا لَّا يَفُوْتُ يَا حَيًّا لَّا يَمُوْتُ يَا مَلِكًا لَّا يَزُوْلُ

से ऐ पालने वाले। ३२. ख़ुदावन्दा ब तहक़ीक़ मैं तुझसे तेरे नाम के साथ सवाल करता हुँ ऐ यगाना ऐ यकता ऐ हाज़र ऐ साहिबे तारीफ़ ऐ बुज़ुर्ग

يَا بَاقِيًا لَّا يَفْنٰى يَا عَالِمًا لَّا يَجْهَلُ يَا صَمَدًا لَّا يُطْعَمُ يَا قَوِيًّا

ऐ राह दिखाने वाले ऐ उठाने वाले ऐ वारिस ऐ ज़रर पहुँजाने वाले ऐ नफ़ा पहुँचाने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और

لَّا يَضْعُفُ. ٣٢. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَا اَحَدُ يَا وَاحِدُ يَا

फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ३३. ऐ सब बुज़ुर्गों के बुज़र्ग तर ऐ सब मेहरबानों से

شَاهِدُ يَا مَاجِدُ يَا حَامِدُ يَا رَاشِدُ يَا بَاعِثُ يَا وَارِثُ يَا ضَآرُّ

मेहरबान तर ऐ सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाले ऐ सब जानने वालों से ज़्यादा जानने वाले ऐ दाना तर तमाम उकला से ऐ

يَا نَافِعُ. ٣٣. يَا اَعْظَمَ مِنْ كُلِّ عَظِيْمٍ يَا اَكْرَمَ مِنْ كُلِّ كَرِيْمٍ

क़दीम तर सब क़दीम तरों से ऐ बुज़र्ग व बरतर सब बुज़ुर्गों से ऐ पाकीज़ा तर सब पाकीज़ तरों से ऐ बुज़ुर्ग तर सब बुज़ुर्गों से ऐ अज़ीज़ तर सब

يَا اَرْحَمَ مِنْ كُلِّ رَحِيْمٍ يَا اَعْلَمَ مِنْ كُلِّ عَلِيْمٍ يَا اَحْكَمَ مِنْ

अज़ीज़ों से। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने

كُلِّ حَكِيْمٍ يَا اَقْدَمَ مِنْ كُلِّ قَدِيْمٍ يَا اَكْبَرَ مِنْ كُلِّ كَبِيْرٍ يَا

वाले। ३४. ऐ करीढ़ दरगुज़र करने वाले गुनाहों के ऐ बड़े एहसान करने वाले ऐ साहिबे खैरे कसीर ऐ हमेशा से फ़ज़ल करने वाले ऐ हमेशा

اَلْطَفَ مِنْ كُلِّ لَطِيْفٍ يَا اَجَلَّ مِنْ كُلِّ جَلِيْلٍ يَا اَعَزَّ مِنْ

से लुत्फ़ करने वाले ऐ लतीफ़ पैदा करने वाले ऐ रंज को दफ़ा करने वाले ऐ ज़रर को दूर करने वाले ऐ मुल्क के मालिक ऐ रास्ती के हुक्म

كُلِّ عَزِيْزٍ. ٣٤. يَا كَرِيْمَ الصَّفْحِ يَا عَظِيْمَ الْمَنِّ يَا كَثِيْرَ

करने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने

الْخَيْرِ يَا قَدِيْمَ الْفَضْلِ يَا دَآئِمَ اللُّطْفِ يَا لَطِيْفَ الصُّنْعِ

वाले। ३५. ऐ वह ख़ुदा जो अपने अहद में कामिल है ऐ वह ख़ुदा जो अपनी कुव्वत में बुज़ुगर है ऐ वह ख़ुदा जो अपनी बरतरी में सबसे करीब

يَا مُنَفِّسَ الْكَرْبِ يَا كَاشِفَ الضُّرِّ يَا مَالِكَ الْمُلْكِ يَا

ते है ऐ वह ख़ुदा जो अपने कुर्ब में लतीफ़ है ऐ वह ख़ुदा जो अपनी लताफ़त में शरीफ़ है ऐ वह ख़ुदा जो अपनी बुज़र्गा में अज़ीज़ तर है ऐ वह

قَاضِيَ الْحَقِّ. ٣٥. يَا مَنْ هُوَ فِيْ عَهْدِهٖ وَفِيٌّ يَا مَنْ هُوَ فِيْ وَفَآئِهٖ

ख़ुदा जो अपनी कुव्वत में बुज़ुर्ग है ऐ वह ख़ुदा जो अपनी अज़मत में बुज़ुर्ग है ऐ वह ख़ुदा जो अपनी बुज़ुर्गा में हम्द किया गया है। ऐ वह जिसके

قَوِيٌّ يَا مَنْ هُوَ فِيْ قُوَّتِهٖ عَلِيٌّ يَا مَنْ هُوَ فِيْ عُلُوِّهٖ قَرِيْبٌ يَا مَنْ

सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ३६. ख़ुदावन्दा ब

هُوَ فِيْ قُرْبِهٖ لَطِيْفٌ يَا مَنْ هُوَ فِيْ لُطْفِهٖ شَرِيْفٌ يَا مَنْ هُوَ فِيْ

तहक़ीक़ कि मैं सवाल करते हैं तुझसे तेरे नाम के साथ ऐ किफ़ायत करने वाले ऐ सेहत देने वाले ऐ वफ़ा करने वाले ऐ माफ़ करने वाले ऐ

شَرَفِهٖ عَزِيْزٌ يَا مَنْ هُوَ فِيْ عِزِّهٖ عَظِيْمٌ يَا مَنْ هُوَ فِيْ عَظَمَتِهٖ

हिदायत करने वाले ऐ बुलाने वाले ऐ हुक्म करने वाले ऐ ख़ूश होने वाले ऐ बुलन्द मतर्बा ऐ बाक़ी। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु

مَجِيْدٌ يَا مَنْ هُوَ فِيْ مَجْدِهٖ حَمِيْدٌ. ٣٦. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ

पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ३७. ऐ वह ख़ुदा कि जिसके लिए हर चीज़

بِاسْمِكَ يَا كَافِيْ يَا شَافِيْ يَا وَافِيْ يَا مُعَافِيْ يَا هَادِيْ يَا دَاعِيْ يَا

ख़ुजू करने वाली है ऐ वह ख़ुदा कि जिसके लिए हर खुशू करने वाली है ऐ वह ख़ुदा कि जिसके लिए हर चीज़ साबित है ऐ वह ख़ुदा कि जिसके

قَاضِيْ يَا رَاضِيْ يَا عَالِيْ يَا بَاقِيْ. ٣٧. يَا مَنْ كُلُّ شَيْءٍ خَاضِعٌ لَهٗ

लिए हर शै मौजूद है ऐ वह ख़ुदा कि हर चीज़ जिसकी तरफ रूजू करने वाली है ऐ वह ख़ुदा कि जिसकी हर शै ख़ाइफ़ है ऐ वह ख़ुदा कि जिसकी

يَا مَنْ كُلُّ شَيْءٍ خَاشِعٌ لَهٗ يَا مَنْ كُلُّ شَيْءٍ كَآئِنٌ لَهٗ يَا مَنْ كُلُّ

हर तस्बीह करती है उसकी हम्द मेच ऐ वह ख़ुदा कि हर चीज़ हलाक होने वाली है सिवाये उसकी जात के। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद

شَيْءٍ مَّوْجُوْدٌ بِهٖ يَا مَنْ كُلُّ شَيْءٍ مُنِيْبٌ اِلَيْهِ يَا مَنْ كُلُّ شَيْءٍ

नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ३८. ऐ वह कि सिवाये जिसकी तरफ

خَآئِفٌ مِنْهُ يَا مَنْ كُلُّ شَيْءٍ قَآئِمٌ بِهٖ يَا مَنْ كُلُّ شَيْءٍ صَآئِرٌ

के कहीं मफ़र नहीं ऐ वह कि जाऐ पनाह सिवाऐ जिसकी तरफ नहीं है ऐ वह कि राहे रास्त किवाये जिकी तरफ के नहीं है ऐ वह कि जिससे

اِلَيْهِ يَا مَنْ كُلُّ شَيْءٍ يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ يَا مَنْ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ اِلَّا

भाग कर कहीं और पनाह नहीं है ऐ वह कि रग़बत नहीं कि जाती मगर उसकी तरफ ऐ वह कुव्वत व तवानाइ कि सिवाये तेरे किसी में नहीं

وَجْهَهٗ. ٣٨. يَا مَنْ لَا مَفَرَّ اِلَّا اِلَيْهِ يَا مَنْ لَا مَفْزَعَ اِلَّا اِلَيْهِ يَا

ऐ वह कि सिवा जिसके किसी से मदद नहीं मांगते ऐ वह कि सिवा जिसके किसी और पर एतमाद नहीं किया जाता ऐ वह कि सिवा जिसके

مَنْ لَا مَقْصَدَ اِلَّا اِلَيْهِ يَا مَنْ لَا مَنْجٰى مِنْهُ اِلَّا اِلَيْهِ يَا مَنْ لَا

किसि और से उम्मीद नहीं की जाती ऐ वह कि सिवा जिसके किसी की परश्तिश नहीं की जाती। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक

يُرْغَبُ اِلَّا اِلَيْهِ يَا مَنْ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِهٖ يَا مَنْ لَا

है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ३९. ऐ बेहतरीन उनके जिनसे ख़ौफ किया जाता

يُسْتَعَانُ اِلَّا بِهٖ يَا مَنْ لَا يُتَوَكَّلُ اِلَّا عَلَيْهِ يَا مَنْ لَا يُرْجٰى اِلَّا

है ऐ बेहतरीन उनके जिनसे रग़बत की जाती है उनके जो तलब किये जाते हैं ऐ बेहतरीन उनके जिनसे सवाल किया जाता है ऐ बेहतरीन उनके

هُوَ يَا مَنْ لَا يُعْبَدُ اِلَّا اِيَّاهُ. ٣٩. يَا خَيْرَ الْمَرْهُوْبِيْنَ يَا خَيْرَ

जिनका क़स्द किया जाता है ऐ बेहतरीन उनके जिनका ज़िक्र किया जाता है ऐ बेहतरीन उनके जिनका शुक्र किया जाता है ऐ बेहतरीन उनके

الْمَرْغُوْبِيْنَ يَا خَيْرَ الْمَطْلُوْبِيْنَ يَا خَيْرَ الْمَسْئُوْلِيْنَ يَا خَيْرَ

जिनसे मुहब्बत की जाती है ऐ बेहतरीन उनके जिनका पुकारा जाता है ऐ बेहतरीन उनके जिनसे उंस किया जाता है। ऐ वह जिसके सिवा कोई

الْمَقْصُوْدِيْنَ يَا خَيْرَ الْمَذْكُوْرِيْنَ يَا خَيْرَ الْمَشْكُوْرِيْنَ يَا

माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ४०. ख़ुदावन्दा ब तहक़ीक़

خَيْرَ الْمَحْبُوْبِيْنَ يَا خَيْرَ الْمَدْعُوِّيْنَ يَا خَيْرَ الْمُسْتَأْنِسِيْنَ.

कि मैं सवाल करता हुँ तुझसे तेरे नाम के साथ ऐ बख़शने वाले ऐ छुपाने वाले ऐ साहिबे क़हर ऐ पैदा करने वाले ऐ तोड़ने वाले ऐ ज़िक्र करने

٤٠. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَا غَافِرُ يَا سَاتِرُ يَا قَادِرُ يَا

वाले ऐ देकने वाले ऐ मदद करने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको

قَاهِرُ يَا فَاطِرُ يَا كَاسِرُ يَا جَابِرُ يَا ذَاكِرُ يَا نَاظِرُ يَا نَاصِرُ. ٤١. يَا

दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ४१. ऐ वह जिसने पैदा किया और मौज़ूं बनाया ऐ वह ख़ुदा कि मुक़द्दर किया और हिदायत की ऐ वह कि

مَنْ خَلَقَ فَسَوّٰى يَا مَنْ قَدَّرَ فَهَدٰى يَا مَنْ يَّكْشِفُ الْبَلْوٰى

दूर करता है अपने बन्दों की बलाओं को ऐ वह कि सब के राज़ सुनता है ऐ वह ख़ुदा जो डूबते हुवों को पार लगाता है ऐ वह ख़ुदा जो बचाता

يَا مَنْ يَسْمَعُ النَّجْوٰى يَا مَنْ يُنْقِذُ الْغَرْقٰى يَا مَنْ يُنْجِيَ

है बीमारों को ऐ वह खुदा जो सेहत देता है ऐ वह ख़ुदा जो मारता है और जिलाता है ऐ वह ख़ुदा जो मर्द और औरत का जोड़ा पैदा करता है।

الْهَلْكٰى يَا مَنْ يَّشْفِي الْمَرْضٰى يَا مَنْ اَضْحَكَ وَ اَبْكٰى يَا مَنْ

ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ४२.

اَمَاتَ وَ اَحْيٰى يَا مَنْ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى. ٤٢. يَا

ऐ वह ख़ुदा कि खुशकी और तरी में जिसकी राह है ऐ वह ख़ुदा कि ज़माने में जिसकी निशानिया है ऐ वह खुदा कि जिसकी निशानियों में रौशन

مَنۡ فِی الۡبَرِّ وَالۡبَحۡرِ سَبِیۡلُہٗ یَا مَنۡ فِی الۡاٰفَاقِ اٰیٰتُہٗ یَا مَنۡ فِی

दलील है ऐ वह ख़ुदा कि मौत में जिसकी कुदरत है। ऐ वह ख़ुदा कि कब्रों में जिसका खौफ है ऐ वह ख़ुदा कि रोज़े क़्यामत में जिसका मुल्क

الۡاٰیَاتِ بُرۡھَانُہٗ یَا مَنۡ فِی الۡمَمَاتِ قُدۡرَتُہٗ یَا مَنۡ فِی الۡقُبُوۡرِ

है ऐ वह ख़ुदा कि हिसाब में जिसकी हैबत है ऐ वह ख़ुदा कि तराज़ू में जिसका फ़रमान है ऐ वह ख़ुदा कि जन्नत में जिसका अज़ाब है। ऐ वह

عِبۡرَتُہٗ یَا مَنۡ فِی الۡقِیٰمَۃِ مُلۡکُہٗ یَا مَنۡ فِی الۡحِسَابِ ھَیۡبَتُہٗ یَا

जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ४३. ऐ वह

مَنۡ فِی الۡمِیۡزَانِ قَضَآؤُہٗ یَا مَنۡ فِی الۡجَنَّۃِ ثَوَابُہٗ یَا مَنۡ فِی النَّارِ

ख़ुदा कि जिसकी तरफ़ भागते हैं डरने वाले ऐ वह ख़ुदा कि जिसकी पनाह लेते हैं गुनहगार ऐ वह ख़ुदा कि जिस की तरफ कस्द करते हैं तौबा

عِقَابُہٗ. ۴۳. یَا مَنۡ اِلَیۡہِ یَھۡرَبُ الۡخَآئِفُوۡنُ یَا مَنۡ اِلَیۡہِ یَفۡزَعُ

करने वाले ऐ वह ख़ुदा कि परहेज़गार जिसकी तरफ़ रगबत करते हैं ऐ वह ख़ुदा कि जिसकी तरफ पनाह लेते हैं हैरान शुदा ऐ वह ख़ुदा जिससे

الۡمُذۡنِبُوۡنُ یَا مَنۡ اِلَیۡہِ یَقۡصِدُ الۡمُنِیۡبُوۡنَ یَا مَنۡ اِلَیۡہِ یَرۡغَبُ

उंस हासिल करते हैं इरादा करने वाले ऐ वह ख़ुदा कि फख्र करते है जिससे मुहब्बत करने वाले ऐ वह ख़ुदा कि जिसकी बख़शिश में गुनहगार

الزَّاهِدُوۡنُ یَا مَنۡ اِلَیۡہِ یَلۡجَاءُ الۡمُتَحَیِّرُوۡنَ یَا مَنۡ بِہٖ

उम्मीद रखते हैं ऐ वह ख़ुदा कि जिससे तसकीन पाते हैं यकीन रखने वाले ऐ वह ख़ुदा कि तवक्कल करते हैं जिस पर तवक्कल करने वाले। ऐ

یَسۡتَاۡنِسُ الۡمُرِیۡدُوۡنُ یَا مَنۡ بِہٖ یَفۡتَخِرُ الۡمُحِبُّوۡنُ یَا مَنۡ فِی

वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ४४.

عَفْوِهٖ يَطْمَعُ الْخَاطِئُوْنَ يَا مَنْ اِلَيْهِ يَسْكُنُ الْمُوْقِنُوْنَ يَا

ख़ुदावन्दा मैं सवाल करता हुँ तुझसे तेरे नाम के साथ ऐ दोस्त ऐ दवा करने वाले ऐ नज़दीक ऐ निगहबान ऐ हिसाब लेने वाले ऐ ख़ौफ दिलाने

مَنْ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ. ٤٤. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَسْئَلُكَ

वाले ऐ मक़सद दिलाने वाले ऐ क़बूल करने वाले ऐ ख़बरदार ऐ देखने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद

بِاسْمِكَ يَا حَبِيْبُ يَا طَبِيْبُ يَا قَرِيْبُ يَا رَقِيْبُ يَا حَسِيْبُ يَا

रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ४५. ऐ नज़दीक तर हर नज़दिक से ऐ दोस्त तर सब दोस्तों से ऐ

مُهِيْبُ يَا مُثِيْبُ يَا مُجِيْبُ يَا خَبِيْرُ يَا بَصِيْرُ. ٤٥. يَآ اَقْرَبَ مِنْ

ज़्यादा देखने वाले सब देखने वालों से ऐ ख़बरदार तर तमाम ख़बर रखने वालों से ऐ बुज़ुर्ग तर सब बुज़ुर्गो से ऐ बुलन्द मतर्बा सब अहले

كُلِّ قَرِيْبٍ يَآ اَحَبَّ مَنْ كُلَّ حَبِيْبٍ يَآ اَبْصَرَ مِنْ كُلِّ بَصِيْرٍ

रफअत से ऐ क़वी तर सब कुव्वत वालों से ऐ गनी तर सब तवंगरों से ऐ सखी तर सब सिख़यों से ऐ मेहरबान तर सब मेहरबानों से। ऐ वह

يَآ اَخْبَرَ مِنْ كُلِّ خَبِيْرٍ يَآ اَشْرَفَ مِنْ كُلِّ شَرِيْفٍ يَآ اَرْفَعَ مِنْ

जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ४६. ऐ

كُلِّ رَفِيْعٍ يَآ اَقْوٰى مِنْ كُلِّ قَوِيٍّ يَآ اَغْنٰى مِنْ كُلِّ غَنِيٍّ يَآ

वह ग़ालिब जो मग़लूब नहीं होता ऐ वह साने जिसको किसी ने नहीं बनाया ऐ वह ख़ालिक़ जिसको किसी ने ख़ल्क नहीं किया ऐ वह बादशाह

اَجْوَدَ مِنْ كُلِّ جَوَادٍ يَآ اَرْئَفَ مِنْ كُلِّ رَءُوْفٍ. ٤٦. يَا غَالِبًا

जिस पर किसी की हुकूमत नहीं ऐ वह क़ाहिर कि जो मक़हूर नहीं होता ऐ वह बुलन्द जो पस्त नहीं होता ऐ वह निगेहबान जो हिफ़ाज़त का

غَيْرَ مَغْلُوْبٍ يَا صَانِعًا غَيْرَ مَصْنُوْعٍ يَا خَالِقًا غَيْرَ مَخْلُوْقٍ

मुहताज नहीं ऐ वह मददगार जो मदद का मुहताज नहीं ऐ वह ज़ाहिर जो गायब नहीं होता ऐ वह क़रीब जो दूर नहीं होता। ऐ वह जिसके सिवा

يَا مَالِكًا غَيْرَ مَمْلُوْكٍ يَا قَاهِرًا غَيْرَ مَقْهُوْرٍ يَا رَافِعًا غَيْرَ

कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ४७. ऐ नूर के नूर ऐ सब

مَرْفُوْعٍ يَا حَافِظًا غَيْرَ مَحْفُوْظٍ يَا نَاصِرًا غَيْرَ مَنْصُوْرٍ يَا

के रौशन करने वाले ऐ नूर के पैदा करने वाले ऐ नूर की तदबीर करने वाले ऐ नूर की तक़दीर करने वाले ऐ नूर के नूर ऐ वह नूर कि पहले है

شَاهِدًا غَيْرَ غَآئِبٍ يَا قَرِيْبًا غَيْرَ بَعِيْدٍ. ٤٧. يَا نُوْرَ النُّوْرِ يَا

हर नूर से ऐ वह नूर कि बाद में रहेगा हर नूर से ऐ वह नूर कि बरतर है हर नूर से ऐ वह नूर कि जिसका मानिन्द कोई दुसरा नूर नहीं। ऐ वह

مُنَوِّرَ النُّوْرِ يَا خَالِقَ النُّوْرِ يَا مُدَبِّرَ النُّوْرِ يَا مُقَدِّرًا النُّوْرِ

जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ४८. ऐ

يَا نُوْرَ كُلِّ نُوْرٍ يَا نُوْرًا قَبْلَ كُلِّ نُوْرٍ يَا نُوْرًا بَعْدَ كُلِّ نُوْرٍ يَا

वह ख़ुदा कि बख़शिश जिसकी बुज़ुर्ग है ऐ वह ख़ुदा कि काम जिसका लतीफ़ है ऐ वह ख़ुदा कि मेहरवानी जिसकी हमेशा है ऐ वह ख़ुदा कि

نُوْرًا فَوْقَ كُلِّ نُوْرٍ يَا نُوْرًا لَيْسَ كَمِثْلِهٖ نُوْرٌ. ٤٨. يَا مَنْ

एहसान जिसका हमेशा है ऐ वह ख़ुदा कि कौल जिसका हक़ है ऐ वह ख़ुदा कि वादा जिसका सच्चा है ऐ वह ख़ुदा कि माफी जिसकी फज़ल

عَطَآؤُهٗ شَرِيْفٌ يَا مَنْ فِعْلُهٗ لَطِيْفٌ يَا مَنْ لُطْفُهٗ مُقِيْمٌ يَا

है ऐ वह ख़ुदा कि अज़ाब जिसका महज़ इंसान है ऐ वह खुदा कि याद जिसकी शीरीं है ऐ वह ख़ुदा कि फज़ल जिसका आम है। ऐ वह जिसके

مَنْ اِحْسَانُهٗ قَدِيْمٌ يَا مَنْ قَوْلُهٗ حَقٌّ يَا مَنْ وَعْدُهٗ صِدْقٌ يَا

सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ४९. खुदावन्दा ब

مَنْ عَفْوُهٗ فَضْلٌ يَا مَنْ عَذَابُهٗ عَدْلٌ يَا مَنْ ذِكْرُهٗ حُلْوٌ يَا مَنْ

तहकीक कि सवाल करता हुँ मैं तुझसे तेरे नाम के साथ ऐ आसान करने वाले ऐ जुदा करने वाले ऐ बदल देने वाले ऐ ख़्वार करने वाले ऐ

فَضْلُهٗ عَمِيْمٌ. ٤٩. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَا مُسَهِّلُ يَا

उतारने वाले ऐ ऐहसान करने वाले ऐ फज़ल करने वाले ऐ एहसान करने वाले ऐ मुहलत देने वाले ऐ नेकी करने वाले। ऐ वह जिसके सिवा

مُفَصِّلُ يَا مُبَدِّلُ يَا مُذَلِّلُ يَا مُنَزِّلُ يَا مُنَوِّلُ يَا مُفْضِلُ يَا

कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ५०. ऐ वह ख़ुदा जो

مُجْزِلُ يَا مُمْهِلُ يَا مُجْمِلُ. ٥٠. يَا مَنْ يَرٰى وَلَا يُرٰى يَا مَنْ يَّخْلُقُ

देखता है और दिखाई नहीं देता ऐ वह ख़ुदा जो पैदा करता है और जिसको किसी ने नहीं पैदा किया ऐ वह ख़ुदा जो हिदायत करता है और

وَلَا يُخْلَقُ يَا مَنْ يَّهْدِیْ وَلَا يُهْدٰى يَا مَنْ يُّحْيِیْ وَلَا يُحْيٰى يَا

किसी ने जिसको हिदायत नहीं कहीं ऐ वह ख़ुदा कि जो ज़िन्दा करता है और किसी ने जिसको ज़िन्दा नहीं किया ऐ वह ख़ुदा जो लोगों से बाज़

مَنْ يَّسْئَلُ وَلَا يُسْئَلُ يَا مَنْ يُّطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ يَا مَنْ يُّجِيْرُ

पुर्स करता है और किसी ने उससे बाज़ पुर्स नहीं की ऐ वह ख़ुदा जो रिज़्क देता है और ख़ुद नहीं खाता ऐ वह ख़ुदा जो फैसला करता है और

وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ يَا مَنْ يَّقْضِیْ وَلَا يُقْضٰى عَلَيْهِ يَا مَنْ يَّحْكُمُ

जिस पर कोई हुकमरां नहीं ऐ वह ख़ुदा जो खुद हाक़म है और जिसका कोई हाकिम नहीं ऐ वह ख़ुदा कि ने कोई जिससे पैदा हुआ है और न

وَ لَا يُحْكَمُ عَلَيْهِ يَا مَنْ لَّمْ يَلِدْ وَ لَمْ يُوْلَدْ وَ لَمْ يَكُنْ لَّهٗ

किसी ने उसको पैदा किया है और न कोई उसका शबीह व नज़ीर है। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का

كُفُوًا اَحَدٌ. ٥١. يَا نِعْمَ الْحَسِيْبُ يَا نِعْمَ الطَّبِيْبُ يَا نِعْمَ

फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ५१. ऐ बेहतरीन हिसाब करने वाले ऐ बेहतरीन दवा करने वाले ऐ बेहतरी

الرَّقِيْبُ يَا نِعْمَ الْقَرِيْبُ يَا نِعْمَ الْمُجِيْبُ يَا نِعْمَ الْحَبِيْبُ

वाक़फ़कार ऐ बेहतरीन अज़ीज़ व क़रीब ऐ बेहतरीन क़बूल करने वाले ऐ बेहतरीन दोस्त ऐ बेहतरीन ज़ामिन ऐ बेहतरीन वकालत करने वाले

يَا نِعْمَ الْكَفِيْلُ يَا نِعْمَ الْوَكِيْلُ يَا نِعْمَ الْمَوْلٰى يَا نِعْمَ

ऐ बेहतरीन मालिक ऐ बेहतरीन मददगार। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको

النَّصِيْرُ. ٥٢. يَا سُرُوْرَ الْعَارِفِيْنَ يَا مُنَى الْمُحِبِّيْنَ يَا اَنِيْسَ

दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ५२. ऐ आरिफों की खुशी ऐ दोस्तों की आरज़ु ऐ तलब करने वालों के रफ़ीक़ ऐ तौबा करने वालों के दोस्त

الْمُرِيْدِيْنَ يَا حَبِيْبَ التَّوَّابِيْنَ يَا رَازِقَ الْمُقِلِّيْنَ يَا رَجَآءَ

ऐ फकीरों के राज़क़ ऐ गुनहगारों की उम्मीदगाह ऐ इबादत करने वालों की आँख की खुंकी ऐ गम्ज़दों से सख़्ती रूर करने वाले, ऐ गमनाकों

الْمُذْنِبِيْنَ يَا قُرَّةَ عَيْنِ الْعَابِدِيْنَ يَا مُنَفِّسَ عَنِ

के ख़ुशी अता करने वाले ऐ अगीलों और पिछलों के मेहरबान ख़ुदा। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का

الْمَكْرُوْبِيْنَ يَا مُفَرِّجَ عَنِ الْمَغْمُوْمِيْنَ يَآ اِلٰهَ الْاَوَّلِيْنَ وَ

फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ५३. ख़ुदावन्दा ब तहक़ीक़ कि मैं सवाल करता हुँ तुझसे तेरे नाम के साथ

الْاٰخِرِيْنَ. ٥٣. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَا رَبَّنَا يَاۤ اِلٰهَنَا يَا

ऐ रब हमारे ऐ ख़ुदा हमारे ऐ सरदार हमारे ऐ मालिक हमारे ऐ यावर हमारे ऐ दोस्त हमारे ऐ तबीब हमारे। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं

سَيِّدَنَا يَا مَوْلَانَا يَا نَاصِرَنَا يَا حَافِظَنَا يَا دَلِيْلَنَا يَا مُعِيْنَنَا يَا

तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ५४. ऐ पैग़म्बरों और नेकोकारों के

حَبِيْبَنَا يَا طَبِيْبَنَا. ٥٤. يَا رَبَّ النَّبِيِّيْنَ وَالْاَبْرَارِ يَا رَبَّ

परवरदिगार ऐ सच्चे और बरगुज़ीदा लोगों के परवरदिगार ऐ बेहिश्त और दोज़ख़ के परवरदिगार ऐ छोटों और बड़ों के परवरदिगार ऐ दानों ऐ

الصِّدِّيْقِيْنَ وَالْاَخْيَارِ يَا رَبَّ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ يَا رَبَّ الصِّغَارِ

मेवों के परवरदिगार ऐ नहरों और दरख्तों के परवरदिगार ऐ जंगलों और बयाबानों के परवरदिगार ऐ खुशकियों और दरयाओं के परवरदिगार

وَالْكِبَارِ يَا رَبَّ الْحُبُوْبِ وَالثِّمَارِ يَا رَبَّ الْاَنْهَارِ وَالْاَشْجَارِ

ऐ ज़ाहिर और पोशीदा के परवरदिगार। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको

يَا رَبَّ الصَّحَارِيْ وَالْقِفَارِ يَا رَبَّ الْبَرَارِيْ وَالْبِحَارِ يَا رَبَّ

दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ५५. ऐ वह ख़ुदा जिसका हुक्म हर शै में जारी है ऐ वह ख़ुदा कि जिसके हुक्म ने हर शै को इहाता किया

اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ يَا رَبَّ الْاَعْلَانِ وَالْاَسْرَارِ. ٥٥. يَا مَنْ نَفَذَ فِيْ

हुआ है ऐ वह ख़ुदा कि जिसकी कुदरत हर चीज़ में पहुँचती है ऐ वह ख़ुदा जिसकी नेमतें उसके बन्दे शुमार नहीं कर सकते ऐ वह खुदा जिसका

كُلِّ شَيْءٍ اَمْرُهٗ يَا مَنْ لَحِقَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمُهٗ يَا مَنْ بَلَغَتْ اِلٰى

शुक्र ख़ल्कत अदा नहीं कर सकती ऐ वह ख़ुदा जिसकी बुज़ुर्गी को कोई नहीं समझ सकता ऐ वह ख़ुदा जिसकी कहना को वहम नहीं पाता ऐ

كُلِّ شَيْءٍ قُدْرَتُهُ يَا مَنْ لَّا تُحْصِي الْعِبَادُ نِعَمَهُ يَا مَنْ لَّا تَبْلُغُ

वह ख़ुदा कि जिसकी रिदा अज़मत और बुज़ुर्गी है ऐ वह ख़ुदा जिसका फैसला बन्दे रद् नहीं कर सकते ऐ वह ख़ुदा कि सिवाऐ जिसके किसी

الْخَلَآئِقُ شُكْرَهُ يَا مَنْ لَّا تُدْرِكُ الْاَفْهَامُ جَلَالَهُ يَا مَنْ لَّا

की बादशाही नहीं है ऐ वह ख़ुदा जिसकी बखशिश के सिवा कोई बख़शिश नहीं है। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद

تَنَالُ الْاَوْهَامُ كُنْهَهُ يَا مَنِ الْعَظَمَةُ وَ الْكِبْرِيَآءُ رِدَآئُهُ يَا

रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ५६. ऐ वह ख़ुदा जिसके वास्ते बुलन्द मिसालें हैं ऐ वह ख़ुदा

مَنْ لَّا تَرُدُّ الْعِبَادُ قَضَآئَهُ يَا مَنْ لَّا مُلْكَ اِلَّا مُلْكُهُ يَا مَنْ لَّا

जिसके लिए बुलन्द व बरतर सिफतें हैं ऐ वह ख़ुदा कि जिसके लिए अव्वल व आख़िर है ऐ वह ख़ुदा कि उसी की बरकत है जो जन्नत फिरदौस

عَطَآءَ اِلَّا عَطَآئُهُ . ٥٦. يَا مَنْ لَّهُ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى يَا مَنْ لَّهُ

गाह मोमिन है ऐ वह खुदा जिसकी निशानियां बुज़ुर्ग हैं ऐ वह ख़ुदा कि जिसके लिए बेहतरीन नाम हैं ऐ वह कि जिसके लिए हुक्म और कज़ा

الصِّفَاتُ الْعُلْيَا يَا مَنْ لَّهُ الْاٰخِرَةُ وَالْاُوْلٰى يَا مَنْ لَّهُ الْجَنَّةُ

है ऐ वह ख़ुदा जिसके वास्ते है अर्श और ज़मीन ऐ वह ख़ुदा कि जिसके लिए आसमान हाये बुलन्द है। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं

الْمَاْوٰى يَا مَنْ لَّهُ الْاٰيَاتُ الْكُبْرٰى يَا مَنْ لَّهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى

तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ५७. ख़ुदावन्दा ब तहक़ीक़ मैं तेरे नाम

يَا مَنْ لَهُ الْحُكْمُ وَالْقَضَآءُ يَا مَنْ لَهُ الْهَوَآءُ وَالْفَضَآءُ يَا مَنْ

से सवाल करता हुँ ऐ अफ़्व करने वाले ऐ बख़्शने वाले ऐ सब्र देने वाले ऐ शुक्र करने वो ऐ मेहरबान ऐ बा रहम ऐ वह जिससे बन्दे सवाल

لَهُ الْعَرْشُ وَ الثَّرٰى يَا مَنْ لَهُ السَّمٰوٰتُ الْعُلٰى. ٥٧. اَللّٰهُمَّ

करते हैं। ऐ दोस्त ऐ बे ऐब ऐ पाक सब ख़लाएक से। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है।

اِنِّىْ اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَا عَفُوُّ يَا غَفُوْرُ يَا صَبُوْرُ يَا شَكُوْرُ يَا

नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ५८. ऐ वह ख़ुदा कि आसमानों में है बुज़ुर्गा जिसकी ऐ वह खुदा कि ज़मीन में है निशानी

رَءُوْفُ يَا عَطُوْفُ يَا مَسْئُوْلُ يَا وَدُوْدُ يَا سُبُّوْحُ يَا قُدُّوْسُ.

जिसकी ऐ वह ख़ुदा कि हर शै जिसके वजूद पर दलालत करती है ऐ वह ख़ुदा कि दरयाओं में जिसके अजाएब हैं ऐ वह ख़ुदा कि पहाड़ों में

٥٨. يَا مَنْ فِى السَّمَآءِ عَظَمَتُهٗ يَا مَنْ فِى الْاَرْضِ اٰيَاتُهٗ يَا مَنْ فِىْ

जिसके ख़ज़ाने है ऐ वह ख़ुदा कि जिसने सबको पैदा किया फिर ज़िन्दा करेगा क्यामत में ऐ वह ख़ुदा कि सब उमूर की बाज़गश्त जिसकी

كُلِّ شَىْءٍ دَلَآئِلُهٗ يَا مَنْ فِى الْبِحَارِ عَجَآئِبُهٗ يَا مَنْ فِى الْجِبَالِ

तरफ है ऐ वह ख़ुदा जिसकी मेहरबानी हर चीज़ से ज़ाहिर होती है ऐ वह खुदा कि नेक है हर ऐ शै जिस की पैदा की हुई ऐ वह खुदा कि तसर्रूफ

خَزَآئِنُهٗ يَا مَنْ يَّبْدَؤُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ يَا مَنْ اِلَيْهِ يَرْجِعُ

रखती है खलाएक में कुदरत जिसकी। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको

الْاَمْرُ كُلُّهٗ يَا مَنْ اَظْهَرَ فِىْ كُلِّ شَىْءٍ لُطْفَهٗ يَا مَنْ اَحْسَنَ كُلَّ

दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ५९. ऐ दोस्त उसके जिसका कोई दोस्त नहीं ऐ दवा करने वाले उसके जिसका कोई दवा करने वाला नहीं

شَىْءٍ خَلْقَهٗ يَا مَنْ تَصَرَّفَ فِى الْخَلَآئِقِ قُدْرَتُهٗ. ٥٩. يَا حَبِيْبَ

ऐ कबूल करने वाले उसके जिसका कोई क़बूल करने वाला नहीं ऐ शफ़ीक़ उसके जिसका कोई शफ़ीक़ नहीं ऐ तरफ़दार उसके जिसका कोई

مَنْ لَّا حَبِيْبَ لَهٗ يَا طَبِيْبَ مَنْ لَّا طَبِيْبَ لَهٗ يَا مُجِيْبَ مَنْ

तरफ़दार ऐ रहनुमा नहीं ऐ साथी नहीं। ऐ रहम करने वाले उसके जिस पर कोई रहम नहीं करता ऐ हमदर्द उसके जिसका कोई हमदर्द नहीं।

لَّا مُجِيْبَ لَهٗ يَا شَفِيْقَ مَنْ لَّا شَفِيْقَ لَهٗ يَا رَفِيْقَ مَنْ لَّا

ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ६०.

رَفِيْقَ لَهٗ يَا مُغِيْثَ مَنْ لَّا مُغِيْثَ لَهٗ يَا دَلِيْلَ مَنْ لَّا دَلِيْلَ

ऐ किफ़ायत करने वाले किफ़ायत तलब करने वालों के ऐ हिदायत करने वाले हिदायत तलब करने वालों के ऐ हिफ़ाज़त करने वाले हिफ़ाज़त

لَهٗ يَا اَنِيْسَ مَنْ لَّا اَنِيْسَ لَهٗ يَا رَاحِمَ مَنْ لَّا رَاحِمَ لَهٗ يَا

तलब करने वालों के ऐ रिआयत करने वाले रिआयत तलब करने वालों के ऐ शिफ़ा देने वाले शिफ़ा तलब करने वालों के ऐ हुक्म करने वाले

صَاحِبَ مَنْ لَّا صَاحِبَ لَهٗ. ٦٠. يَا كَافِيَ مَنِ اسْتَكْفَاهُ يَا

उसके जो हुक्म तलब करे ऐ तवंगरी देने वाले तवंगरी चाहने वालों के ऐ तमाम करने वाले तमामी तलब करने वालों के ऐ कुव्वत देने वाले

هَادِيَ مَنِ اسْتَهْدَاهُ يَا كَالِئَ مَنِ اسْتَكْلَاهُ يَا رَاعِيَ مَنِ

कुव्वत चाहने वालों के ऐ मददगार मदद चाहने वालों के। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस

اسْتَرْعَاهُ يَا شَافِيَ مَنِ اسْتَشْفَاهُ يَا قَاضِيَ مَنِ اسْتَقْضَاهُ يَا

है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ६१. ख़ुदावन्दा ब तहक़ीक़ कि मैं सवाल करता हुँ तेरे नाम के साथ ऐ पैदा करने वाले

مُغْنِيَ مَنِ اسْتَغْنَاهُ يَا مُوْفِيَ مَنِ اسْتَوْفَاهُ يَا مُقَوِّيَ مَنِ

ऐ रोज़ी देने वाले ऐ जुदा करने वाले ऐ जुदा और बहम करने वाले अश्या के ऐ सबसे पहले ऐ बुलन्द मतर्बा। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद

اسْتَقْوَاهُ يَا وَلِيَّ مَنِ اسْتَوْلَاهُ. ٦١. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ

नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ६२. ऐ वह ख़ुदा जो पलटता है रात

بِاسْمِكَ يَا خَالِقُ يَا رَازِقُ يَا نَاطِقُ يَا صَادِقُ يَا فَالِقُ يَا فَارِقُ

और दिन को ऐ वह खुदा जिस ने पैदा किया तारीकियों को और रौशनी को ऐ वह ख़ुदा जिसने पैदा किया साया को और गर्मा आफ़ताब को,

يَا فَاتِقُ يَا رَاتِقُ يَا سَابِقُ يَا سَامِقُ. ٦٢. يَا مَنْ يُّقَلِّبُ اللَّيْلَ

ऐ वह ख़ुदा कि जिसके ताबे हैं सूरज और चांद ऐ वह ख़ुदा कि जिसने तकदीर किया है नेकी और बदी को ऐ वह ख़ुदा जिसने पैदा किया है

وَالنَّهَارَ يَا مَنْ جَعَلَ الظُّلُمَاتِ وَالْاَنْوَارَ يَا مَنْ خَلَقَ الظِّلَّ

मौत और ज़िन्दगी को ऐ वह खुदा कि जिसके लिऐ है आलमे अरवाह ऐ वह ख़ुदा जो नहीं रखता है औरत और फ़रज़न्द ऐ वह ख़ुदा कि नहीं

وَالْحَرُوْرَ يَا مَنْ سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ يَا مَنْ قَدَّرَ الْخَيْرَ

है कोई शरीक उसकी बादशाही में ऐ वह ख़ुदा कि नहीं है वास्ते उसके कोई दोस्त ज़िल्लत से। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है

وَالشَّرَّ يَا مَنْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ يَا مَنْ لَّهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ

और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ६३. ऐ वह ख़ुदा जो जानता है मतलब इरादा करने

يَا مَنْ لَّمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا يَا مَنْ لَيْسَ لَهُ شَرِيْكٌ فِي

वालों का ऐ वह खुदा जो जानता है ख़्वाहिश ख़ामूशो की ऐ वह ख़ुदा जो सुनता है नाला आजिज़ों का ऐ वह खुदा जो देखता है रोना डरने वालों

الْمُلْكِ يَا مَنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُ وَلِيٌّ مِنَ الذُّلِّ. ٦٣. يَا مَنْ يَّعْلَمُ

का ऐ वह खुदा जो बा आरिन्दा है सवाल करने वालों की हाजतों का ऐ वह ख़ुदा जो कुबूल करता है उर्ज तौबा करने वालों का ऐ वह ख़ुदा जो

مُرَادُ الْمُرِيْدِيْنَ يَا مَنْ يَّعْلَمُ ضَمِيْرَ الصَّامِتِيْنَ يَا مَنْ

नेक नहीं गरदान्ता आमाल मुफ़्सदों के ऐ वह खुदा जो नेकी करने वालों का अर्ज़ ज़ाया नहीं करता ऐ वह ख़ुदा जो दूर नहीं है आरिफ़ों के दिलों

يَّسْمَعُ اَنِيْنَ الْوَاهِنِيْنَ يَا مَنْ يَّرٰى بُكَآءَ الْخَآئِفِيْنَ يَا مَنْ

से ऐ साहिबे बख़शिश बख़शिश करने वालों के। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात

يَّمْلِكُ حَوَآئِجَ السَّآئِلِيْنَ يَا مَنْ يَقْبَلُ عُذْرَ التَّآئِبِيْنَ يَا مَنْ

दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ६४. ऐ हमेशा बाकी रहने वाले ऐ सुन्ने वाले दुआ के ऐ फराख बख़शने वाले ऐ बख़शने वाले

لَا يُصْلِحُ اَعْمَالَ الْمُفْسِدِيْنَ يَا مَنْ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ

गुनाहों के ऐ पैदा करने वाले आसमानों के ऐ बेहतरीन आज़माइश करने वाले ऐ बहुत तारीफ़ के लायक ऐ हमेशा से बुज़ुर्ग ऐ बड़े वफा करने

الْمُحْسِنِيْنَ يَا مَنْ لَا يَبْعُدُ عَنْ قُلُوْبِ الْعَارِفِيْنَ يَا اَجْوَدَ

वाले ऐ बेहतरीन बदला देने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख

الْاَجْوَدِيْنَ. ٦٤. يَا دَآئِمَ الْبَقَآءِ يَا سَامِعَ الدُّعَآءِ يَا وَاسِعَ

की आग से ऐ पालने वाले। ६५. खुदान्दा सवाल करता हुँ मैं तुझसे तेरे नाम के साथ ऐ छुपाने वाले ऐ बख़शिश वाले ऐ क़हर करने वाले ऐ

الْعَطَاءِ يَا غَافِرَ الْخَطَآءِ يَا بَدِيْعَ السَّمَاءِ يَا حَسَنَ الْبَلَآءِ يَا

तलाफी करने वाले ऐ सब्र करने वाले ऐ नेकी वाले ऐ बरगुजीदा ऐ खोलने वाले ऐ हवाओं के चलाने वाले ऐ राहतों के देने वाले। ऐ वह जिसके

جَمِيْلَ الثَّنَآءِ يَا قَدِيْمَ السَّنَآءِ يَا كَثِيْرَ الْوَفَآءِ يَا شَرِيْفَ

सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ६६. ऐ वह खुदा

الْجَزَآءِ. ٦٥. اَللّٰهُمَّ اِنِّىۤ اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَا سَتَّارُ يَا غَفَّارُ يَا

जिसने मुझे पैदा किया है और उमदा पैदा किया है मुझको ऐ वह खुदा जिसने मुझको रिज़्क दिया और मुझको सेराब किया ऐ वह खुदा जिसने

قَهَّارُ يَا جَبَّارُ يَا صَبَّارُ يَا بَآرُّ يَا مُخْتَارُ يَا فَتَّاحُ يَا نَفَّاحُ يَا

मुझको कुर्बे करामत कर दिया है ऐ वह खुदा जिसने मुझको महफ़ुज़ रखा और बचाया है ऐ वह खुदा जिसने बचाया है मुझको और निगहबानी

مُرْتَاحُ. ٦٦. يَا مَنْ خَلَقَنِىْ وَ سَوَّانِىْ يَا مَنْ رَزَقَنِىْ وَ رَبَّانِىْ يَا مَنْ

की मेरी ऐ वह खुदा जिसने मुझको अज़ीज़ व तवंगर किया है ऐ वह खुदा जिसने मुझको तौफ़ीक दि और राह दिखाई ऐ वह खुदा जिसने मेरी

اَطْعَمَنِىْ وَ سَقَانِىْ يَا مَنْ قَرَّبَنِىْ وَ اَدْنَانِىْ يَا مَنْ عَصَمَنِىْ وَ

रिफ़ाक़त की और जाये पनाह दी ऐ वह ख़ुदा जो मेरा मौत देने वाला और ज़िन्दा करने वाला है। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक

كَفَانِىْ يَا مَنْ حَفِظَنِىْ وَ كَلَانِىْ يَا مَنْ اَعَزَّنِىْ وَ اَغْنَانِىْ يَا مَنْ

है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ६७. ऐ वह ख़ुदा जो हक को अपने कलाम से

وَفَّقَنِىْ وَ هَدَانِىْ يَا مَنْ اٰنَسَنِىْ وَ اٰوَانِىْ يَا مَنْ اَمَاتَنِىْ وَ اَحْيَانِىْ.

कायम करता है ऐ वह ख़ुदा जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है ऐ वह खुदा जो हायल है दरमियान आदमी और उसके दिल के ऐ वह

٦٧. يَا مَنْ يُّحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهٖ يَا مَنْ يَّقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ

ख़ुदा नहीं नफा देती शफ़ाअत मगर उसके इज़्न से ऐ वह ख़ुदा कि जो जानने वाला है उनका जो रास्त से भटक गये हैं ऐ वह ख़ुदा कि कोई नहीं

يَا مَنْ يَّحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَ قَلْبِهٖ يَا مَنْ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ اِلَّا

बदल सकता उसके हुक्म को ऐ वह खुदा कि नहीं रोक सकता कोई उसके फ़ैसले को ऐ वह ख़ुदा कि हर शैय ताबेदार है उसके हुक्म की ऐ

بِاِذْنِهٖ يَا مَنْ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ يَا مَنْ لَّا

वह ख़ुदा कि आसमान लिपटे हुए हैं उसके कब्ज़ा-ए-कुदरत में ऐ वह खुदा कि भेजता है हवाओं को ख़ुशख़बरी देने वाली उसकी रहमत की।

مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ يَا مَنْ لَّا رَآدَّ لِقَضَآئِهٖ يَا مَنِ انْقَادَ كُلُّ شَيْءٍ

ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ६८.

لِاَمْرِهٖ يَا مَنِ السَّمٰوٰتُ مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِيْنِهٖ يَا مَنْ يُّرْسِلُ

ऐ वह ख़ुदा जिसने ज़मीन को बिछौना गरदाना है। ऐ वह ख़ुदा जिसने पहाड़ों को मींख़े बनाया है ऐ वह ख़ुदा जिसने आफ़ताब को चराग की

الرِّيَاحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ. ٦٨. يَا مَنْ جَعَلَ الْاَرْضَ

तरह रौशन बनाया ऐ वह ख़ुदा जिसने चांद को रात की रौशनी गरदाना है ऐ वह ख़ुदा जिसने रात को महल आराम व राहत बनाया ऐ वह ख़ुदा

مِهَادًا يَا مَنْ جَعَلَ الْجِبَالَ اَوْتَادًا يَا مَنْ جَعَلَ الشَّمْسَ

जिसने दिन को मआश के लिए बनाया ऐ वह खुदा जिसने नींन को राहत करार दिया ऐ वह खुदा जिसने आसमान को क़ायम किया। ऐ वह

سِرَاجًا يَا مَنْ جَعَلَ الْقَمَرَ نُوْرًا يَا مَنْ جَعَلَ اللَّيْلَ لِبَاسًا

ख़ुदा जिसने दोज़ख को मकामे दरूदे ख़लाएक किया। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है।

يَا مَنْ جَعَلَ النَّهَارَ مَعَاشًا يَا مَنْ جَعَلَ النَّوْمَ سُبَاتًا يَا مَنْ

नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ६९. ख़ुदावन्दा मैं तेरे ही नाम से तुझ से मांगता हुँ ऐ सुन्ने वाले ऐ शफ़ाअत करने वाले ऐ

جَعَلَ السَّمَآءَ بِنَآءً يَا مَنْ جَعَلَ الْاَشْيَآءَ اَزْوَاجًا يَا مَنْ

बुलन्द मतर्बा ऐ मना करने वाले ऐ हिसाब जल्द करने वाले ऐ ज़िन्दा ऐ बुज़ुर्ग ऐ कुदरत वाले ऐ ख़बर रखने वाले ऐ पनाह देने वाले। ऐ वह

جَعَلَ النَّارَ مِرْصَادًا. ٦٩. اَللّٰهُمَّ اِنِّیۤ اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَا

जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ७०० पहले

سَمِيْعُ يَا شَفِيْعُ يَا رَفِيْعُ يَا مَنِيْعُ يَا سَرِيْعُ يَا بَدِيْعُ يَا كَبِيْرُ يَا

से ज़िन्दों से ऐ ज़िन्दा बाद हर ज़िन्दा के ऐ ज़िन्दा वह जिसके मानिन्द कोई ज़िन्दा नहीं ऐ वह ज़िन्दा कि जिसका कोई शरीक नहीं ऐ वह ज़िन्दा

قَدِيْرُ يَا خَبِيْرُ يَا مُجِيْرُ. ٧٠. يَا حَيًّا قَبْلَ كُلِّ حَيٍّ يَا حَيًّا بَعْدَ كُلِّ

जो किसी का मुहताज नहीं ऐ वह ज़िन्दा जो हर साहिबे हयात को मौत देता है हयात को रोज़ी देता है ऐ वह ज़िन्दा जो मुर्दों को ज़िन्दा करता

حَيٍّ يَا حَيُّ الَّذِیْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ حَیٌّ يَا حَیُّ الَّذِیْ لَا يُشَارِكُهٗ حَیٌّ

है ऐ वह ज़िन्दा ऐ वह क़ाएम जो न उंघता है और न सोता है। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद

يَا حَیُّ الَّذِیْ لَا يَحْتَاجُ اِلٰی حَيٍّ يَا حَیُّ الَّذِیْ يُمِيْتُ كُلَّ حَيٍّ يَا حَیُّ

रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ७१. ऐ वह खुदा कि जिसका ज़िक्र फरामोश नहीं होता ऐ वह खुदा जिसका नूर

الَّذِیْ يَرْزُقُ كُلَّ حَيٍّ يَا حَيًّا لَمْ يَرِثِ الْحَيٰوةَ مِنْ حَيٍّ يَا حَیُّ

नहीं बुझता ऐ वह ख़ुदा जिसकी नेमतें शुमार नहीं होतीं ऐ वह ख़ुदा जिसका मुल्क ला जवाल है ऐ वह ख़ुदा जिसकी तारीफ ला इंतेहा है ऐ वह

الَّذِیْ يُحْيِ الْمَوْتٰی يَا حَیُّ يَا قَيُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ. ٧١.

ख़ुदा जिसकी बुज़ुर्गी को जवाल नहीं ऐ वह ख़ुदा जिसका कमाल समझ से बाहर है ऐ वह ख़ुदा जिसका हुक्म रद् नहीं होता ऐ वह ख़ुदा जिसकी

يَا مَنْ لَهٗ ذِكْرٌ لَا يُنْسٰی يَا مَنْ لَهٗ نُوْرٌ لَا يُطْفٰی يَا مَنْ لَهٗ نِعَمٌ

सिफ़तें तबदील नहीं होतीं। ऐ वह ज़िन्दा जिसने किसी ज़िन्दा से ज़िन्दगी नहीं पाई ऐ वह ज़िन्दा जो जर साहिबे ऐ वह ख़ुदा जिसकी तारीफ में

لَا تُعَدُّ يَا مَنْ لَهٗ مُلْكٌ لَا يَزُوْلُ يَا مَنْ لَهٗ ثَنَآءٌ لَا يُحْصٰى يَا مَنْ

तग़य्युर नहीं होता। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से

لَهٗ جَلَالٌ لَا يُكَيَّفُ يَا مَنْ لَهٗ كَمَالٌ لَا يُدْرَكُ يَا مَنْ لَهٗ

ऐ पालने वाले। ७२. ऐ आलमों के पालने वाले ऐ क़यामत के मालिक ऐ मुराद तलब करने वालों की इंतेहा ऐ पनाह चाहने वालों के पुश्त

قَضَآءٌ لَا يُرَدُّ يَا مَنْ لَهٗ صِفَاتٌ لَا تُبَدَّلُ يَا مَنْ لَهٗ نُعُوْتٌ لَا

पनाह ऐ भागे हुवों के पालने वाले ऐ सब्र करने वालों के चाहने वाले ऐ तौबा करने वालों से मुहब्बत करने वाले ऐ पाक़ीज़ा लोगों को दोस्त

تُغَيَّرُ. ٧٢. يَا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ يَا مَالِكَ يَوْمِ الدِّيْنِ يَا غَايَةَ

रखने वाले ऐ नेकोकारों के हबीब ऐ हिदायत याफ़्ता लोगों के दोस्त रखने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद

الطَّالِبِيْنَ يَا ظَهْرَ اللَّاجِيْنَ يَا مُدْرِكَ الْهَارِبِيْنَ يَا مَنْ

रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ७३. ख़ुदावन्दा मैं तेरे नाम पर तुझसे सवाल करता हूँ ऐ शफ़क़त

يُحِبُّ الصَّابِرِيْنَ يَا مَنْ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ يَا مَنْ يُحِبُّ

करने वाले ऐ साथ रहने वाले ऐ हिफ़ाज़त करने वाले ऐ इहाता करने वाले ऐ कुव्वत देने वाले ऐ फ़रयादरस ऐ इज़्ज़त देने वाले ऐ ज़िल्लत देने

الْمُتَطَهِّرِيْنَ يَا مَنْ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ يَا مَنْ هُوَ اَعْلَمُ

वाले ऐ पैदा करने वाले ऐ लौटाने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको

بِالْمُهْتَدِيْنَ. ٧٣. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَا شَفِيْقُ يَا

दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ७४. ऐ वह ख़ुदा जो एक है, बिला ज़िद के ऐ वह ख़ुदा जो अल्लाह है बिला शरीक के ऐ वह ख़ुदा जो यगाना

رَفِيْقُ يَا حَفِيْظُ يَا مُحِيْطُ يَا مُقِيْتُ يَا مُغِيْثُ يَا مُعِزُّ يَا مُذِلُّ

है और यक्सां है ऐ वह ख़ुदा जो हुक्म करता बिला सितम के ऐ वह ख़ुदा जो परवरदिगार है बे वज़ीर के ऐ वह खुदा जो साहिबे इज़्ज़त है बगैर

يَا مُبْدِءُ يَا مُعِيْدُ. ٧٤. يَا مَنْ هُوَ اَحَدٌ بِلاَ ضِدٍّ يَا مَنْ هُوَ فَرْدٌ

ज़िल्लत के ऐ खुदाऐ तवंगर बिला फ़क्र के ऐ बादशाहे बे ज़वाल ऐ वह ख़ुदा जिसकी सिफ़त बे मसल है। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं

بِلاَ نِدٍّ يَا مَنْ هُوَ صَمَدٌ بِلاَ عَيْبٍ يَا مَنْ هُوَ وِتْرٌ بِلاَ كَيْفٍ يَا

तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ७५. ऐ वह ख़ुदा जिसका ज़िक्र ज़िक्र

مَنْ هُوَ قَاضٍ بِلاَ حَيْفٍ يَا مَنْ هُوَ رَبٌّ بِلاَ وَزِيْرٍ يَا مَنْ هُوَ

करने वालों का शर्फ है ऐ वह ख़ुदा कि शुक्र उसका शुक्र करने वालों के लिए बाइसे नजात है ऐ वह ख़ुदा हि हम्द उसकी हम्द करने वालों के

عَزِيْزٌ بِلاَ ذُلٍّ يَا مَنْ هُوَ غَنِيٌّ بِلاَ فَقْرٍ يَا مَنْ هُوَ مَلِكٌ بِلاَ

लिए इज़्ज़त है ऐ वह ख़ुदा कि ताअत उसकी ताअत करने वालों के लिए नजात है ऐ वह खुदा जिसकी राह तौबा करने वालों के लिए रौशन

عَزْلٍ يَا مَنْ هُوَ مَوْصُوْفٌ بِلاَ شَبِيْهٍ. ٧٥. يَا مَنْ ذِكْرُهُ شَرَفٌ

है ऐ वह खुदा जिसकी निशानियां देखने वालों के लिए दलील हैं ऐ वह खुदा कि जिसकी किताब परहेज़गारों के लिए नसीहत है ऐ वह खुदा

لِّلذَّاكِرِيْنَ يَا مَنْ شُكْرُهُ فَوْزٌ لِّلشَّاكِرِيْنَ يَا مَنْ حَمْدُهُ عِزٌّ

जिसका रिज़्क फरमांब्रदारों और ना फरमानों के लिए आम है ऐ वह खुदा की रहमत जिसकी करीब है नेकोकारों से। ऐ वह जिसके सिवा कोई

لِّلْحَامِدِيْنَ يَا مَنْ طَاعَتُهُ نَجَاةٌ لِّلْمُطِيْعِيْنَ يَا مَنْ بَابُهُ

माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ७६. ऐ वह ख़ुदा कि बरकत

مَفْتُوحٌ لِّلطَّالِبِيْنَ يَا مَنْ سَبِيْلُهٗ وَاضِحٌ لِّلْمُنِيْبِيْنَ يَا مَنْ

वाला है नाम जिसका ऐ वह खुदा कि इज़्ज़त जिसकी बुलन्द है ऐ वह खुदा कि जिसके सिवा कोई माबूद नहीं ऐ वह खुदा कि जिसकी सताइश

اٰيَاتُهٗ بُرْهَانٌ لِّلنَّاظِرِيْنَ يَا مَنْ كِتَابُهٗ تَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ يَا

बुज़ुर्ग है ऐ वह खुदा कि जिसके नाम पाक हैं ऐ वह खुदा कि जिसको हमेशा बक़ा है ऐ वह खुदा कि बुज़ुर्गी जिसका ज़ेवर है ऐ वह खुदा कि

مَنْ رِّزْقُهٗ عُمُوْمٌ لِّلطَّآئِعِيْنَ وَالْعَاصِيْنَ يَا مَنْ رَّحْمَتُهٗ

बड़ाई जिसकी रिदा है ऐ वह खुदा कि नेमतें जिसकी शुमार नहीं हो सकतीं ऐ वह खुदा कि करामतें जिसकी शुमार नहीं हो सकती। ऐ वह

قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ. ٧٦. يَا مَنْ تَبَارَكَ اسْمُهٗ يَا مَنْ تَعَالٰى

जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ७७. ऐ

جَدُّهٗ يَا مَنْ لَّا اِلٰهَ غَيْرُهٗ يَا مَنْ جَلَّ ثَنَآؤُهٗ يَا مَنْ تَقَدَّسَتْ

बारे इलाहा मैं तेरे नाम से सवाल करता हुँ ऐ मददगार ऐ अमानतदार ऐ कलामे रौशन ऐ मतानत दार ऐ कायम ऐ बुज़ुर्गा वाले ऐ सजावर

اَسْمَآؤُهٗ يَا مَنْ يَّدُوْمُ بَقَآؤُهٗ يَا مَنِ الْعَظَمَةُ بَهَآؤُهٗ يَا مَنِ

(हम्द) ऐ शान वाले ऐ सख्तगीर ऐ शहादत देने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है।

الْكِبْرِيَآءُ رِدَآؤُهٗ يَا مَنْ لَا تُحْصٰى اٰلَآؤُهٗ يَا مَنْ لَا تُعَدُّ نَعْمَآؤُهٗ.

नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ७८. ऐ साहिबे अर्श बुज़ुर्ग ऐ सच कहने वाले ऐ कारे अज़ीम के अंजाम देने वाले रहमत

٧٧. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَا مُعِيْنُ يَا اَمِيْنُ يَا مُبِيْنُ يَا

व अज़ाब करने वाले ऐ रहमत व अजाब के वादा करने वाले ऐ वह ख़ुदा जो खलाइके हम्द व सना है ऐ वह ख़ुदा जो चाहता है वह करता है

مَتِيْنُ يَا مَكِيْنُ يَا رَشِيْدُ يَا حَمِيْدُ يَا مَجِيْدُ يَا شَدِيْدُ يَا شَهِيْدُ.

ऐ वह ख़ुदा जो नज़दीक है दूर नहीं ऐ वह खुदा जो हर शै पर गवाह है ऐ वह ख़ुदा जो अपने बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता। ऐ वह जिसके सिवा

٧٨. يَا ذَا الْعَرْشِ الْمَجِيْدِ يَا ذَا الْقَوْلِ السَّدِيْدِ يَا ذَا الْفِعْلِ

कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ७९. ऐ वह ख़ुदा कि

الرَّشِيْدِ يَا ذَا الْبَطْشِ الشَّدِيْدِ يَا ذَا الْوَعْدِ وَالْوَعِيْدِ يَا

जिसका कोई शरीक नहीं और न कोई वज़ीर है ऐ वह ख़ुदा कि जिसकी ना कोई शबीह है और न नज़ीर ऐ वह पैदा करने वाले आफ़ताब के

مَنْ هُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ يَا مَنْ هُوَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ يَا مَنْ هُوَ

और रौशन माहताब के ऐ परेशान हाल मोहताज को मालदार बनाने वाले ऐ छोटे बच्चों को रिज़्क पहुँचाने वाले ऐ बूढ़ों पर रहम खाने वाले ऐ

قَرِيْبٌ غَيْرُ بَعِيْدٍ يَا مَنْ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ يَا مَنْ هُوَ

टूटी हुई हड्डी को जोड़ने वाले ऐ ख़ौफ ज़दा पनाह चाहने वाले के बचाव ऐ वह ख़ुदा जो अपने बन्दों की ख़बर रखता है और उनका देखने वाला

لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ. ٧٩. يَا مَنْ لَّا شَرِيْكَ لَهٗ وَلَا وَزِيْرَ يَا

है ऐ वह ख़ुदा जो हर चीज़ पर कुदरत रखता है। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात

مَنْ لَّا شَبِيْهَ لَهٗ وَلَا نَظِيْرَ يَا خَالِقَ الشَّمْسِ وَالْقَمَرِ الْمُنِيْرِ

दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ८०. ऐ नेमतों के बख़्शने वाले ऐ फ़ज़्ल व करम वाले ऐ लौह व क़लम के पैदा करने वाले ऐ

يَا مُغْنِيَ الْبَآئِسِ الْفَقِيْرِ يَا رَازِقَ الطِّفْلِ الصَّغِيْرِ يَا رَاحِمَ

चयुंटी और आदमी के पैदा करने वाले ऐ अज़ाब करने वाले और इंतेकाम लेने वाले ऐ अरब व अज़म के इल्हाम करने वाले ऐ सख़्तियों और

الشَّيْخِ الْكَبِيْرِ يَا جَابِرَ الْعَظْمِ الْكَسِيْرِ يَا عِصْمَةَ الْخَآئِفِ

रंज के दूर करने वाले ऐ पोशीदा बातों के जानने वाले ऐ काबा के मालिक, ऐ अदम से चीज़ों के वजूद में लाने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई

الْمُسْتَجِيْرِ يَا مَنْ هُوَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌ بَصِيْرٌ يَا مَنْ هُوَ عَلٰى كُلِّ

माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ८१. ऐ परवरदिगार मैं तेरे नाम

شَيْءٍ قَدِيْرٌ. ٨٠. يَا ذَا الْجُوْدِ وَالنِّعَمِ يَا ذَا الْفَضْلِ وَالْكَرَمِ يَا

के साथ तुझसे भीक मांगता हुँ ऐ कर्दगार ऐ पैदा करने वाले ऐ कुबूल करने वाले ऐ कामिल व अकमल ऐ जुदा करने वाले ऐ फज़ीलत वाले

خَالِقَ اللَّوْحِ وَالْقَلَمِ يَا بَارِءَ الذَّرِّ وَالنَّسَمِ يَا ذَا الْبَأْسِ

ऐ इंसाफ करने वाले ऐ गलबा हासिल करने वाले ऐ मुतालबा करने वाले ऐ बख़शिश करने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु

وَالنِّقَمِ يَا مُلْهِمَ الْعَرَبِ وَالْعَجَمِ يَا كَاشِفَ الضُّرِّ وَالْاَلَمِ

पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ८२. ऐ वह खुदा जिसने अपने फ़ज़ल व

يَا عَالِمَ السِّرِّ وَالْهِمَمِ يَا رَبَّ الْبَيْتِ وَالْحَرَمِ يَا مَنْ خَلَقَ

करम से हमें निमतें दीं, ऐ वह खुदा जो बख़शिश व इंआम देने वाला है ऐ वह ख़ुदा जिसने अपने फज़ल से इनाम फ़रमाया ऐ वह खुदा जिसने

الْاَشْيَآءَ مِنَ الْعَدَمِ. ٨١. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَا

अपनी कुदरत से हमको इज़्ज़त दी ऐ वह ख़ुदा जो अपनी कुदरत से क़ादिर है ऐ वह ख़ुदा जो अपनी तदबीर से हकीम है ऐ वह ख़ुदा जो अपने

فَاعِلُ يَا جَاعِلُ يَا قَابِلُ يَا كَامِلُ يَا فَاصِلُ يَا وَاصِلُ يَا

इल्म से तदबीर करने वाला है ऐ वह ख़ुदा जो अपने हिल्म से दरगुज़र करता है ऐ वह ख़ुदा जो अपने मतर्बे की वजह से नज़दिक है ऐ वह ख़ुदा

عَادِلُ يَا غَالِبُ يَا طَالِبُ يَا وَاهِبُ. ٨٢. يَا مَنْ اَنْعَمَ بِطَوْلِهٖ يَا

जो अपनी कुदरत की वजह से निहायत बुलन्द मतर्बा है। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है।

مَنْ اَكْرَمَ بِجُوْدِهٖ يَا مَنْ جَادَ بِلُطْفِهٖ يَا مَنْ تَعَزَّزَ بِقُدْرَتِهٖ يَا

नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ८३. ऐ वह ख़ुदा जो चाहता है वह पैदा करता है ऐ वह ख़ुदा जो चाहता है वह करता है ऐ

مَنْ قَدَّرَ بِحِكْمَتِهٖ يَا مَنْ حَكَمَ بِتَدْبِيْرِهٖ يَا مَنْ دَبَّرَ بِعِلْمِهٖ يَا

वह ख़ुदा जिसको चाहता है हिदायत करता है ऐ वह ख़ुदा जिसका चाहता है गुमराह छोड़ देता है ऐ वह ख़ुदा जिसको चाहता है बख़शता है ऐ

مَنْ تَجَاوَزَ بِحِلْمِهٖ يَا مَنْ دَنٰى فِيْ عُلُوِّهٖ يَا مَنْ عَلَا فِيْ دُنُوِّهٖ. ٨٣. يَا

वह ख़ुदा जिसको चाहता है इज़्ज़त देता है ऐ वह ख़ुदा जिसको चाहता है ज़िल्लत देता है ऐ वह ख़ुदा जो रिहम में जैसी चाहता है सूरत बनाता है

مَنْ يَّخْلُقُ مَا يَشَآءُ يَا مَنْ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ يَا مَنْ يَهْدِيْ مَنْ

ऐ वह खुदा जो अपनी रहमत जिसको चाहता है मख़सूस करता है। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का

يَّشَآءُ يَا مَنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ يَا مَنْ يُّعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ يَا مَنْ

फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ८४. ऐ वह ख़ुदा जिसके लिए जन व फरज़न्द नहीं ऐ वह ख़ुदा जिसने हर

يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ يَا مَنْ يُعِزُّ مَنْ يَّشَآءُ يَا مَنْ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ

चीज़ के लिए अंदाज़ा किया ऐ वह ख़ुदा जो अपने हुकम में किसी को शरीक नहीं रखता ऐ वह ख़ुदा जिसने फरिशतों को पैग़म्बर मुकर्रर किया

يَا مَنْ يُّصَوِّرُ فِي الْاَرْحَامِ مَا يَشَآءُ يَا مَنْ يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ

ऐ वह ख़ुदा जिस ने आसमानों में बुज़ुर्ग बनाये ऐ वह ख़ुदा जिसने ज़मीन को आरामगाह करार दिया ऐ वह ख़ुदा जिसे नुतफे से आदमी बनाया

مَنْ يَّشَآءُ. ٨٤. يَا مَنْ لَّمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا يَا مَنْ جَعَلَ

ऐ वह ख़ुदा जिसने हर चीज़ के लिए एक मुद्दत मुअय्यन की ऐ वह ख़ुदा जो हर चीज़ पर मुहीत है ऐ वह ख़ुदा जो हर चीज़ के एदाद व शुमार

لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا يَا مَنْ لَّا يُشْرِكُ فِي حُكْمِهِ أَحَدًا يَا مَنْ

से वाक़फ़ है। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ

جَعَلَ الْمَلَآئِكَةِ رُسُلًا يَا مَنْ جَعَلَ فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا يَا مَنْ

पालने वाले। ८५. ऐ पालने वाले मैं तेरे ही नाम पर तुझसे भीक मांगता हुँ ऐ सबसे पहले ऐ सबसे बाद ऐ ज़ाहिर ऐ में मख़फी ऐ सज़ावार ऐ

جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا يَا مَنْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا يَا مَنْ

हक व सदाकत ऐ यगाना ऐ बे मसल ऐ बे नियाज़ ऐ हमेशा रहने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का

جَعَلَ لِكُلِّ شَيْءٍ أَمَدًا يَا مَنْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا يَا مَنْ

फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ८६. ऐ बेहतर पहचाने हुऐ जो लायक़ पहचानने के है ऐ सबसे बेहतर

أَحْصَى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا. ٨٥. اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَآ

माबूद जो इबादत के लायक़ है ऐ बेहतरीन मश्कूर जो शुक्र का सज़ावार है ऐ इज़्ज़त वाले जो याद किया जाता है ऐ बेहतरीन महमूद जिसकी

أَوَّلُ يَآ اٰخِرُ يَا ظَاهِرُ يَا بَاطِنُ يَا بَرُّ يَا حَقُّ يَا فَرْدُ يَا وِتْرُ يَا صَمَدُ

हम्द की जाती है ऐ सबसे क़दीम मौजूद जिसकी तलब की जाती है ऐ बुलन्द तरीन मौसूफ जिसकी तारीफ़ की जाती है ऐ बुज़ुर्ग तरीन मक़सूद

يَا سَرْمَدُ. ٨٦. يَا خَيْرَ مَعْرُوْفٍ عُرِفَ يَآ أَفْضَلَ مَعْبُوْدٍ عُبِدَ يَآ

जिसकी तरफ़ कस्द किया जाता है ऐ सबसे बेहतर मसऊल जिससे सवाल किया जाता है ऐ महबूब तरीन दोस्त जिसकी मारिफ़त कराई जाही

اَجَلَّ مَشْكُوْرٍ شُكِرَ يَآ اَعَزَّ مَذْكُوْرٍ ذُكِرَ يَآ اَعْلٰى مَحْمُوْدٍ حُمِدَ

है। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले।

يَآ اَقْدَمَ مَوْجُوْدٍ طُلِبَ يَآ اَرْفَعَ مَوْصُوْفٍ وُصِفَ يَآ اَكْبَرَ

८७. ऐ रोने वालों के दोस्त ऐ तवक्कुल करने वालों की जायेपनाह ऐ गुमराहों को हिदायत करने वाले ऐ ईमान वालों के मौला ऐ इबादत करने

مَقْصُوْدٍ قُصِدَ يَآ اَكْرَمَ مَسْئُوْلٍ سُئِلَ يَآ اَشْرَفَ مَحْبُوْبٍ

वालों के मोनिस ऐ आज़िज़ों के जायेपनाह ऐ सच्चों की नजात दिला देने वाले ऐ सबसे बेहतर कुदरत रखने वाले ऐ सबसे बेहतर जानने वाले

عُلِمَ. ٨٧. يَا حَبِيْبَ الْبَاكِيْنَ يَا سَيِّدَ الْمُتَوَكِّلِيْنَ يَا هَادِيَ

ऐ तमामी ख़लकत के पैदा करने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको

الْمُضِلِّيْنَ يَا وَلِيَّ الْمُؤْمِنِيْنَ يَآ اَنِيْسَ الذَّاكِرِيْنَ يَا مَفْزَعَ

दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ८८. ऐ वह जो बुलन्द हो कर ग़ालिब रहा ऐ वह जो मालिक हो कर साहिबे कुदरत रहा ऐ वह जो पोशीदा

الْمَلْهُوْفِيْنَ يَا مُنْجِيَ الصَّادِقِيْنَ يَآ اَقْدَرَ الْقَادِرِيْنَ يَآ اَعْلَمَ

हो कर बा ख़बर रहा ऐ वह कि जिसकी परस्तिश की गई और जिसने जज़ा दी ऐ वह कि जिसने अपनी ना फ़रमानी पर भी बख़्शा ऐ वह कि

الْعَالِمِيْنَ يَآ اِلٰهَ الْخَلْقِ اَجْمَعِيْنَ. ٨٨. يَا مَنْ عَلَا فَقَهَرَ يَا مَنْ

जिसको फिकरें घेर नहीं सकतीं ऐ वह कि जिसको आँख देख नहीं सकती ऐ वह कि जिस से कोई चीज़ पोशीदा नहीं ऐ एंसानों को रिज़्क देने

مَلَكَ فَقَدَرَ يَا مَنْ بَطَنَ فَخَبَرَ يَا مَنْ عُبِدَ فَشَكَرَ يَا مَنْ عُصِيَ

वाले ऐ किस्मतों की तकदीर वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको

فَغَفَرَ يَا مَنْ لَّا تَحْوِيهِ الْفِكَرُ يَا مَنْ لَّا يُدْرِكُهُ بَصَرٌ يَا مَنْ لَّا

दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ८९. ऐ पालने वाले मैं तेरे ही नाम पर तुझसे मांगता हुँ ऐ हिफ़ाज़त करने वाले ऐ पैदा करने वाले ऐ बुलन्द

يَخْفٰى عَلَيْهِ اَثَرٌ يَا رَازِقَ الْبَشَرِ يَا مُقَدِّرَ كُلِّ قَدَرٍ. ٨٩. اَللّٰهُمَّ

ऐ खोलने वाले ऐ खुश रखने वाले ऐ फ़तह करने वाले ऐ ज़ाहिर करने वाले ऐ किफ़ायत करने वाले ऐ नेकी का हुक्म करने वाले ऐ बदी से

اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَا حَافِظُ يَا بَارِءُ يَا ذَارِءُ يَا بَاذِخُ يَا فَارِجُ

रोकने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ

يَا فَاتِحُ يَا كَاشِفُ يَا ضَامِنُ يَا اٰمِرُ يَا نَاهِىْ. ٩٠. يَا مَنْ لَّا يَعْلَمُ

पालने वाले। ९०. ऐ वह ख़ुदा कि नहीं जानता ग़ैब कोई तेरे सिवा, ऐ वह ख़ुदा कि नहीं फेरता बलाओं को कोई तेरे सिवा ऐ वह खुदा कि नहीं

الْغَيْبَ اِلَّا هُوَ يَا مَنْ لَا يَصْرِفُ السُّوْٓءَ اِلَّا هُوَ يَا مَنْ لَّا يَخْلُقُ

ख़ल्क किया कोई मखलूक़ को मगर तु ने ऐ वह ख़ुदा कि नहीं बख़शता कोई गुनाहो को तेरे सिवा ऐ वह ख़ुदा कि कोई तमाम नहीं करता नेमतों

الْخَلْقَ اِلَّا هُوَ يَا مَنْ لَّا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا هُوَ يَا مَنْ لَا يُتِمُّ

को तेरे सिवा ऐ वह ख़ुदा कि नहीं फेरता कोई दिलों को तेरे सिवा ऐ वह ख़ुदा कि नहीं करता तदबीर कोई काम की तेरे सिवा ऐ वह खुदा कि

النِّعْمَةَ اِلَّا هُوَ يَا مَنْ لَّا يُقَلِّبُ الْقُلُوْبَ اِلَّا هُوَ يَا مَنْ لَّا

नहीं भेजता बाराने रहमत मगर तु ऐ वह ख़ुदा कि नहीं बुशाहा करता कोई रोज़ी को तेरे सिवा ऐ वह ख़ुदा कि नहीं ज़िन्दा करता मुर्दे को कोई

يُدَبِّرُ الْاَمْرَ اِلَّا هُوَ يَا مَنْ لَّا يُنَزِّلُ الْغَيْثَ اِلَّا هُوَ يَا مَنْ لَّا

तेरे सिवा। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने

يَبْسُطُ الرِّزْقَ اِلَّا هُوَ يَا مَنْ لَّا يُحْيِ الْمَوْتٰى اِلَّا هُوَ.٩١. يَا

वाले। ९१. ऐ कमज़ोरो की मदद करने वाले ऐ गरीबो के मालिक ऐ आसमानों के बुलन्द करने वाले ऐ बरगुज़ीदा बन्दों को दोस्त रखने वाले

مُعِيْنَ الضُّعَفَآءِ يَا صَاحِبَ الْغُرَبَآءِ يَا نَاصِرَ الْاَوْلِيَآءِ يَا

ऐ परहेज़गार बन्दों से मुहब्बत रखने वाले ऐ मोहताजों के ख़ज़ाने। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद

قَاهِرَ الْاَعْدَآءِ يَا رَافِعَ السَّمَآءِ يَآ اَنِيْسَ الْاَصْفِيَآءِ يَا

रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ९२. ऐ काफी हर शै से ऐ क़ायम हर चीज़ पर ऐ वह ख़ुदा जिसकी मानिन्द कोई

حَبِيْبَ الْاَتْقِيَآءِ يَا كَنْزَ الْفُقَرَآءِ يَآ اِلٰهَ الْاَغْنِيَآءِ يَآ اَكْرَمَ

शै नहीं ऐ वह ख़ुदा कि जिसकी बादशाही को कोई चीज़ ज़्यादा नहीं करती ऐ वह ख़ुदा कि जिस पर कोई चीज़ पिंहा नहीं ऐ वह ख़ुदा कि जिसके

الْكُرَمَآءِ.٩٢. يَا كَافِيَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ يَآ قَآئِمًا عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ يَا مَنْ

ख़ज़ाने से कोई चीज़ कम नहीं होती ऐ वह ख़ुदा जिसकी मानिन्द कोई चीज़ नहीं ऐ वह ख़ुदा जिसके इल्म से कोई चीज़ पौशीदा नहीं ऐ वह

لَّا يُشْبِهُهٗ شَيْءٌ يَا مَنْ لَّا يَزِيْدُ فِيْ مُلْكِهٖ شَيْءٌ يَا مَنْ لَّا يَخْفٰى

ख़ुदा कि हर शै से वाकिफ़ है ऐ वह ख़ुदा कि जिसकी रहमत हर शै के लिए शामिल है। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और

عَلَيْهِ شَيْءٌ يَا مَنْ لَّا يَنْقُصُ مِنْ خَزَآئِنِهٖ شَيْءٌ يَا مَنْ لَيْسَ

फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ९३. ऐ ख़ुदावन्द तुझसे तेरे ही नाम पर सवाल करता हुँ

كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ يَا مَنْ لَّا يَعْزُبُ عَنْ عِلْمِهٖ شَيْءٌ يَا مَنْ هُوَ خَبِيْرٌ

ऐ करम करने वाले ऐ खिलाने वाले ऐ नेमत देने वाले ऐ माल देने वाले ऐ गनी करने वाले ऐ पनाह देने वाले ऐ मारने वाले ऐ ज़िन्दा करने वाले

بِكُلِّ شَيْءٍ يَا مَنْ وَسِعَتْ رَحْمَتُهُ كُلَّ شَيْءٍ. ٩٣. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ

ऐ मसरूर करने वाले ऐ नजात देने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको

اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَا مُكْرِمُ يَا مُطْعِمُ يَا مُنْعِمُ يَا مُعْطِيْ يَا

दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ९४. ऐ हर शै से अव्वल और हर शै से आख़िर ऐ हर शैय के अल्लाह और हर शै के मालिक ऐ हर शै के

مُغْنِيْ يَا مُقْنِيْ يَا مُفْنِيْ يَا مُحْيِيْ يَا مُرْضِيْ يَا مُنْجِيْ. ٩٤. يَآ اَوَّلَ

पालने वाले और हर शै के बनाने वाले ऐ हर शै के पैदा करने वाले और हर शै के ख़ालिक ऐ हर शै के रोकने वाले और हर शैय के देने वाले

كُلِّ شَيْءٍ وَّ اٰخِرَهٗ يَا اِلٰهَ كُلِّ شَيْءٍ وَّمَلِيْكَهٗ يَا رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَّ

ऐ हर शै की इब्तेदा करने वाले और हर शै को फेरने वाले ऐ हर शै के मौजूद करने वाले और हर शै का अंदाज़ा करने वाले ऐ हर शै की ईजाद

صَانِعَهٗ يَا بَارِءَ كُلِّ شَيْءٍ وَّ خَالِقَهٗ يَا قَابِضَ كُلِّ شَيْءٍ وَّ

करने वाले और हर शै के तगय्युर देने वाले ऐ हर शै के पैदा करने वाले और मालिक। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और

بَاسِطَهٗ يَا مُبْدِءَ كُلِّ شَيْءٍ وَّ مُعِيْدَهٗ يَا مُنْشِءَ كُلِّ شَيْءٍ وَّ

फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ९५. ऐ बस ज़िक्र करने वालों से बेहतर और जिनका

مُقَدِّرَهٗ يَا مُكَوِّنَ كُلِّ شَيْءٍ وَّ مُحَوِّلَهٗ يَا مُحْيِيَ كُلِّ شَيْءٍ وَّ مُمِيْتَهٗ

ज़िक्र किया गया ऐ सब शुक्र गुज़ारों के बेहतर और जिनका शुक्र किया गया ऐ सब हम्द करने वालों से बेहतर और जिनकी बे पनाह हम्द की

يَا خَالِقَ كُلِّ شَيْءٍ وَّ وَارِثَهٗ. ٩٥. يَا خَيْرَ ذَاكِرٍ وَّ مَذْكُوْرٍ يَّا خَيْرَ

गई ऐ बेहतरीन शाहिदों और मश्हुदों के ऐ बेहतरीन बुलाने वालों और बुलाऐ हुओं के ऐ बेहतरीन क़बूल करने वालों और मक़बूलों के ऐ

شَاكِرٍ وَّ مَشْكُوْرٍ يَا خَيْرَ حَامِدٍ وَّ مَحْمُوْدٍ يَا خَيْرَ شَاهِدٍ وَّ

बेहतरीन मुसाहिबों और दोस्तों के ऐ बेहतरीन सुहबत रखने वालों और हम नशीनों के ऐ बेहतरीन मकसूद व मतलूब के ऐ बेहतरीन दोस्तों

مَشْهُوْدٍ يَا خَيْرَ دَاعٍ وَّ مَدْعُوٍّ يَا خَيْرَ مُجِيْبٍ وَّ مُجَابٍ يَا خَيْرَ

और महबूबों के। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ

مُؤْنِسٍ وَّ اَنِيْسٍ يَا خَيْرَ صَاحِبٍ وَّ جَلِيْسٍ يَا خَيْرَ مَقْصُوْدٍ

पालने वाले। ९६. ऐ वह ख़ुदा जो दुआ करने वालों की दुआ क़बूल करने वाला है ऐ वह ख़ुदा जो फ़रमांबरदारों को दोस्त है ऐ वह ख़ुदा जो

وَّ مَطْلُوْبٍ يَا خَيْرَ حَبِيْبٍ وَّ مَحْبُوْبٍ. ٩٦. يَا مَنْ هُوَ لِمَنْ دَعَاهُ

अपने दोस्तों के नज़दीक है ऐ वह ख़ुदा जो हिफ़ाज़त करने वालों का निगहदार है ऐ वह ख़ुदा जो उम्मीदवारों के लिए करीम है ऐ वह ख़ुदा जो

مُجِيْبٌ يَا مَنْ هُوَ لِمَنْ اَطَاعَهُ حَبِيْبٌ يَا مَنْ هُوَ اِلٰى مَنْ

गुनाहगारों के लिऐ बुर्दबार है ऐ वह ख़ुदा जो बावजूद अपनी बुज़ुर्गी के मेहरबान है ऐ वह ख़ुदा जो हिकमत की रू से बुज़ुर्ग है ऐ वह ख़ुदा

اَحَبَّهُ قَرِيْبٌ يَا مَنْ هُوَ بِمَنِ اسْتَحْفَظَهُ رَقِيْبٌ يَا مَنْ هُوَ

जिसका एहसान क़दीम है ऐ वह ख़ुदा जो उन लोगों के आगाह है जो उसकी मारिफत का क़स्द करते हैं। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं

بِمَنْ رَجَاهُ كَرِيْمٌ يَا مَنْ هُوَ بِمَنْ عَصَاهُ حَلِيْمٌ يَا مَنْ هُوَ فِيْ

तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ९७. ऐ ख़ुदा मैं तुझसे तेरे ही नाम पर

عَظَمَتِهِ رَحِيْمٌ يَا مَنْ هُوَ فِيْ حِكْمَتِهِ عَظِيْمٌ يَا مَنْ هُوَ فِيْ

भीक मांगता हुँ ऐ सबब पैदा करने वाले ऐ रग़बत देने वाले ऐ दिलों को फेरने वाले ऐ अज़ाब करने वाले ऐ तरबियत देने वाले ऐ डराने वाले

اِحْسَانِهٖ قَدِيْمٌ يَا مَنْ هُوَ بِمَنْ اَرَادَهٗ عَلِيْمٌ. ٩٧. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ

ऐ बचाने वाले ऐ याद करने वाले ऐ मुती करने वाले ऐ तबदील करने वाले। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों

اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَا مُسَبِّبُ يَا مُرَغِّبُ يَا مُقَلِّبُ يَا مُعَقِّبُ يَا

का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ९८. ऐ वह ख़ुदा जो इब्तेदा से आलिम है ऐ वह ख़ुदा जो वादा का

مُرَتِّبُ يَا مُخَوِّفُ يَا مُحَذِّرُ يَا مُذَكِّرُ يَا مُسَخِّرُ يَا مُغَيِّرُ. ٩٨. يَا

सच्चा है ऐ वह ख़ुदा जिसकी मेहरबानी ज़ाहिर जै ऐ वह ख़ुदा कि मेहरबान जिसका ग़ालिब है ऐ वह ख़ुदा कि किताब जिसकी मुहकम है ऐ वह

مَنْ عِلْمُهٗ سَابِقٌ يَا مَنْ وَعْدُهٗ صَادِقٌ يَا مَنْ لُطْفُهٗ ظَاهِرٌ يَا

ख़ुदा कि जिसका हुक्म हो के रहता है ऐ वह ख़ुदा कि जिसका क़ुरआन मजीद बुज़ुर्ग है ऐ वह ख़ुदा कि बादशाही जिसकी क़दीम है ऐ वह ख़ुदा

مَنْ اَمْرُهٗ غَالِبٌ يَا مَنْ كِتَابُهٗ مُحْكَمٌ يَا مَنْ قَضَآءُهٗ كَآئِنٌ يَا

कि फ़ज़्ल जिसका आम है ऐ वह ख़ुदा कि अर्श जिसका अज़ीम है। ऐ वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का

مَنْ قُرْاٰنُهٗ مَجِيْدٌ يَا مَنْ مُلْكُهٗ قَدِيْمٌ يَا مَنْ فَضْلُهٗ عَمِيْمٌ يَا

फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। ९९. ऐ वह ख़ुदा कि जिसको कोई चीज़ सुनना मशगुल नहीं करता ऐ वह

مَنْ عَرْشُهٗ عَظِيْمٌ. ٩٩. يَا مَنْ لَّا يَشْغَلُهٗ سَمْعٌ عَنْ سَمْعٍ يَا مَنْ

ख़ुदा कि जिसको ऐ काम दुसरे से बाज़ नहीं रखता ऐ वह ख़ुदा कि जिसको ऐक क़ौल दुसरे कौल से ग़ाफिल नहीं रखता ऐ वह ख़ुदा कि जिसको

لَّا يَمْنَعُهٗ فِعْلٌ عَنْ فِعْلٍ يَا مَنْ لَّا يُلْهِيْهِ قَوْلٌ عَنْ قَوْلٍ يَا

एक सवाल दुसरे सवाल से नहीं भुलाता ऐ वह ख़ुदा कि जिस को एक चीज़ दुसरी चीज़ के देखने ने माने नहीं होती ऐ वह ख़ुदा कि जिसको

مَنْ لَّا يُغَلِّطُهٗ سُؤَالٌ عَنْ سُؤَالٍ يَا مَنْ لَّا يَحْجُبُهٗ شَيْءٌ عَنْ

रोने वालों की गिरया व जारी आज़िज़ नहीं करती ऐ वह ख़ुदा कि जो दोस्तों की मुराद का इंतेहा है ऐ वह ख़ुदा कि जो अरिफों की हिम्मतों का

شَيْءٍ يَا مَنْ لَّا يُبْرِمُهٗ اِلْحَاحُ الْمُلِحِّيْنَ يَا مَنْ هُوَ غَايَةُ مُرَادِ

मक़सूद है ऐ वह ख़ुदा कि जो अपने चाहने वालों की चाहत का मरकज़ है ऐ वह ख़ुदा कि जिससे आलमीन की कोई चीज़ पोशीदा नहीं। ऐ

الْمُرِيْدِيْنَ يَا مَنْ هُوَ مُنْتَهٰى هِمَمِ الْعَارِفِيْنَ يَا مَنْ هُوَ

वह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं तु पाक है और फरयाद रसों का फरयाद रस है। नजात दे हमको दोज़ख की आग से ऐ पालने वाले। १००.

مُنْتَهٰى طَلَبِ الطَّالِبِيْنَ يَا مَنْ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ ذَرَّةٌ فِي

ऐ वह बुर्दबार जो जल्दी नहीं करता ऐ वह साहिबे बख़शिश जो बुखल नहीं करता ऐ वह सच्चे जो वादा ख़िलाफी नहीं करता ऐ वह सच्चे जो

الْعَالَمِيْنَ. ۱۰۰. يَا حَلِيْمًا لَا يَعْجَلُ يَا جَوَادًا لَا يَبْخَلُ يَا صَادِقًا

वादा ख़िलाफी नहीं करता ऐ वह बख़शने वाले जो मलाल नहीं रखता ऐ वह ज़बरदस्त जो मग़लूब नहीं होता ऐ वह बुज़ुर्ग जो सिफत में नहीं

لَا يُخْلِفُ يَا وَهَّابًا لَا يَمَلُّ يَا قَاهِرًا لَا يُغْلَبُ يَا عَظِيْمًا لَا

आ सकता ऐ वह आदिल जो ज़ुल्म नहीं करता ऐ वह तवंगर जो मोहताज नहीं होता ऐ वह बुज़ुर्ग जो छोटा नहीं होता ऐ वह निगहबान जो

يُوْصَفُ يَا عَدْلًا لَا يَحِيْفُ يَا غَنِيًّا لَا يَفْتَقِرُ يَا كَبِيْرًا لَا

ग़ाफ़िल नहीं होता पाक है तू ऐ वह ख़ुदा कि जिसके सिवा कोई खुदा नहीं फ़रयाद है फ़रयाद है हम सबको अज़ाबे दोज़ख से नजात से ऐ पालने

يَصْغُرُ يَا حَافِظًا لَّا يَغْفُلُ.

वाले! ऐ पालनहार।

दुआ जौशने सग़ीर

यह दुआ मोअतबर किताबों में जौशने कबीर से ज़्यादा मुफस्सल शरह के साथ नक्ल की गई है। कफअमी ने बलदुल अमीन के हाशिए पर लिखा है के यह दुआ इन्तेहाई रफीउश शान और अज़ीम मंज़ेलत है। जब बनी अब्बास के बादशाह मूसा हादी ने इमाम मूसा काज़म (अ.स.) को कत्ल करने के इरादे से बुलवाया तो आपने इस दुआ की तिलावत की और पैगंबरे इस्लाम को ख्वाब में देखा। के आप कह रहे थे के तुम मुतमईन रहो परवरदिगार तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर देगा। यह दुआ सय्यद बिन ताऊस की मोहिज्जुद दावात में भी नक्ल की गई है। अगरचे दोनों के नुस्खों में थोड़ा फर्क है। हम बलदुल अमीन कफअमी से नक्ल कर रहे हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اِلٰهِيْ كَمْ مِنْ عَدُوٍّ انْتَضٰى عَلَيَّ سَيْفَ

ख़ुदा के नाम से जो रहमान व रहीम है। ख़ुदाया मेरे कितने ही दुश्मन हैं जिनहोंने अदावत की तलवार को खीच

عَدَاوَتِهِ وَ شَحَذَ لِيْ ظُبَةَ مُدْيَتِهِ وَ اَرْهَفَ لِيْ شَبَا حَدِّهِ وَ دَافَ لِيْ

लिया है। और छुरी की धार को तेज़ कर लिया है। तीर की नोक तेज़ निकाल ली है और क़त्ल का जहेर तय्यार

قَوَاتِلَ سُمُوْمِهِ وَ سَدَّدَ نَحْوِيْ صَوَائِبَ سِهَامِهِ وَ لَمْ تَنَمْ عَنِّيْ عَيْنُ

कर लिया है। अपने तीरों का रूख मेरी तरफ़ सीधा कर दिया है। और उनकी निगेगबानी की आँख सोती नही

حِرَاسَتِهِ وَ اَضْمَرَ اَنْ يَسُوْمَنِيَ الْمَكْرُوْهَ وَ يُجَرِّعَنِيْ ذُعَافَ مَرَارَتِهِ

है। और उनके दिल का मनशा ये है के मुझे हर बुराई मे मुबतिला करदें और हर कड़वा घूंट पिला दें। लेकिन

فَنَظَرْتَ إِلٰى ضَعْفِي عَنِ احْتِمَالِ الْفَوَادِحِ وَ عَجْزِي عَنِ الْإِنْتِصَارِ

जब तूने देखा के मै सख़्तियो को बरदाश्त करने मे कमज़ोर हूँ। और इरादा जंग रखने वालों से बदला लेने से

مِمَّنْ قَصَدَنِي بِمُحَارَبَتِهِ وَ وَحْدَتِي فِي كَثِيرٍ مَنْ نَاوَانِي وَ إِرْصَادِهِمْ

आजिज़ हूँ। और दुश्मनों के नरग़े मे अकेला हूँ। और उनके बारे वो तय्यारी नही कर सकता जो उनहोंने मेरे

لِي فِيمَا لَمْ أُعْمِلْ فِيهِ فِكْرِي فِي الْإِرْصَادِ لَهُمْ بِمِثْلِهِ فَأَيَّدْتَنِي

बारे मे कर ली है। तो तूने अपनी ताक़त से मेरा साथ दिया। और अपनी मदद से मेरी कमर को मज़बूत बना

بِقُوَّتِكَ وَ شَدَدْتَ أَزْرِي بِنَصْرِكَ وَ فَلَلْتَ لِي شَبَا حَدِّهِ وَ خَذَلْتَهُ

दिया। दुश्मनों की धार को कुंद कर दिया। और उनको साज़ो सामान के बा वजूद रूसवा कर दिया। मेरे पाओं

بَعْدَ جَمْعِ عَدِيدِهِ وَ حَشْدِهِ وَ أَعْلَيْتَ كَعْبِي عَلَيْهِ وَ وَجَّهْتَ مَا سَدَّدَ

को उनसे बुलंद कर दिया। और जिन मक्कारियों का रूख़ उनहोने मेरी तरफ़ कर दिया था। उन्हें उन्ही की तरफ़

إِلَيَّ مِنْ مَكَايِدِهِ إِلَيْهِ وَ رَدَدْتَهُ عَلَيْهِ وَ لَمْ يَشْفِ غَلِيلَهُ وَ لَمْ تَبْرُدْ

यूँ पलटा दिया के वो न अपनी प्यास बुझा सके न अपने ग़ैज व ग़ज़ब की गरमी को सर्द बना सके। ग़ुस्से से

حَرَارَاتُ غَيْظِهِ وَ قَدْ عَضَّ عَلَيَّ أَنَامِلَهُ وَ أَدْبَرَ مُوَلِّيًا قَدْ أَخْفَقَتْ

अपनी उगलियों को काटते रहे। और इस आलम मे मुँह फेर कर चल दिए के उनके लश्कर मधोश रह गए।

سَرَايَاهُ فَلَكَ الْحَمْدُ يَا رَبِّ مِنْ مُقْتَدِرٍ لَا يُغْلَبُ وَ ذِي أَنَاةٍ لَا يَعْجَلُ

लेहाजा तेरा शुक्र है। ऐ परवरदिगार जो ऐसा क़ादिर है। के मग़लूब नही होता है। और ऐसा बुर्दबार है। के जल्दी

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ آلِ مُحَمَّدٍ وَ اجْعَلْنِيْ لِاَنْعُمِكَ مِنَ الشَّاكِرِيْنَ وَ

नही करता है। मु०हम्मद व आले मु०हम्मद पर रहमत नाज़िल फरमा। और हमे अपनी नेमतों के शुक्रगुज़ारों

لِآلَائِكَ مِنَ الذَّاكِرِيْنَ اِلٰهِيْ وَ كَمْ مِنْ بَاغٍ بَغَانِيْ بِمَكَايِدِهٖ وَ نَصَبَ

और एसानात के याद रखने वालों मे क़रार देदे। ख़ुदाया कितने ही बाग़ी हैं जिन्होंने मक्कारी से मुझ पर ज़ुल्म

لِيْ اَشْرَاكَ مَصَايِدِهٖ وَ وَكَّلَ بِيْ تَفَقُّدَ رِعَايَتِهٖ وَ اَضْبَاَ اِلَيَّ اِضْبَاءَ

किया और अपने शिकार के जाल फैला दिए और मुसलसल मेरे हालात की निदरानी करते रहे। और मेरी

السَّبُعِ لِطَرِيْدَتِهٖ انْتِظَارًا لِانْتِهَازِ فُرْصَتِهٖ وَ هُوَ يُظْهِرُ لِيْ بَشَاشَةَ

तरफ़ रूख़ कर के इस तरह सिमट कर बैठे जैसे दरिंदा अपने शिकार के लिए बैठता है और मौक़े का इंतेजार

الْمَلَقِ وَ يَبْسُطُ لِيْ وَجْهًا غَيْرَ طَلِقٍ فَلَمَّا رَاَيْتَ دَغَلَ سَرِيْرَتِهٖ وَ

करता रहता है। फिर उसके बाद भी वो खुश आमादि मसर्रत का इज़्हार कर रहे थे। और कुशादा पेशानी का

قُبْحَ مَا انْطَوٰى عَلَيْهِ لِشَرِيْكِهٖ فِيْ مِلَّتِهٖ وَ اَصْبَحَ مُجْلِبًا اِلَيَّ فِيْ بَغْيِهٖ

मुज़ाहेरा कर रहे थे। लेकिन जब तूने देखा ये अंदर से मक्कारी कर रहे हैं। और अपने शरीके मज़हब के लिए

اَرْكَسْتَهٗ لِاُمِّ رَاْسِهٖ وَ اَتَيْتَ بُنْيَانَهٗ مِنْ اَسَاسِهٖ فَصَرَعْتَهٗ فِيْ

भी बुरे जज़बात छुपाए हुए हैं। और ज़ुलम के लिए ताक़त जमा कर रहे हैं। तो तूने उन्हें सर के बल झुका दिया

زُبْيَتِهٖ وَ اَرْدَيْتَهٗ فِيْ مَهْوٰى حُفْرَتِهٖ وَ جَعَلْتَ خَدَّهٗ طَبَقًا لِتُرَابِ

और उनकी बुनियादों को जड़ से उखाड़ फेक दिया। उनको उनही की कमीनगाह ने पछाड़ दिया और उनही के

رِجْلِهٖ وَ شَغَلْتَهٗ فِیْ بَدَنِهٖ وَ رِزْقِهٖ وَ رَمَيْتَهٗ بِحَجَرِهٖ وَ خَنَقْتَهٗ بِوَتَرِهٖ وَ

खोदे हुए गढ़े मे गिरा दिया। जहाँ रूख़ सारो पर पैरों की ख़ाक जम गई। और उनहें ऐसी बीमारी और फ़कीरी

ذَكَّيْتَهٗ بِمَشَاقِصِهٖ وَ كَبَبْتَهٗ لِمِنْخَرِهٖ وَ رَدَدْتَ كَيْدَهٗ فِیْ نَحْرِهٖ وَ

ने मुबतिला कर दिया के उनको उनही के पत्थर का निशाना बना दिया। और उनही के रस्सी का फंदा गले मे

وَثَّقْتَهٗ بِنَدَامَتِهٖ وَ فَثَأْتَهٗ بِحَسْرَتِهٖ فَاسْتَخْذَاَ وَ اسْتَخْذَلَ وَ

ड़ाल दिया। उनही के तीरों से मारा और नाक के बल गिरा दिया। उनके मकर को उनही की गर्दन मे ड़ाल

تَضَائَلَ بَعْدَ نَخْوَتِهٖ وَ انْقَمَعَ بَعْدَ اسْتِطَالَتِهٖ ذَلِيْلًا مَأْسُوْرًا فِیْ

गिया। और उनहें निदामत मे गिरफ़तार और हसरत मे मुबतिला कर दिया। उसके बाद वो अपनी निख़वत के

رِبْقِ حَبَائِلِهِ الَّتِیْ كَانَ يُؤَمِّلُ اَنْ يَرَانِیْ فِيْهَا يَوْمَ سَطْوَتِهٖ وَ قَدْ

बवुजूद कमज़ोर हो गए और फैल जाने के बाद भी सुकड़ गए। ज़िल्लत के साथ उसी रस्सी मे गिरफ़तार हो गए

كِدْتُ يَارَبِّ لَوْلَا رَحْمَتُكَ اَنْ يَحُلَّ بِیْ مَا حَلَّ بِسَاحَتِهٖ فَلَكَ الْحَمْدُ

जिसमे मुझे गिरफ़तार देखना चाहते थे। और अगर तेरी रहमत न होती तो क़रीब था के मै भी उन्ही मसाएब मे

يَارَبِّ مِنْ مُقْتَدِرٍ لَا يُغْلَبُ وَ ذِیْ اَنَاةٍ لَا تَعْجَلُ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ

मुबतिला हो जाता। अब तेरा शुक्र है ऐ परवरदिगार के तू ऐसा क़ुदरतवाला है जो मग़लूब नही होता है। और

آلِ مُحَمَّدٍ وَ اجْعَلْنِیْ لِنَعْمَائِكَ مِنَ الشَّاكِرِيْنَ وَ لِآلَائِكَ مِنَ

ऐसा बुर्दबार है के जल्दी नही करता है। ख़ुदाया मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़िल फरमा और मुझे

الذَّاكِرِيْنَ اِلٰهِیْ وَكَمْ مِنْ حَاسِدٍ شَرِقَ بِحَسَدِهٖ وَعَدُوٍّ شَجِیَ بِغَيْظِهٖ

अपनी नेमत के शुक्र गुज़ारों और अपने एहसानो को याद रखने वालों मे क़रार देदे। ख़ुदाया कितने ही हासिद

وَسَلَقَنِیْ بِحَدِّ لِسَانِهٖ وَوَخَزَنِیْ بِمُوْقِ عَيْنِهٖ وَجَعَلَنِیْ غَرَضاً لِمَرَامِيْهِ

हैं। जिनका हसद उनके ही गले मे पड़ गया। और कितने ही दुश्मन हैं। जो अपने ही ग़ैज व ग़ज़ब मे अपनी

وَقَلَّدَنِیْ خِلَالًا لَمْ تَزَلْ فِيْهِ فَنَادَيْتُكَ يَارَبِّ مُسْتَجِيْرًا بِكَ وَاثِقًا

ज़बान की तेज़ी से मुझे तकलीफ़ पहुचाई और अपने आखों के किनारे से मेरी तरफ़ ग़लत इशारे किए। मुझे

بِسُرْعَةِ إِجَابَتِكَ مُتَوَكِّلًا عَلٰى مَا لَمْ اَزَلْ اَتَعَرَّفُهٗ مِنْ حُسْنِ

तीरोंका निशाना बनाया और मेरे ही गले मे अपनी बुरईयों का हार ड़ाल दिया। ऐसे वक़्त मे ऐ परवरदिगार मैने

دِفَاعِكَ عَالِمًا اَنَّهٗ لَا يُضْطَهَدُ مَنْ آوٰى اِلٰى ظِلِّ كَنَفِكَ وَلَنْ تَقْرَعَ

तुझे पनाह के लिए पुकारा इस एतेमाद के साथ तू फ़ैरन सुन लेगा। और मै तेरे उस दिफ़ा पर भरोसा किए हुए

الْحَوَادِثُ مَنْ لَجَاَ اِلٰى مَعْقِلِ الْاِنْتِصَارِ بِكَ فَحَصَّنْتَنِیْ مِنْ بَاْسِهٖ

था जो बराबर देखता रहा। और मुझे मालूम था के जो तेरी मेहेरबानी के साए मे आजाएगा वो मग़लूब नही हो

بِقُدْرَتِكَ فَلَكَ الْحَمْدُ يَا رَبِّ مِنْ مُقْتَدِرٍ لَا يُغْلَبُ وَ ذِیْ اَنَاةٍ لَا

सकता। और जिसे तेरी मदद की पनाहगाह मिल जाए उसे हवादिस खड़खड़ा नही सकते तूने अपनी क़ुदरत के

يَعْجَلُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَ اجْعَلْنِیْ لِنَعْمَائِكَ مِنَ

ज़रिए मुझे दुश्मन के शर से बचा लिया। लेहाज़ा ऐ मालिक तेरी हम्द है के तू वो साहेबे क़ुदरत है जो मग़लूब

الشَّاكِرِيْنَ وَ لِآلَائِكَ مِنَ الذَّاكِرِيْنَ اِلٰهِيْ وَ كَمْ مِنْ سَحَائِبِ

नही होता और वो हलीम है जो उजलत नही करता है। मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल कर। और

مَكْرُوْهٍ جَلَّيْتَهَا وَسَمَاءِ نِعْمَةٍ مَطَرْتَهَا وَجَدَاوِلِ كَرَامَةٍ اَجْرَيْتَهَا

मुझे अपनी नेमतों के शुक्र अदा करने वाले और अपनी रहमतों के ज़ाकिरीनमे शुमार करले। ख़ुदाया कितनी

وَ اَعْيُنِ اَحْدَاثٍ طَمَسْتَهَا وَ نَاشِئَةِ رَحْمَةٍ نَشَرْتَهَا وَ جُنَّةِ عَافِيَةٍ

ही बुराईयों के बादल थे। जिन्हे तूने साफ़ कर दिया और कितने ही नेमतों के आसमान थे, जिनहे तूने बरसा

اَلْبَسْتَهَا وَ غَوَامِرِ كُرُبَاتٍ كَشَفْتَهَا وَ اُمُوْرٍ جَارِيَةٍ قَدَّرْتَهَا لَمْ

दिया। कितनी ही करामतों की नहरे थीं जिनहे जारी कर दिया और कितने ही हवादिस के चश्मे थे जिनका मूह

تُعْجِزْكَ اِذْ طَلَبْتَهَا وَلَمْ تَمْتَنِعْ مِنْكَ اِذْ اَرَدْتَهَا فَلَكَ الْحَمْدُ يَا رَبِّ

बंद कर दिया। कितनी ही ताज़ा रहमतें फैला दीं कितने ही आफ़ियत के लिबास पहना दिए। कितने ही शदीद

مِنْ مُقْتَدِرٍ لَا يُغْلَبُ وَ ذِيْ اَنَاةٍ لَا يَعْجَلُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ

रंज व ग़म को दूर कर दिए और कितने ही ज़ारी रहने वाले उमूर मुक़द्दर कर दिए। जिन्हे तू तलब करे तो तेरे

وَ اجْعَلْنِيْ لِنَعْمَائِكَ مِنَ الشَّاكِرِيْنَ وَ لِآلَائِكَ مِنَ الذَّاكِرِيْنَ.

हाथ से निकल नही सकते है। और तू बुलाए तो इन्कार नही कर सकते हैं। लेहाज़ा तेरा शुक्र है ऐ क़ुदरत रखने

اِلٰهِيْ وَ كَمْ مِنْ ظَنٍّ حَسَنٍ حَقَّقْتَ وَمِنْ كَسْرِ اِمْلَاقٍ جَبَرْتَ وَمِنْ

वाले परवरदिगार जो मग़लूब नही होता। और साहेबे इल्म मालिक जो जल्दी नही करतौ। मुहम्मदो आले

مَسْكَنَةٍ فَادِحَةٍ حَوَّلْتَ وَمِنْ صَرْعَةٍ مُهْلِكَةٍ نَعَشْتَ وَمِنْ مَشَقَّةٍ

मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़रमा। और हमे अपनी नेमतों के शाकिरीन और अपने एहसानात के ज़ाकिरीन मे

اَرَحْتَ لَا تُسْاَلُ عَمَّا تَفْعَلُ وَ هُمْ يُسْاَلُوْنَ وَ لَا يَنْقُصُكَ مَا

क़रार देदे। ख़ुदाया कितने ही हुस्ने जन थे जिनहे तूने सच्छ कर दिखाया। और कितने ही ग़ुरबत के तोड़ थे जिनहे

اَنْفَقْتَ وَلَقَدْ سُئِلْتَ فَاَعْطَيْتَ وَلَمْ تُسْاَلْ فَابْتَدَاْتَ وَاسْتُمِيْحَ

तूने जोड़ दिया है। ख़तरनाक ग़ुरबत को बदल दिया है। और हलाकत ख़ेज ख़तरों से बचा लिया है। और

بَابُ فَضْلِكَ فَمَا اَكْدَيْتَ اَبَيْتَ اِلَّا اِنْعَامًا وَامْتِنَانًا وَاِلَّا تَطَوُّلًا يَا

तकलीफ़ों से इतमेनान दे दिया है। तेरे अमल के बारे मे कोई पूछताच नही हो सकती है और बाक़ी सब से

رَبِّ وَاِحْسَانًا وَاَبَيْتُ يَا رَبِّ اِلَّا انْتِهَاكًا لِحُرُمَاتِكَ وَاجْتِرَاءً عَلٰى

सवाल किया जाएगा तेरी अता से तेरे ख़जाने मे कोई कमी नही होती है। और इसी लिए जब तुझसे माँगा गया

مَعَاصِيْكَ وَتَعَدِّيًا لِحُدُوْدِكَ وَغَفْلَةً عَنْ وَعِيْدِكَ وَطَاعَةً لِعَدُوِّيْ

तो तूने दे दिया। और जब नही माँगा गया तो ख़ुद से अता कर दिया। तेरे फ़ज़्लो करम के दरवाज़े पर आवाज़

وَعَدُوِّكَ لَمْ يَمْنَعْكَ يَا اِلٰهِيْ وَنَاصِرِيْ اِخْلَالِيْ بِالشُّكْرِ عَنْ اِتْمَامِ

दी गई तो तूने बुख़्ल नही किया। तूने कभी इनाम एहसान करम और फ़ज़्ल के अलावा कुछ नही किया। और

اِحْسَانِكَ وَلَا حَجَزَنِيْ ذٰلِكَ عَنِ ارْتِكَابِ مَسَاخِطِكَ. اَللّٰهُمَّ وَهٰذَا

मुझ नालाएक ने इसके अलावा और कुछ न किया के तेरे मुहर्रमात की पासदारी न की। मासियतों पर जुर्रत

مَقَامُ عَبْدٍ ذَلِيْلٍ اعْتَرَفَ لَكَ بِالتَّوْحِيْدِ وَ اَقَرَّ عَلٰى نَفْسِهٖ

पैदा करली। हुदूद से तजाउज़ किया। अज़ाब से गफ़लत बरती और अपने और तेरे मुशतरिक दुश्मन की

بِالتَّقْصِيْرِ فِيْ اَدَاءِ حَقِّكَ وَ شَهِدَ لَكَ بِسُبُوْغِ نِعْمَتِكَ عَلَيْهِ وَ جَمِيْلِ

इताअत करता रहा। मगर उसके बाद भी ऐ मेरे ख़ुदा और मददगार मेरी नाशुक्री ने भी तुझे एहसानात मुकम्मल

عَادَتِكَ عِنْدَهٗ وَ اِحْسَانِكَ اِلَيْهِ فَهَبْ لِيْ يَا اِلٰهِيْ وَ سَيِّدِيْ مِنْ

करने से नही रोका और न ये एहसान मुझे गुनाहों के इरतिकाब से रोक सका। ख़ुदाया तेरा सामने वो बंदा ए

فَضْلِكَ مَا اُرِيْدُهٗ سَبَبًا اِلٰى رَحْمَتِكَ وَ اَتَّخِذُهٗ سُلَّمًا اَعْرُجُ فِيْهِ اِلٰى

ज़लील खड़ा है जो तेरी तौहीद को भी मानता है और तेरे हुक़ूक़ की अदएगी मे तक़सीर का भी इक़रार कर रहा

مَرْضَاتِكَ وَ آمَنُ بِهٖ مِنْ سَخَطِكَ بِعِزَّتِكَ وَ طَوْلِكَ وَ بِحَقِّ نَبِيِّكَ

है। और ख़ुद इस बात का गवाग है के तेरी नमतें उस पर मुकम्मल हैं। और तेरे एहसान की आदत मुसलसल

مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ آلِهٖ فَلَكَ الْحَمْدُ يَا رَبِّ مِنْ مُقْتَدِرٍ لَا يُغْلَبُ

बाक़ी है। लेहाज़ा ऐ मेरे मालिक व परवरदिगार। मुझे अपने फ़ज़्ल से वो सब कुछ देदे जो मै तेरी रहमत की

وَ ذِيْ اَنَاةٍ لَا يَعْجَلُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَ اجْعَلْنِيْ لِنَعْمَائِكَ

राह मे चाहता हूँ। और जिसको सी▯ढ़ी बना कर मै तेरी मर्ज़ा तक पहुच जाऊँ और तरे अजाब से महफ़ूज हो

مِنَ الشَّاكِرِيْنَ وَ لِاٰلَائِكَ مِنَ الذَّاكِرِيْنَ. اِلٰهِيْ وَ كَمْ مِنْ عَبْدٍ

जाऊँ और अपने इज़्ज़त व करम और अपने पैगंबर मुहम्मद (स) के हक़ के तुफ़ैल मे। और सारी हम्द तेरे ही

اَمْسٰى وَ اَصْبَحَ فِي كَرْبِ الْمَوْتِ وَ حَشْرَجَةِ الصَّدْرِ وَ النَّظَرِ اِلٰى مَا

लिए है। ऐ वो ख़ुदाए का०दर जो मग़लूब नही होता है। और वो मालिके हलीम जो उजलत नही करता है।

تَقْشَعِرُّ مِنْهُ الْجُلُوْدُ وَ تَفْزَعُ لَهُ الْقُلُوْبُ وَ اَنَا فِيْ عَافِيَةٍ مِنْ ذٰلِكَ

मुहम्मदो व आले मुहम्मद (स) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे अपनी नेमत के शुक्र करनेवालों मे और

كُلِّهٖ فَلَكَ الْحَمْدُ يَا رَبِّ مِنْ مُقْتَدِرٍ لَا يُغْلَبُ وَ ذِيْ اَنَاةٍ لَا يَعْجَلُ

अपने एहसानात को याद रखनेवालों मे क़रार देदे। ख़ुदाया तेरे कितने ही बंदे हैं जो सुबह व शाम मौत के कर्ब

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اجْعَلْنِيْ لِنَعْمَائِكَ مِنَ الشَّاكِرِيْنَ وَ

व जानकुनी के घेरे मे मुबतिला हैं। और वो देख रहे हैं जिस से रोंगटे खड़े हो जाते हैं और दिल लरज जाते हैं।

لِاٰلَائِكَ مِنَ الذَّاكِرِيْنَ اِلٰهِيْ وَ كَمْ مِنْ عَبْدٍ اَمْسٰى وَ اَصْبَحَ سَقِيْمًا

और मै उन तमाम बातों की तरफ़ से मुकम्मल आफ़ियत मे हूँ। लेहाज़ा तेरा शुक्र है ऐ ख़ुदा ए का०दिर जो

مُوْجَعًا فِيْ اَنَّةٍ وَ عَوِيْلٍ يَتَقَلَّبُ فِيْ غَمِّهٖ لَا يَجِدُ مَحِيْصًا وَ لَا يُسِيْغُ

मग़लूब नही होता है। और ऐ मालिके हलीम जो जलदी नही करता है। मु०हम्मद व आले मु०हम्मद पर रहमत

طَعَامًا وَ لَا شَرَابًا وَ اَنَا فِيْ صِحَّةٍ مِنَ الْبَدَنِ وَ سَلَامَةٍ مِنَ الْعَيْشِ

नाज़ल फ़रमा और मुझे अपनी नेमत के शुकर करने वालों मे और अपने एहसानात को याद रखने वालों मे

كُلُّ ذٰلِكَ مِنْكَ فَلَكَ الْحَمْدُ يَا رَبِّ مِنْ مُقْتَدِرٍ لَا يُغْلَبُ وَ ذِيْ اَنَاةٍ

क़रार देदे। खुदाया तेरे कितनेही बंदे हैं जो बीमारियों मे मुब्तिला होकर नाला व फरयाद कर रहे हैं। जो ग़म मे

لَا يَعْجَلُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَ اجْعَلْنِيْ لِنَعْمَائِكَ مِنَ

करवटें बदल रहे हैं और कोई छुटकारा नही पा रहे हैं। न खाना अच्छा लगता है और न पानी। और मै तेरे करम

الشَّاكِرِيْنَ وَلِآلَائِكَ مِنَ الذَّاكِرِيْنَ. اِلٰهِيْ وَ كَمْ مِنْ عَبْدٍ اَمْسٰى وَ

से बदन की सेहेत और ज़िन्दगी की सलामती मे हूँ। लेहाज़ा तेरा शुक्र है ऐ मालिके क़दीर के जो मग़लूब नही

اَصْبَحَ خَائِفًا مَرْعُوبًا مُشْفِقًا وَجِلًا هَارِبًا طَرِيْدًا مُنْحَجِزًا فِيْ

होता है। और ख़ुदाए हलीम जो उजलत नही करता है। मु०हम्मद और आले मुहम्म्द पर रहमत नाज़ल फ़रमा

مَضِيْقٍ وَ مَخْبَاَةٍ مِنَ الْمَخَابِئِ قَدْ ضَاقَتْ عَلَيْهِ الْاَرْضُ بِرُحْبِهَا لَا

और मुझे अपनी नेमतों के शुक्र करने वालों मे और अपने एहसानात को याद रखने वालों मे क़रार देदे। ख़ुदाया

يَجِدُ حِيْلَةً وَ لَا مَنْجٰى وَ لَا مَاْوٰى وَ اَنَا فِيْ اَمْنٍ وَ طُمَاْنِيْنَةٍ وَ عَافِيَةٍ

कितने ही बंदे हैं जो सुबहा व शाम ख़ाफ़ज़दा मरऊब लरजाँ मुब्तिलाए दहशत आवारा वतन नंगियों और गोशों

مِنْ ذٰلِكَ كُلِّهٖ فَلَكَ الْحَمْدُ يَا رَبِّ مِنْ مُقْتَدِرٍ لَا يُغْلَبُ وَ ذِيْ اَنَاةٍ لَا

मे ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। जहाँ जमीन वुसअतों समेत तंग हो गई है। और न कोई तदबीर है न पनाहगाह और

يَعْجَلُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَ اجْعَلْنِيْ لِنَعْمَائِكَ مِنَ

मंजिले नजात और न उन तमाम मुसीबतोंसे अम्न व आफ़ियत और सुकून व इतमिनान मे हूँ। लेहाज़ा तेरा शुक्र

الشَّاكِرِيْنَ وَ لِآلَائِكَ مِنَ الذَّاكِرِيْنَ. اِلٰهِيْ وَ سَيِّدِيْ وَ كَمْ مِنْ

है ऐ मालिके क०दीर के जो मग़लूब नही होता है। और ख़ुदाए हलीम जो उजलत नही करता है। मु०हम्मद और

عَبْدٍ اَمْسٰى وَ اَصْبَحَ مَغْلُوْلًا مُكَبَّلًا فِى الْحَدِيْدِ بِاَيْدِى الْعُدَاةِ لَا

आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़रमा और मुझे अपनी नेमतों के शुक्र करने वालों मे और अपने एहसानात

يَرْحَمُوْنَهٗ فَقِيْدًا مِنْ اَهْلِهٖ وَ وُلْدِهٖ مُنْقَطِعًا عَنْ اِخْوَانِهٖ وَ بَلَدِهٖ

को याद रखने वालों मे क़रार देदे। ख़ुदाया कितने ही बंदे हैं जिनकी सुबह व शाम जंजीरों और लोहे के तौको

يَتَوَقَّعُ كُلَّ سَاعَةٍ بِاَيِّ قِتْلَةٍ يُقْتَلُ وَ بِاَيِّ مُثْلَةٍ يُمَثَّلُ بِهٖ وَ اَنَا فِىْ

सलासिल मे दुश्मनों के हाथों गुज़र रही है। किसी को रहेम भी नही आता है। और अहलो अयाल से दूर भी

عَافِيَةٍ مِنْ ذٰلِكَ كُلِّهٖ فَلَكَ الْحَمْدُ يَا رَبِّ مِنْ مُقْتَدِرٍ لَا يُغْلَبُ وَ ذِىْ

हैं। और वतन व अहले वतन से जुदा भी हो गए हैं। हर समय ये इंतिज़ार है के किस तरह क़त्ल किया जाएगा

اَنَاةٍ لَا يَعْجَلُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اجْعَلْنِىْ لِنَعْمَائِكَ مِنَ

और कैसे शरीर के टुकड़े कर दिये जाएंगे। लेकिन मै उन तमाम बातों की तरफ़ से आफ़ियत मे हूँ। लेहाज़ा तेरा

الشَّاكِرِيْنَ وَ لِاٰلَائِكَ مِنَ الذَّاكِرِيْنَ. اِلٰهِىْ وَ كَمْ مِنْ عَبْدٍ اَمْسٰى وَ

शुक्र है ऐ मालिके क़दीर के जो मग़लूब नही होता है। और ख़ुदाए हलीम जो उजलत नही करता है। मु०हम्मद

اَصْبَحَ يُقَاسِى الْحَرْبَ وَ مُبَاشَرَةَ الْقِتَالِ بِنَفْسِهٖ قَدْ غَشِيَتْهُ

और आले मुहम्मद और आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़रमा और मुझे अपनी नेमतों के शुक्र करने वालों मे

الْاَعْدَاءُ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ بِالسُّيُوْفِ وَ الرِّمَاحِ وَ اٰلَةِ الْحَرْبِ يَتَقَعْقَعُ

और अपने एहसानात को याद रखने वालों मे क़रार देदे। ख़ुदाया तेरे कितने ही बंदे हैं जो सुबहा व शाम जंग व

فِي الْحَدِيْدِ قَدْ بَلَغَ مَجْهُوْدَهٗ لَا يَعْرِفُ حِيْلَةً وَّلَا يَجِدُ مَهْرَبًا قَدْ اُدْنِفَ

जदाल की तकलीफ़ों को झेल रहे हैं दुश्मनों ने चारों तरफ़ से तलवारों नैज़ों और आलाते जंग से घेर लिया है।

بِالْجِرَاحَاتِ اَوْ مُتَشَحِّطًا بِدَمِهٖ تَحْتَ السَّنَابِكِ وَالْاَرْجُلِ يَتَمَنّٰى

और आहनी लिबास मे भी परेशानहाल हैं। के इन्तेहाई कोशिश के बाद भी कोई बचने का तरीक़ा और भागने

شَرْبَةً مِنْ مَاءٍ اَوْ نَظْرَةً اِلٰى اَهْلِهٖ وَوُلْدِهٖ وَلَا يَقْدِرُ عَلَيْهَا وَاَنَا فِيْ

का रासता नही है। ज़ख़्मों से चूर हैं और घोड़ोंकी टापों के नीचे अपने ही ख़ून मे तड़प रहे हैं। आरज़ू है के एक

عَافِيَةٍ مِنْ ذٰلِكَ كُلِّهٖ فَلَكَ الْحَمْدُ يَا رَبِّ مِنْ مُقْتَدِرٍ لَا يُغْلَبُ وَذِيْ

घूट पानी मिल जाए या एक नज़र अपने अहलो अयाल को देख लें। मगर ये भी उनके इख़्तियार मे नही है।

اَنَاةٍ لَا يَعْجَلُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ وَاجْعَلْنِيْ لِنَعْمَائِكَ مِنَ

और मै उन तमाम बातों की तरफ़ से आफ़ियत मे हूँ। लेहाज़ा तेरी हम्द है ऐ मालिके क़दीर के जो मग़लूब नही

الشَّاكِرِيْنَ وَلِاٰلَائِكَ مِنَ الذَّاكِرِيْنَ. اِلٰهِيْ وَكَمْ مِنْ عَبْدٍ اَمْسٰى وَ

होता है। और ख़ुदाए हलीम जो उजलत नही करता है। मु०हम्मद और आले मुहम्द पर रहमत नाज़ल फ़रमा

اَصْبَحَ فِيْ ظُلُمَاتِ الْبِحَارِ وَعَوَاصِفِ الرِّيَاحِ وَالْاَهْوَالِ وَ

और मुझे अपनी नेमतों के शुक्र करने वालों मे और अपने एहसानात को याद रखने वालों मे क़रार देदे। ख़ुदाया

الْاَمْوَاجِ يَتَوَقَّعُ الْغَرَقَ وَالْهَلَاكَ لَا يَقْدِرُ عَلٰى حِيْلَةٍ اَوْ مُبْتَلًى

कितने ही बंदे हैं के जिनकी सुबह व शाम समंदर की तारीकियों हवाओं के तेज़ झक्कड़ों और हौलनाक मौजों

بِصَاعِقَةٍ اَوْ هَدْمٍ اَوْ حَرْقٍ اَوْ شَرْقٍ اَوْ خَسْفٍ اَوْ مَسْخٍ اَوْ قَذْفٍ وَ

के बीच गुज़र रही है। के हर समय ये उम्मीद रहती है के कब ग़र्क और हलाक हो जाएंगे और बचने की कोई

اَنَا فِيْ عَافِيَةٍ مِنْ ذٰلِكَ كُلِّهٖ فَلَكَ الْحَمْدُ يَا رَبِّ مِنْ مُقْتَدِرٍ لَا يُغْلَبُ

तदबीर नही है। या फिर बिजली के गिरने मकान के गिरने आग के लगने लुक़्मे के हलक़ मे फंस जाने, ज़मीन

وَ ذِيْ اَنَاةٍ لَا يَعْجَلُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اجْعَلْنِيْ لِنَعْمَائِكَ

के धंस जाने, सूरत के बिगड़ जाने और संगसार हो जाने के ख़तरात मे मुबतिला हैं। और मै उन सब की तरफ़

مِنَ الشَّاكِرِيْنَ وَ لِاٰلَائِكَ مِنَ الذَّاكِرِيْنَ. اِلٰهِيْ وَ كَمْ مِنْ عَبْدٍ

से आाफ़ियत मे हूँ। लेहाज़ा तेरा शुक्र है ऐ मालिके क़दीर के जो मग़लूब नही होता है। और ख़ुदाए हलीम जो

اَمْسٰى وَ اَصْبَحَ مُسَافِرًا شَاخِصًا عَنْ اَهْلِهٖ وَ وُلْدِهٖ مُتَحَيِّرًا فِي

उजलत नही करता है। मु०हम्मद और आले मुहम्म्द पर रहमत नाज़ल फ़रमा और मुझे अपनी नेमतों के शुक्र

الْمَفَاوِزِ تَائِهًا مَعَ الْوُحُوْشِ وَ الْبَهَائِمِ وَ الْهَوَامِّ وَحِيْدًا فَرِيْدًا لَا

करने वालों मे और अपने एहसानात को याद रखने वालों मे क़रार देदे। ख़ुदाया कितने ही बंदे हैं के जिनकी

يَعْرِفُ حِيْلَةً وَ لَا يَهْتَدِيْ سَبِيْلًا اَوْ مُتَاَذِّيًا بِبَرْدٍ اَوْ حَرٍّ اَوْ جُوْعٍ اَوْ

सुबह व शाम उस मुसाफ़रत मे होती है जिसमे अहले अयाल से दूर या सहराओं मे हैरान, जानवरों और दरिंदों

عَطَشٍ اَوْ عُرْيٍ اَوْ غَيْرِهٖ مِنَ الشَّدَائِدِ مِمَّا اَنَا مِنْهُ خِلْوٌ فِيْ عَافِيَةٍ

के दरमियान परेशान तनो तनहा रहते हैं। जहाँ न बचने का कोई रास्ता है और न रासता या सरदी व गरमी भूक

مِنْ ذٰلِكَ كُلِّهِ فَلَكَ الْحَمْدُ يَا رَبِّ مِنْ مُقْتَدِرٍ لَا يُغْلَبُ وَ ذِي اَنَاةٍ لَا

और उरयानी जैसे मसाएब में मुबतिला हैं जिनसे मे बिल्कुल ख़ाली और आफ़ियत मे हूँ। लेहाज़ा तेरा शुक्र है

يَعْجَلُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَ اجْعَلْنِيْ لِنَعْمَائِكَ مِنَ

ऐ मालिके क़दीर के जो मग़लूब नही होता है। और ख़ुदाए हलीम जो उजलत नही करता है। मु०हम्मद और

الشَّاكِرِيْنَ وَ لِآلَائِكَ مِنَ الذَّاكِرِيْنَ. اِلٰهِيْ وَ مَوْلَايَ وَ سَيِّدِيْ وَ

आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़रमा और मुझे अपनी नेमतों के शुक्र करने वालों मे और अपने एहसानात

كَمْ مِنْ عَبْدٍ اَمْسٰى وَ اَصْبَحَ فَقِيْرًا عَائِلًا عَارِيًا مُمْلِقًا مُخْفِقًا

को याद रखने वालों मे क़रार देदे। खुदाया कितने ही बंदे हैं के जिनकी सुबह व शाम फ़कीरी नादारी बरहैनगी

مَهْجُوْرًا جَائِعًا ظَمْآنَ يَنْتَظِرُ مَنْ يَعُوْدُ عَلَيْهِ بِفَضْلٍ اَوْ عَبْدٍ وَجِيْهٍ

मे गुज़रती है। जहाँ तंगीए माश से लरज़ते रहते हैं और हर एक की तरफ़ से नज़र अंदाज कर दिए जाते हैं। भूक

عِنْدَكَ هُوَ اَوْجَهُ مِنِّيْ عِنْدَكَ اَوْ اَشَدُّ عِبَادَةً لَكَ مَغْلُوْلًا مَقْهُوْرًا

पियास मे इस इंतिजार मे रहते हैं के कोई उन पर अहसान करदे। या ऐसे बंदे भी हैं के तेरे नज़दीक मुझसे ज़यादा

قَدْ حُمِّلَ ثِقْلًا مِنْ تَعَبِ الْعَنَاءِ وَ شِدَّةِ الْعُبُوْدِيَّةِ وَ كُلْفَةِ الرِّقِّ وَ

वजीह हैं और मुझसे ज़यादा इबादत गुज़ार हैं। लेकिन उनकी गरदनों मे तौक हैं और उनपर तंगदस्ती शिद्दते

ثِقْلِ الضَّرِيْبَةِ اَوْ مُبْتَلًى بِبَلَاءٍ شَدِيْدٍ لَا قِبَلَ لَهُ بِهِ اِلَّا بِمَنِّكَ

बंदगी ज़हमते गुलामी और टैक्स हा बोझ लदा हुआ है। या ऐसी बला मे मुब्तिला हैं जनिका सामना तेरे अहसान

عَلَيْهِ وَ اَنَا الْمَخْدُوْمُ الْمُنْعَمُ الْمُعَافَى الْمُكَرَّمُ فِىْ عَافِيَةٍ مِمَّا هُوَ

के बग़ैर नही हो सकता है। मगर मै तेरे करम से साहेबे नेमत साहेबे आफ़ियत मोहतरम और ख़ादिमोंका

فِيْهِ فَلَكَ الْحَمْدُ عَلٰى ذٰلِكَ كُلِّهٖ مِنْ مُقْتَدِرٍ لَا يُغْلَبُ وَ ذِىْ اَنَاةٍ لَا

मख़दूम हूँ। लेहाज़ा तेरा शुक्र है ऐ मालिके क़दीर के जो मग़लूब नही होता है। और ख़ुदाए हलीम जो उजलत

يَعْجَلُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَ اجْعَلْنِىْ لِنَعْمَائِكَ مِنَ

नही करता है। मु०हम्मद और आले मुहम्द पर रहमत नाज़ल फरमा और मुझे अपनी नेमतों के शुकर करने

الشَّاكِرِيْنَ وَ لِاٰلَائِكَ مِنَ الذَّاكِرِيْنَ. اِلٰهِىْ وَ سَيِّدِىْ وَ كَمْ مِنْ

वालों मे और अपने एहसानात को याद रखने वालों मे क़रार देदे। ख़ुदाया कितने ही बंदे हैं के जो सुबह व शाम

عَبْدٍ اَمْسٰى وَ اَصْبَحَ شَرِيْدًا طَرِيْدًا حَيْرَانًا مُتَحَيِّرًا جَائِعًا خَائِفًا

बीमारी और दर्द मे मुबतिला रहते हैं। बिस्तरे बीमारी पर लिबासे बीमारी मे दाहिने बाएं करवटें बदलते रहते हैं।

فِى الصَّحَارِىْ وَ الْبَرَارِىْ قَدْ اَحْرَقَهُ الْحَرُّ وَ الْبَرْدُ وَ هُوَ فِىْ ضُرٍّ مِنَ

न खाने का मज़ा मिलता है न पीने का। अपने नफ़्स को हसरत से देखते हैं लेकिन उसे फ़ायदा या हानि कुछ

الْعَيْشِ وَ ضَنْكٍ مِنَ الْحَيَاةِ وَ ذُلٍّ مِنَ الْمَقَامِ يَنْظُرُ اِلٰى نَفْسِهٖ

नही पहुँचा सकते हैं। और मै तेरे करम से इन तमाम बानों से महफ़ूज हूँ। लेहाज़ा तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही

حَسْرَةً لَا يَقْدِرُ لَهَا عَلٰى ضَرٍّ وَ لَا نَفْعٍ وَ اَنَا خِلْوٌ مِنْ ذٰلِكَ كُلِّهٖ بِجُوْدِكَ

है। तू क़ादिरे बेनियाज़ है, जो मग़लूब नही होता। और ख़ुदाए हलीम जो उजलत नही करता है। मु०हम्मद पर

وَ كَرَمِكَ فَلَكَ الْحَمْدُ يَا رَبِّ مِنْ مُقْتَدِرٍ لَا يُغْلَبُ وَ ذِى اَنَاةٍ لَا

रहमत नाज़ल फ़र्मा और मुझे अपनी नेमतों के शक्र करने वालों मे और अपने एहसानात को याद रखने वालों

يَعْجَلُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَ اجْعَلْنِىْ لِنَعْمَائِكَ مِنَ

मे क़रार देदे। और हमपर रहमत नाज़ल फ़र्मा ऐ सबसे ज़्यादा मेहेरबानी करने वाले। ऐ मेरे मौला व आका

الشَّاكِرِيْنَ وَ لِآلَائِكَ مِنَ الذَّاكِرِيْنَ. وَ ارْحَمْنِىْ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ

कितने ही बंदों की सुबह व शाम इस आलम मे होती है। के मौत का दिम क़रीब आ गया है। मलकुन मौत ने

الرَّاحِمِيْنَ. اِلٰهِىْ وَ سَيِّدِىْ وَ كَمْ مِنْ عَبْدٍ اَمْسٰى وَ اَصْبَحَ عَلِيْلًا

अपने घेरे मे ले लिया है। बीमार मौत की सख़तियों को झेल रहा है। कभी दाहिने देखता है कभी बाएं। दोस्त

مَرِيْضًا سَقِيْمًا مُدْنِفًا عَلٰى فُرُشِ الْعِلَّةِ وَفِىْ لِبَاسِهَا يَتَقَلَّبُ يَمِيْنًا

अहबाब रिश्तेदार सब पर हसरत से निगाह करता है मगर न बात करने की इजाज़त है और ख़िताब करने की।

وَ شِمَالًا لَا يَعْرِفُ شَيْئًا مِنْ لَذَّةِ الطَّعَامِ وَلَا مِنْ لَذَّةِ الشَّرَابِ

अपने ही नफ़्स को हसरत से देखता है। और कोई फ़ाएदा या नुक़सान नही पहुचा सकता है। और मै तेरे करम

يَنْظُرُ اِلٰى نَفْسِهٖ حَسْرَةً لَا يَسْتَطِيْعُ لَهَا ضَرًّا وَلَا نَفْعًا وَ اَنَا خِلْوٌ مِنْ

से इन तमाम बातों से महफ़ूज़ हूँ। लेहाज़ा तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही है। तू क़ादिरे बेनियाज़ है, जो मग़लूब नही

ذٰلِكَ كُلِّهٖ بِجُوْدِكَ وَ كَرَمِكَ فَلَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ مِنْ مُقْتَدِرٍ

होता। और ख़ुदाए हलीम जो उजलत नही करता है। मु०हम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और मुझे अपनी नेमतों

لَا يُغْلَبُ وَ ذِی اَنَاةٍ لَا يَعْجَلُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَ اجْعَلْنِیْ

के शुक्र करने वालों मे और अपने एहसानात को याद रखने वालों मे क़रार देदे। और हमपर रहमत नाज़िल

لَكَ مِنَ الْعَابِدِيْنَ وَ لِنَعْمَائِكَ مِنَ الشَّاكِرِيْنَ وَ لِآلَائِكَ مِنَ

फ़र्मा ऐ सबसे ज़्यादा मेहेरबानी करने वाले। ऐ मेरे मौला व आका कितने ही बंदों ने सुबह व शाम इस आलम

الذَّاكِرِيْنَ وَ ارْحَمْنِیْ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ. مَوْلَایَ وَ سَيِّدِیْ

मे की कि गोया उनकी मौत के दिन क़रीब आ गये और उनहें मौत के फ़रिश्ते ने घेर लिया है और वह मददगारों

وَ كَمْ مِنْ عَبْدٍ اَمْسٰى وَ اَصْبَحَ وَ قَدْ دَنَا يَوْمُهٗ مِنْ حَتْفِهٖ وَ اَحْدَقَ بِهٖ

मे हैं, जाँकनी और मौत की तकलीफ़ों से कभी दाहनी तरफ़ देखते हैं और कभी बायें तरफ़, और अपने दोस्तों,

مَلَكُ الْمَوْتِ فِیْ اَعْوَانِهٖ يُعَالِجُ سَكَرَاتِ الْمَوْتِ وَ حِيَاضَهٗ تَدُوْرُ

मोहब्बतों, जान पहचान वालों और सच्चे मुहब्बत करने वालों की तरफ़ नज़र करता है। उनको बात करने से

عَيْنَاهُ يَمِيْنًا وَ شِمَالًا يَنْظُرُ اِلٰى اَحِبَّائِهٖ وَ اَوِدَّائِهٖ وَ اَخِلَّائِهٖ قَدْ

रोक दिया गया है और कलाम करने से बाज़ रखा गया है, वह अपने नफ़्स पर हसरत व यास से निगाह करते

مُنِعَ مِنَ الْكَلَامِ وَ حُجِبَ عَنِ الْخِطَابِ يَنْظُرُ اِلٰى نَفْسِهٖ حَسْرَةً لَا

हैं, और नफ़ा रसानी पर क़ुदरत नही रखते और न ज़रर से बच सकते हैं मगर तेरे करम व जूद के सदक़े मे उन

يَسْتَطِيْعُ لَهَا ضَرًّا وَ لَا نَفْعًا وَ اَنَا خِلْوٌ مِنْ ذٰلِكَ كُلِّهٖ بِجُوْدِكَ وَ

तमाम बातों से मै महफ़ूज़ हूँ। पस ऐ ख़ुदावन्दे आलम तू लाएके हम्द व सताएश है और ऐसा क़ादिरे मुतलक

كَرَمِكَ فَلَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ مِنْ مُقْتَدِرٍ لَا يُغْلَبُ وَ ذِيْ اَنَاةٍ لَا

है कि कभी मग़लूब नही हुआ और ऐसा साहिबे तहम्मुल है कि कभी जल्दी नही की, ऐ ख़ुदा मुहम्मद (स) और

يَعْجَلُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَ اجْعَلْنِيْ لِنَعْمَائِكَ مِنَ

आले मुहम्मद (अ) पर दुरूद व सलाम नाज़िल फ़र्मा, और मुझे अपनी नेमतों के शुक्र करने वालों मे दाख़ल

الشَّاكِرِيْنَ وَ لِآلَائِكَ مِنَ الذَّاكِرِيْنَ وَ ارْحَمْنِيْ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ

कर, और मुझे अपनी नेमतों के ज़िक्र करने वालों मे शुमार कर। और मुझ पर अपनी रहमत के सदक़े मे करम

الرَّاحِمِيْنَ. اِلٰهِيْ وَ مَوْلَايَ وَ سَيِّدِيْ وَ كَمْ مِنْ عَبْدٍ اَمْسٰى وَ اَصْبَحَ

फ़र्मा ऐ सबसे ज़्यादा रहम करने वाले मेहरबान। ऐ मरे मालिक। ऐ मेरे सरदार। तेरे बहुत से बंदे ऐसे हैं कि

فِيْ مَضَائِقِ الْحُبُوْسِ وَ السُّجُوْنِ وَ كَرْبِهَا وَ ذُلِّهَا وَ حَدِيْدِهَا

जिनकी सुबह व शाम क़ैदख़ानों की तंगियों और ज़िन्दानों की असीरी मे गुजरती है। क़ैदख़ाने की तंगियों रंजो

تَتَدَاوَلُهٗ اَعْوَانُهَا وَ زَبَانِيَتُهَا فَلَا يَدْرِيْ اَيَّ حَالٍ يُفْعَلُ بِهٖ وَ اَيَّ

गम और लोहे की ज़ंजीरों मे गुजरती है जहाँ क़ैदख़ाने के जिम्मेदार और निगराँ उन्हें करवटें बदलवा रहे हैं।

مُثْلَةٍ يُمَثَّلُ بِهٖ فَهُوَ فِيْ ضُرٍّ مِنَ الْعَيْشِ وَ ضَنْكٍ مِنَ الْحَيَاةِ يَنْظُرُ

और ये नही मालूम है के उनका कया अंजाम होने वाला है। और किस तरह उन्हें टुकड़े टुकड़े कर दिया

اِلٰى نَفْسِهٖ حَسْرَةً لَا يَسْتَطِيْعُ لَهَا ضَرًّا وَ لَا نَفْعًا وَ اَنَا خِلْوٌ مِنْ ذٰلِكَ

जाएगा। वो ज़िंदगी की तकलीफ़ों और हयात की तंगियों मे यूँ जी रहे हैं के अपने ही नफ़्स को हसरत से देखते

كُلِّهِ بِجُوْدِكَ وَ كَرَمِكَ فَلَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ مِنْ مُقْتَدِرٍ لَا

हैं। और कोई फाएदा या नुक़सान नही पहुँचा सकते हैं। और मै तेरे करम से इन तमाम बातों से महफ़ूज हूँ।

يُغْلَبُ وَذِى اَنَاةٍ لَا يَعْجَلُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَ اجْعَلْنِىْ لَكَ

लेहाज़ा तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही है। तू क़ादिरे बेनियाज़ है, जो मग़लूब नही होता। और ख़ुदाए हलीम जो

مِنَ الْعَابِدِيْنَ وَلِنَعْمَائِكَ مِنَ الشَّاكِرِيْنَ وَلِآلَائِكَ مِنَ الذَّاكِرِيْنَ

उजलत नही करता है। मु०हम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और मुझे अपनी नेमतों के शुक्र करने वालों मे और

وَارْحَمْنِىْ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ. اِلٰهِىْ وَمَوْلَاىَ وَسَيِّدِىْ كَمْ

अपने एहसानात को याद रखने वालों मे क़रार देदे। और हमपर रहमत नाज़ल फ़र्मा ऐ सबसे ज़्यादा मेहेरबानी

مِنْ عَبْدٍ اَمْسٰى وَ اَصْبَحَ قَدِ اسْتَمَرَّ عَلَيْهِ الْقَضَاءُ وَ اَحْدَقَ بِهِ

करने वाले। ऐ मेरे मौला व आका कितने ही बंदों की सुबह व शाम इस हालत मे होती है के उनपर हुक्मे कज़ा

الْبَلَاءُ وَفَارَقَ اَحِبَّائَهُ وَاَوِدَّائَهُ وَاَخِلَّائَهُ وَاَمْسٰى اَسِيْرًا حَقِيْرًا

जारी हो चुका है और बलाओं ने उनहे घेर लिया है। अहबाबे मुख़लिसीन से जुदा हो गए हैं? और कुफ़्फ़ार के

ذَلِيْلًا فِىْ اَيْدِى الْكُفَّارِ وَ الْاَعْدَاءِ يَتَدَاوَلُوْنَهُ يَمِيْنًا وَ شِمَالًا قَدْ

हाथों मे असीरी हिक़ारत और ज़िल्लत की ाज़िंदगी गुज़ार रहे हैं और दुश्मन उन्हें दाहिने बाएँ करवटें बदलवा रहे

حُصِرَ فِى الْمَطَامِيْرِ وَ ثُقِّلَ بِالْحَدِيْدِ لَا يَرٰى شَيْئًا مِنْ ضِيَاءِ الدُّنْيَا

हैं। ज़िनदान के अंधेरे मे क़ैद कर दिये गए हैं। और ज़ंजीरों मे जकड़ दिए गए हैं। न दुनिया की रौशनी दिखाई

وَلَا مِنْ رَوْحِهَا يَنْظُرُ اِلٰى نَفْسِهٖ حَسْرَةً لَا يَسْتَطِيْعُ لَهَا ضَرًّا وَلَا

पड़ती है और न राहत व आराम। अपने ही नफ़्स को हसरत से देखते हैं। और कोई फ़ाएदा या नुकसान नही

نَفْعًا وَاَنَا خِلْوٌ مِنْ ذٰلِكَ كُلِّهٖ بِجُوْدِكَ وَكَرَمِكَ فَلَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ

पहुँचा सकते हैं। और मै तेरे करम से इन तमाम बातों से महफ़ूज हूँ। लेहाज़ा तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही है। तू

سُبْحَانَكَ مِنْ مُقْتَدِرٍ لَا يُغْلَبُ وَذِىْ اَنَاةٍ لَا يَعْجَلُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ

क़ादिरे बेनियाज़ है, जो मग़लूब नही होता। और ख़ुदाए हलीम जो उजलत नही करता है। मुहम्मद और उनकी

اٰلِ مُحَمَّدٍ وَاجْعَلْنِىْ لَكَ مِنَ الْعَابِدِيْنَ وَلِنَعْمَائِكَ مِنَ الشَّاكِرِيْنَ

आल पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और मुझे अपनी नेमतों के शक्र करने वालों मे और अपने एहसानात को याद

وَلِاٰلَائِكَ مِنَ الذَّاكِرِيْنَ وَارْحَمْنِىْ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اِلٰهِىْ

रखने वालों मे क़रार देदे। और हमपर रहमत नाज़ल फ़र्मा ऐ सबसे ज़्यादा मेहेरबानी करने वाले। मेरे अल्लाह

وَمَوْلَاىَ وَسَيِّدِىْ وَكَمْ مِنْ عَبْدٍ اَمْسٰى وَاَصْبَحَ وَقَدِ اشْتَاقَ اِلَى

मेरे मौला मेरे सरदार, कितने ही बंदों की सुबह व शाम इस हालत मे होती है के वे दुनिया की तरफ़ रग़बत से

الدُّنْيَا بِالرَّغْبَةِ فِيْهَا اِلٰى اَنْ خَاطَرَ بِنَفْسِهٖ وَمَالِهٖ حِرْصًا مِنْهُ

इशतियाक करते हैं के अपने जान व माल को ख़तरे मे डालते हैं। उसके लालच मे। तो वह उस कश्ती मे सवार

عَلَيْهَا قَدْ رَكِبَ الْفُلْكَ وَكُسِرَتْ بِهٖ وَهُوَ فِىْ آفَاقِ الْبِحَارِ وَظُلَمِهَا

हो गया जो कि फिर टूट गई। तो अब वे दरया के आफ़ाक व अंधेरे मे है। वह ग़म के साथ अपने आप को देखता

يَنْظُرُ اِلٰى نَفْسِهٖ حَسْرَةً لَا يَقْدِرُ لَهَا عَلٰى ضَرٍّ وَ لَا نَفْعٍ وَ اَنَا خِلْوٌ مِنْ

है। क्योंकि वह अपने आप को न तो नफ़ा न नुक़सान पहुँचाने पर क़ादिर है। लेकिन मै ये सब से बरी हूँ। तेरे

ذٰلِكَ كُلِّهٖ بِجُوْدِكَ وَ كَرَمِكَ فَلَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ مِنْ مُقْتَدِرٍ

जूद व करम से। लेहाज़ा तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही है। तू क़ादिरे बेनियाज़ है, जो मग़लूब नही होता। और

لَا يُغْلَبُ وَ ذِيْ اَنَاةٍ لَا يَعْجَلُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اجْعَلْنِيْ

ख़ुदाए हलीम जो उजलत नही करता है। मु०हम्मद और उनकी आल पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और मुझे अपनी

لَكَ مِنَ الْعَابِدِيْنَ وَ لِنَعْمَائِكَ مِنَ الشَّاكِرِيْنَ وَ لِاٰلَائِكَ مِنَ

नेमतों के शुक्र करने वालों मे और अपने एहसानात को याद रखने वालों मे क़रार देदे। और हमपर रहमत

الذَّاكِرِيْنَ وَ ارْحَمْنِيْ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ. اِلٰهِيْ وَ مَوْلَايَ وَ

नाज़ल फ़र्मा ऐ सबसे ज़्यादा मेहेरबानी करने वाले। मेरे अल्लाह मेरे मौला मेरे सरदार, कितने ही बंदों की सुबह

سَيِّدِيْ وَ كَمْ مِنْ عَبْدٍ اَمْسٰى وَ اَصْبَحَ قَدِ اسْتَمَرَّ عَلَيْهِ الْقَضَاءُ وَ

व शाम इस हालत मे होती है के वे हर पल परेशानियों मे हैं और साख़्तियाँ, कु०प०□फार और दुश्मन उन्हें घेरे

اَحْدَقَ بِهِ الْبَلَاءُ وَ الْكُفَّارُ وَ الْاَعْدَاءُ وَ اَخَذَتْهُ الرِّمَاحُ وَ السُّيُوْفُ

हैं। और भाले, तल्वार व तीर उसको निशाना बनाए हैं। और उसने मार खाई व गिर गया। ज़मीन ने उसका

وَ السِّهَامُ وَ جُدِّلَ صَرِيْعًا وَ قَدْ شَرِبَتِ الْاَرْضُ مِنْ دَمِهٖ وَ اَكَلَتِ

खून निगल लिया। और जानवरों व पक्षीयों ने उसका गोश्त खा लिया। पर मै इन सब से बरी हूँ, तेरे जूद व

السِّبَاعُ وَالطَّيْرُ مِنْ لَحْمِهٖ وَاَنَا خِلْوٌ مِنْ ذٰلِكَ كُلِّهٖ بِجُوْدِكَ وَ كَرَمِكَ

करम से जबके मै इसके क़ाबिल नही हूँ। ऐ वो जिसके अलावा कोई ख़ुदा नही है। तू क़ादिरे बेनियाज़ है, जो

لَا بِاسْتِحْقَاقٍ مِّنِّیْ يَا لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ مِنْ مُقْتَدِرٍ لَا يُغْلَبُ

मग़लूब नही होता। और ख़ुदाए हलीम जो उजलत नही करता है। मु०हम्मद और उनकी आल पर रहमत

وَ ذِیْ اَنَاةٍ لَا يَعْجَلُ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَ اجْعَلْنِیْ لِنَعْمَائِكَ

नाज़ल फ़र्मा और मुझे अपनी नेमतों के शुकर करने वालों मे और अपने एहसानात को याद रखने वालों मे

مِنَ الشَّاكِرِيْنَ وَ لِآلَائِكَ مِنَ الذَّاكِرِيْنَ وَ ارْحَمْنِیْ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ

क़रार देदे। और हमपर रहमत नाज़िल फ़र्मा ऐ सबसे ज़्यादा मेहेरबानी करने वाले। ख़ुदाया तेरी इज़्ज़त व

الرَّاحِمِيْنَ. وَ عِزَّتِكَ يَا كَرِيْمُ لَاَطْلُبَنَّ مِمَّا لَدَيْكَ وَ لَاُلِحَّنَّ عَلَيْكَ وَ

जलाल की क़सम मै तेरी नेमतों की माँग करूँगा और इसरार भी करूँगा। तेरी तरफ़ हाथ भी बढ़ाउँगा हालाके

لَاَمُدَّنَّ يَدِیْ نَحْوَكَ مَعَ جُرْمِهَا اِلَيْكَ يَا رَبِّ فَبِمَنْ اَعُوْذُ وَ بِمَنْ

ये हाथ मुजरिम हैं मगर कया करूँ किस से पनाह मागूँ किस के साए मे जाऊँ? मेरे पास तेरे अलावा कोई नही

اَلُوْذُ لَا اَحَدَ لِیْ اِلَّا اَنْتَ اَفَتَرُدُّنِیْ وَ اَنْتَ مُعَوَّلِیْ وَ عَلَيْكَ مُتَّكَلِیْ

है। तू मुझे कैसे पलटा देगा जब के तुझपर ही मेरा एतेमाद और भरोसा है? मै तुझसे तेर उस नाम के वास्ते से

اَسْاَلُكَ بِاسْمِكَ الَّذِیْ وَضَعْتَهٗ عَلَی السَّمَاءِ فَاسْتَقَلَّتْ وَ عَلَی

सवाल कर रहा हूँ जिसे आसमानो पर रख दिया गया तो ठहर गए और ज़मीन पर रख दिया गया तो क़रार आ

الْاَرْضِ فَاسْتَقَرَّتْ وَعَلَى الْجِبَالِ فَرَسَتْ وَعَلَى اللَّيْلِ فَاَظْلَمَ وَ

गया। और पहाड़ों पर रख दिया तो इस्तेहकाम पैदा हो गया। रात पर रखा तो तारीक हो गई और दिन पर रखा

عَلَى النَّهَارِ فَاسْتَنَارَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّآلِ مُحَمَّدٍ وَاَنْ تَقْضِيَ لِيْ

तो रौशन हो गया। मु॰हम्मद व आले मु॰हम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और मेरी तमाम हाजतों को पूरा करदे।

حَوَائِجِيْ كُلَّهَا وَ تَغْفِرَ لِيْ ذُنُوْبِيْ كُلَّهَا صَغِيْرَهَا وَ كَبِيْرَهَا وَ تُوَسِّعَ

तमाम छोटे बड़े गुनाहों को माफ़ करदे। रिज़्क़ मे वुसअत अता फ़र्मा के जिसके जरिए मुझे दुनिया व आख़िरत

عَلَيَّ مِنَ الرِّزْقِ مَا تُبَلِّغُنِيْ بِهٖ شَرَفَ الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ يَا اَرْحَمَ

के शरफ तक पहुँचादे। ऐ सबसे ज़्यादा रहेम करनेवाले। ख़ुदाया मै तुझसे तालिबे इम्दाद हूँ तू मुहम्मद व आले

الرَّاحِمِيْنَ مَوْلَايَ بِكَ اسْتَعَنْتُ فَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَ

मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और मेरी इमदाद फ़र्मा मै तालिबे पनाह हूँ मुझे पनाह देदे। मुझे अपनी इताअत

اَعِنِّيْ وَ بِكَ اسْتَجَرْتُ فَاَجِرْنِيْ وَ اَغْنِنِيْ بِطَاعَتِكَ عَنْ طَاعَةِ

के ज़रिए बंदों की इताअत से बेनियाज़ बना दे। और अपनी बारगाह मे सवाल के ज़रिए लोगों के सामने हाथ

عِبَادِكَ وَبِمَسْاَلَتِكَ عَنْ مَسْاَلَةِ خَلْقِكَ وَ انْقُلْنِيْ مِنْ ذُلِّ الْفَقْرِ

फैलाने से बचा ले। मुझे फ़क़ीरी की ज़िल्लत से बेनियाज़ी की इज़्ज़त तक और मासियत की ज़िल्लत से इताअत

اِلٰى عِزِّ الْغِنٰى وَمِنْ ذُلِّ الْمَعَاصِيْ اِلٰى عِزِّ الطَّاعَةِ فَقَدْ فَضَّلْتَنِيْ عَلٰى

की इज़्ज़त तक पहुँचा दे के तूने अपने जूद व करम से बहुत सी मख़लूक़ात से अफ़ज़ल क़रार दिया है के

كَثِيْرٍ مِنْ خَلْقِكَ جُوْدًا مِنْكَ وَ كَرَمًا لَا بِاسْتِحْقَاقٍ مِنِّىْ. اِلٰهِى

जिसका मै बिलकुल हक़दार नही था। ख़ुदाया इन तमाम बातों पर तेरी हम्द है। मु०हम्मद व आले मु०हम्मद

فَلَكَ الْحَمْدُ عَلٰى ذٰلِكَ كُلِّهٖ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَ اجْعَلْنِىْ

पर रहमत नाज़िल फ़र्मा और मुझे अपनी रहमत के शुकर गुज़ारों और रहमतों के याद रखने वालों मे क़रार

لِنَعْمَائِكَ مِنَ الشَّاكِرِيْنَ وَلِآلَائِكَ مِنَ الذَّاكِرِيْنَ.

देदे।

अब सजदे में जाकर कहे:

سَجَدَ وَجْهِىَ الذَّلِيْلُ لِوَجْهِكَ الْعَزِيْزِ الْجَلِيْلِ سَجَدَ وَجْهِىَ الْبَالِى

मेरा ज़लील चेहरा तेरे अज़ा०rज व जलील चेहरे के सामने और मेरा बोसीदा व फ़ानी चेहरा तेरे दाएम व

الْفَانِىْ لِوَجْهِكَ الدَّائِمِ الْبَاقِىْ سَجَدَ وَجْهِىَ الْفَقِيْرُ لِوَجْهِكَ الْغَنِىِّ

बाक़ी चेहरे के सामने है। मेरा फ़क़ीर चेहरा तेरे ग़नीए कबीर चेहरे के सामने सजदा करता है। इस सजदे मे मेरे

الْكَبِيْرِ سَجَدَ وَجْهِىْ وَ سَمْعِىْ وَ بَصَرِىْ وَ لَحْمِىْ وَ دَمِىْ وَ جِلْدِىْ وَ

चेहरा मेरे कान, मेरी आखें मेरे गोश्त व पोस्त मेरा ख़ून मेरी हि·याँ और मेरा सारा वुजूद शामिल है। जो रब्बुल

عَظْمِىْ وَمَا اَقَلَّتِ الْاَرْضُ مِنِّىْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ اَللّٰهُمَّ عُدْ عَلٰى

आलमीन की बारगाह मे सजदा रेज़ है। ख़ुदाया मेरे जेहेल अपने इल्म से और मेरे फ़कर पर अपनी बेनियाज़ी

جَهْلِیْ بِحِلْمِكَ وَ عَلٰی فَقْرِیْ بِغِنَاكَ وَ عَلٰی ذُلِّیْ بِعِزِّكَ وَ سُلْطَانِكَ

से मेरी ज़िल्लत पर अपनी इज़्ज़्त से मेरी कमज़ोरी पर अपनी ताक़त से मेरे ख़ौफ पर अपने अम्न व अमान और

وَ عَلٰی ضَعْفِیْ بِقُوَّتِكَ وَ عَلٰی خَوْفِیْ بِاَمْنِكَ وَ عَلٰی ذُنُوْبِیْ وَ خَطَايَایَ

मेरे गुनाहों और मेरी ख़ताओं पर अपने अफ़ू व रहेम से निगाह मरहमत फ़र्मा। ऐ ख़ुदा रहमान व रहीम ख़ुदाया

بِعَفْوِكَ وَ رَحْمَتِكَ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيْمُ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَدْرَاُ بِكَ فِیْ نَحْرِ وَ

मै फ़ुलाँ व्यक्ति के शर को तेरे द्वारा दफ़ा करना चाहता हूँ और तेरी पनाह मे आना चाहता हूँ। लेहाज़ा तू मेरे लिए

اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهٖ فَاكْفِنِيْهِ بِمَا كَفَيْتَ بِهٖ اَنْبِيَائَكَ وَ اَوْلِيَائَكَ

वैसेही काफ़ी होजा जैसे अपने अंबिया औलिया और नेक बंदोंके लिए उनके दौर के फ़िरौन और अपने सरकश

مِنْ خَلْقِكَ وَ صَالِحِ عِبَادِكَ مِنْ فَرَاعِنَةِ خَلْقِكَ وَ طُغَاةِ عُدَاتِكَ

दुश्मनो और बदतरीन मख़लूकात के शर के मुक़ाबले मे काफ़ी हो गया है। अपनी रहमत के सहारे ऐ बेहतरीन

وَ شَرِّ جَمِيْعِ خَلْقِكَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اِنَّكَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ

मेहेरबानी करने वाले यक़ीनन तू हर शै पर क़ादिर है। और मेरे लिये मेरा ख़ुदा ही काफ़ी है जो बेहतरीन कफ़ील

قَدِيْرٌ وَ حَسْبُنَا اللّٰهُ وَ نِعْمَ الْوَكِيْلُ

और ज़िम्मदेर है।

दुआ सैफी सग़ीर

दुआए सैफी सगीर अल मारूफ दुआए कामूस
शेख बुज़ुर्गवार सेकतुल इसलाम नूरी (त.) सहीफा सानिया अलविया में इस दुआ का ज़िक्र किया है और फरमाया है के अरबाबे तिलिस्मात व तसशीर के कलेमात में इस दुआ की अजीबो गरीब शरह है और इसके अजीबो गरीब आसार का ज़िक्र किया गया है।
मगर क्योंके मुझे इन लोगों के बयान पर एतेमात नहीं है लेहाज़ा मैने इन आसार का ज़िक्र नहीं किया है। अलबत्ता ओलमा आलाम की पैरवी में दुआ को नक्ल किया जा रहा है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ رَبِّ اَدْخِلْنِي فِي لُجَّةِ بَحْرِ

ख़ुदा के नाम से जो रहमान व रहीम है। परवर्दिगार मुझे अपने दरया ए एहदियत की गहराईयों

اَحَدِيَّتِكَ وَطَمْطَامِ يَمِّ وَحْدَانِيَّتِكَ وَقَوِّنِي بِقُوَّةِ سَطْوَةِ

मे दाख़िल कर दे और अपने वेहदानियत के तूफानों में ०घर्क कर दे। मुझे अपनी यकताई की

سُلْطَانِ فَرْدَانِيَّتِكَ حَتّٰى اَخْرُجَ اِلٰى فَضَاءِ سَعَةِ رَحْمَتِكَ

ताक़त व सुतूत के ज़रिए क़ुव्वत इनायत फर्मा ता के मैं तेरी फिज़ाए रहमत तक निकल आऊँ

وَفِي وَجْهِي لَمَعَاتُ بَرْقِ الْقُرْبِ مِنْ آثَارِ حِمَايَتِكَ مَهِيبًا

इस तरह के मेरे चेहरे पर तेरी रहमानियत के आसार और तक़र्रुब की रौशनी चमक रही हो और

بِهَيْبَتِكَ عَزِيزًا بِعِنَايَتِكَ مُتَجَلِّلًا مُكَرَّمًا بِتَعْلِيمِكَ

मुझ में तेरी हैबत से ख़ौफ पैदा हो जाए। मैं तेरी इनायत से साहिबे इज़्ज़त हूँ ओर तेरे करम से

وَتَزْكِيَتِكَ وَاَلْبِسْنِى خِلَعَ الْعِزَّةِ وَالْقَبُولِ وَسَهِّلْ لِى

साहिबे करामत हो जाऊँ तेरी तालीम और तेरी पाकीज़गी की बिना पर ख़ुदाया मुझे इज़्ज़त और

مَنَاهِجَ الْوُصْلَةِ وَالْوُصُولِ وَتَوِّجْنِى بِتَاجِ الْكَرَامَةِ

क़ुबूलियत का लिबास इनायत फर्मा और मेरे लिए अपनी बार्गाह तक पहुँचने के रास्ते आसान

وَالْوَقَارِ وَاَلِّفْ بَيْنِى وَبَيْنَ اَحِبَّائِكَ فِى دَارِ الدُّنْيَا وَدَارِ

कर दे। मेरे सर पर करामत और विक़ार का ताज रख दे और मेरे और अपने चाहने वालों के

الْقَرَارِ وَارْزُقْنِى مِنْ نُورِ اسْمِكَ هَيْبَةً وَسَطْوَةً تَنْقَادُ لِىَ

दर्मियान दुनिया और आख़िरत में उल्फत पैदा कर दे। अपने इस्माए इलाही के नूर से मुझे हैबत

الْقُلُوبُ وَ الْاَرْوَاحُ وَتَخْضَعُ لَدَىَّ النُّفُوسُ وَ الْاَشْبَاحُ

व सुतूत इनायत फर्मा जिस की बिना पर क़ुलूब और अर्वाह मेरे लिए मतीअ हो जाएँ और नुफ़ूस

يَا مَنْ ذَلَّتْ لَهُ رِقَابُ الْجَبَابِرَةِ وَخَضَعَتْ لَدَيْهِ اَعْنَاقُ

और अजसाम मेरे सामने ख़ाज़अ हो जाएँ। ऐ वो परवर्दिगार जिस के सामने जाबिरों की गर्दनें

الْاَكَاسِرَةِ لَا مَلْجَاَ وَلَا مَنْجَى مِنْكَ اِلَّا اِلَيْكَ وَلَا اِعَانَةَ

झुक गई हैं और जिस की बार्गह में बड़े बड़े बादशाह सरंगो हो गए हैं जिस से हट के कोई पनाहगाह

اِلَّا بِكَ وَلَا اتِّكَاءَ اِلَّا عَلَيْكَ اِدْفَعْ عَنِّى كَيْدَ الْحَاسِدِيْنَ

नहीं है और न तेरे अलावा कोई मदद करने वाला है और न तेरे अलावा किसी पर भरोसा हो

وَظُلُمَاتِ شَرِّ الْمُعَانِدِيْنَ وَارْحَمْنِى تَحْتَ سُرَادِقَاتِ

सकता है। ख़ुदाया मुझ से हासिदों के मक्र को और दुश्मनों के शर को दूर कर दे। मुझ पर रहम

عَرْشِكَ يَا اَكْرَمَ الاَكْرَمِيْنَ اَيِّدْ ظَاهِرِى فِى تَحْصِيلِ

फर्मा और मुझे सरापर्दा ए अर्श के नीचे जगह दे। ऐ बेहतरीन करम करने वाले मेरे ज़ाहिर की

مَرَاضِيكَ وَنَوِّرْ قَلْبِى وَسِرِّى بِالاِطِّلاَعِ عَلٰى مَنَاحِىِّ

ताईद फर्मा अपनी मर्ज़ी को हासिल करने के लिए और मेरे बातिन को नूरानी फर्मा दे ता के मैं तेरी

مَسَاعِيكَ اِلٰهِى كَيْفَ اَصْدُرُ عَنْ بَابِكَ بِخَيْبَةٍ مِنْكَ

बार्गाह के रास्तों की इब्तिला हासिल कर सकूँ। ख़ुदाया मैं तेरी बार्गाह से नउम्मीद किस तरह जा

وَقَدْ وَرَدْتُهُ عَلٰى ثِقَةٍ بِكَ وَكَيْفَ تُؤْيِسُنِى مِنْ عَطَائِكَ

सकता हूँ जब के मैं बड़े एतेमाद के साथ बारिद हुआ हूँ और तू मुझे अपनी अता से किस तरह

وَقَدْ اَمَرْتَنِى بِدُعَائِكَ وَهَا اَنَا مُقْبِلٌ عَلَيْكَ مُلْتَجِئٌ

मायूस कर देगा जब के तू ने ख़ुद दुआ करने का हुक्म दिया है और अब मैं तेरी तरफ आ रहा हूँ

اِلَيْكَ بَاعِدْ بَيْنِى وَبَيْنَ اَعْدَائِى كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ اَعْدَائِى

तेरी पनाह लेने के लिए। मेरे और मेरे दुश्मनों के दर्मियान दूरी पैदा कर दे जिस तरह मेरे दुश्मनों

اِخْتَطِفْ اَبْصَارَهُمْ عَنِّى بِنُورِ قُدْسِكَ وَجَلاَلِ مَجْدِكَ

के दर्मियान इख़तिलाफ पैदा किया है। इन की निगाहों को ख़ैरा कर दे अपने नूर ए क़ुदुस और

اِنَّكَ اَنْتَ اللهُ الْمُعْطِى جَلاَئِلَ النِّعَمِ الْمُكَرَّمَةِ لِمَنْ

अपने जलाल ए बुज़ुर्गी की बिना पर। इस लिए के तू वो परवर्दिगार है जो अज़ीम नेमतें अता करने

نَاجَاكَ بِلَطَائِفِ رَحْمَتِكَ يَا حَىُّ يَا قَيُّومُ يَا ذَا الْجَلاَلِ

वाला है। अपने हर मुनाजात करने वाले के लिए अपनी रहमत की महरबानियों के ज़रिए ऐ हई

وَالاِكْرَامِ وَصَلَّى اللهُ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ وَآلِهِ

ऐ ख़य्यूम, ऐ साहिबे जलालो इक्राम अल्लाह हमारे आक़ा और पैग़मबर हज़रत मुहम्मद और उन

اَجْمَعِينَ الطَّيِّبِينَ الطَّاهِرِين

की आल ए तय्यबीन व ताहेरीन पर रहमत नाज़ल फर्माए।

वर्ग - ७

अनेक लाभदायक छोटी दुआएं

बाज़ उन आयात और दुआओं के ज़िक्र में जिनको मोअतबर किताबों से मुनतखब किया गया है और इन्तेहाई मुफीद है। पहले:

इस्मे आज़म की आयतें

१) सय्यद अज़ल सय्यद अली खान शीराज़ी (२) ने किताबे कलम तरयद में नक्ल किया है के अल्लाह का इस्मे आज़म है जिसका आगाज़ अल्लाह से होता है और अंत 'होव' पर होता है और उसके हुरूफ में नुकता नहीं है। उसकी किरत में किसी हाल में कोई तगय्युर नहीं होता है। और यह बात कुराने मजीद में पाँच सूरों की पाँच आयतों में पाई जाती है। सूरह बकरह, आले इमरान, निसा, ताहा, तगाबुन।

शेख मगरिबी ने कहा है के जो इन पाँच आयतों को अपना विर्द बना ले और हर दिन ग्यारह बार पढे यकीनन उसके लिए हर छोटी बडी मुश्किल फौरन आसान हो जाएगी। पाँच आयतें यह हैं:

पहले: सूरह बकरह (सूरह २) की २५५ वी आयत जो इस किताब मे पहले आ चुकी है।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ﴿٢﴾

अल्लाह वह है जिसके सिवा कोई ख़ुदा नही है, वही ज़िन्दा व हमेशा रहने वाला है।

दूसरे: सूरह आले इम्रान (सूरह ३) की २ री आयत:

نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ

उसीने तुमपर बरहक़ किताब नाज़िल की है जो उसक सामने मौजूद हैं उनकी तसदीक़ करती है

وَالْاِنْجِيْلَ ۝٣ مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ

और उसीने उससे पहले लोगों की हिदायत के लिए तौरेत इजील भेजी।

तीसरे: सूरह निसा (सूरह ४) की ८७ वी आयत:

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۭ

अल्लाह तो वही परवरदिगार है जिसके सिवा कोई पूजा के क़ाबिल नही। वह तुमको क़यामत के

وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا ۝٨٧ۧ

दिन, जिसमे जरा भी शक नही, ज़रूर इक्रार करेगा और ख़ुदा से बढ़कर बात मे सच्चा कौन हिगा?

चौथे: सूरह ताहा (सूरह २०) की ८ वी आयत:

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ لَهُ الْاَسْمَاۗءُ الْحُسْنٰى ۝٨

अल्लाह, उसके सिवा कोई माबूद नही है। अच्छे नाम उसी के लिए हैं।

पाँचवे: सूरह तग़ाबुन (सूरह ६४) की १३ वी आयत:

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١٣

अल्लाह, उसके सिवा कोई माबूद नही और मोमिनों को ख़ुदा ही पर भरोसा करना चाहिए।

दुआ तवस्सुल

अल्लामा मजलिसी ने फरमाया है के बाज़ मोअतबर किताबों में मोहम्मद बिन बाब्वय्ह से नक्ल किया गया है के उन्होंने दुआ तवस्सुल को अइम्मा (अ.स.) से रिवायत किया है। और कहा है के मैने उसको किसी मामले में नहीं पढा मगर यह के उसकी कुबूलियत का असर बहुत जल्द पाया। और वह दुआ यह है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَسْئَلُكَ وَ اَتَوَجَّهُ

बारे इलाहा। तेरे दर का सवाली बन कर और तेरे ही नबी स. पैग़बर रहमत हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व

اِلَيْكَ بِنَبِيِّكَ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ. مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ.

आलिहि व सल्लम के सहारे तेरी बारगाहे आली में बंदगी के सजदे सजाने चला हूं ऐ अबुल क़ासिम ऐ अल्लाह के रसूल

يَا اَبَا الْقَاسِمِ يَا رَسُوْلَ اللهِ يَا اِمَامَ الرَّحْمَةِ. يَا سَيِّدِنَا وَ

स. ऐ ख़ैर व बरकत वाले पेश्वा! ऐ ख़ाजाए आलम, ऐ सबके वाली आप ही से हम आस लगाये हुऐ हैं आप ही की

مَوْلٰينَا اِنَّا تَوَجَّهْنَا. وَ اسْتَشْفَعْنَا وَ تَوَسَّلْنَا بِكَ اِلَى

शफ़ाअत दरकार है और ख़ुदा तक रिसाई के लिए आप ही का वसीला हैं नीज़ हाजत रवाई के सिलसिले में भी आप

اللهِ. وَ قَدَّمْنَاكَ بَيْنَ يَدَىْ حَاجَاتِنَا. يَا وَجِيْهًا عِنْدَ اللهِ

ही हमारा सबसे बड़ा आसरा है ऐ बारगाहे अहदियत में इज़्ज़त पाने वाले आप अल्लाह से हमारी सफ़ारिश कर दीजिए

اشْفَعْ لَنَا عِنْدَ اللّٰهِ. يَا اَبَا الْحَسَنِ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ يَا عَلِيَّ

ऐ अबुल हसन अमीरूल मोमिनीन ऐ अली बिन अबी तालिब अ0 ऐ सारी ख़लकत के लिए ख़ालिके यकता की हुज्जत

بْنَ اَبِيْ طَالِبٍ. يَا حُجَّةَ اللّٰهِ عَلٰى خَلْقِهٖ يَا سَيِّدَنَا وَ مَوْلٰينَا. اِنَّا

ऐ हमारे आक़ा हमारे मौला हम आप ही पर नज़रें जमाये हुऐ हैं आप की ही शफ़ाअ करने वाले र ाप ही हमारा ज़रिया

تَوَجَّهْنَا وَ اسْتَشْفَعْنَا وَ تَوَسَّلْنَا بِكَ اِلَى اللّٰهِ. وَ قَدَّمْنَاكَ

हैं नीज़ अपनी मुश्किलों को आसान करने के लिए आप का दामन थामे हुऐ हैं ऐ ख़ुदा रसीदा बुज़ुर्ग। उस आफ़रीदगार

بَيْنَ يَدَيْ حَاجَاتِنَا. يَا وَجِيْهًا عِنْدَ اللّٰهِ اشْفَعْ لَنَا عِنْدَ

मुतलक के हुज़ूर हमारी सफ़ारिश कर दीजिए। ऐ फ़ातिमा ज़हरा स. ऐ मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि

اللّٰهِ. يَا فَاطِمَةُ الزَّهْرَاءُ يَا بِنْتَ مُحَمَّدٍ يَا قُرَّةَ عَيْنِ الرَّسُوْلِ.

व सल्लम की साहेबज़ादी ऐ रसूल स. की आँखों की ठण्डक ऐ सय्यदाए आलम ऐ हमारी मलकाए आलिया आप ही

يَا سَيِّدَتَنَا وَ مَوْلَاتَنَا اِنَّا تَوَجَّهْنَا وَ اسْتَشْفَعْنَا. وَ

की चौखट पर हम सर नहवाड़े हुए हैं दरगाहे काज़युल हाजात तक पहुंचने की गर्ज़ से हमें ाप ही की मदद चाहिए आप

تَوَسَّلْنَا بِكِ اِلَى اللّٰهِ وَ قَدَّمْنَاكِ بَيْنَ يَدَيْ حَاجَاتِنَا. يَا وَ

ही हमारा वसीला हैं और मुद्दुआ पाने के ख़याल से आपके आगे अपनी झोली रख दी है ऐ हरीम क़ुद्स इलाही की

جِيْهَةً عِنْدَ اللّٰهِ اشْفَعِيْ لَنَا عِنْدَ اللّٰهِ. يَا اَبَا مُحَمَّدٍ يَا حَسَنَ

बुलन्द मर्तबा ख़ातून! आप दावरे हश्र से हमारी सफ़ारिश कर दीजिए। ऐ अबू मुहम्मद स0 ऐ हसन अ0 इब्ने अली अ0

بْنَ عَلِيٍّ اَيُّهَا الْمُجْتَبٰى يَابْنَ رَسُوْلِ اللهِ. يَا حُجَّةَ اللهِ عَلٰى

ऐ मुजतबा ऐ रसूले खुदा के फ़रज़न्द ऐ दुनिया जहान के लिए अल्लाह की हुज्ज़त ऐ हमारे सरवर! ऐ हमारे सरदरा हम

خَلْقِهٖ يَا سَيِّدِنَا وَ مَوْلٰينَا. اِنَّا تَوَجَّهْنَا وَ اسْتَشْفَعْنَا وَ

आप ही के आस्ताने अक़दस पर अपनी तवज्ज़ुह मरकूज़ किये हुए हैं और बस आप ही हमारे शफ़ाअ कार हैं नीज़ क़ुर्बे

تَوَسَّلْنَا بِكَ اِلَى اللهِ. وَ قَدَّمْنَاكَ بَيْنَ يَدَيْ حَاجَاتِنَا.

इलाही की ख़ातिर आप स0 ही का सहारा लिया है और बारगाहे अहदियत से अपने मक़ासिद की तकमील के लिए

يَا وَجِيْهًا عِنْدَ اللهِ اشْفَعْ لَنَا عِنْدَ اللهِ. يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ يَا

आप स0 को वास्ता क़रारिदया है ऐ ख़ुदा के नज़दीक आबरू रखने वाले आप मालिके दो जहाँ से हमारी सिफ़ारिश

حُسَيْنَ بْنَ عَلِيٍّ اَيُّهَا الشَّهِيْدُ يَابْنَ رَسُوْلِ اللهِ. يَا حُجَّةَ اللهِ

कर दीजिए। ऐ अबू अब्दुल्लाह। ऐ हुसैन बिन अली अ. ऐ जामे शहादत नोश करने वाले ऐ रसूले फ़रज़न्दे रसूल स0

عَلٰى خَلْقِهٖ يَا سَيِّدِنَا وَ مَوْلٰينَا. اِنَّا تَوَجَّهْنَا وَ اسْتَشْفَعْنَا

ऐ ख़ल्के ख़ुदा के लिए ख़ुदा की दलील ऐ हमारे पेश्वा ऐ हमारे सरपरस्त। हम ने आप अ0 के दर पर माथा रख दिया

وَ تَوَسَّلْنَا بِكَ اِلَى اللهِ. وَ قَدَّمْنَاكَ بَيْنَ يَدَيْ حَاجَاتِنَا.

है आपकी शफ़ाअत चाहिये और आप का ही वसीला मतलूब है अपनी हाजतों के सिलसिले में हमने आप स0 ही पर

يَا وَجِيْهًا عِنْدَ اللهِ اشْفَعْ لَنَا عِنْدَ اللهِ. يَا اَبَا الْحَسَنِ يَا عَلِيَّ

भरोसा किया है कुदरत की नज़र में आप की बड़ी क़द्र वमंज़लत हैं आप माबूदे मुतलक से हमारी सफ़ारिश कर दीजिए

بْنَ الْحُسَيْنِ يَا زَيْنَ الْعَابِدِيْنَ يَابْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ. يَا حُجَّةَ اللّٰهِ

ऐ अबुल हसन अ0 ऐ् ली अ0 बिन अल हुसैन अ0 ऐ इबादत गुज़ारों की ज़ीनत ऐ रसूले ख़ुदा स0 के बेटे! ऐ अल्लाह

عَلٰى خَلْقِهٖ يَا سَيِّدِنَا وَ مَوْلٰينَا. اِنَّا تَوَجَّهْنَا وَ اسْتَشْفَعْنَا

की मख़लूक़ के लिए निशाने राहे हक़। ऐ हमारे सय्यद व सालार हम दामन फैला कर आप की तरफ़ बढ़ते हैं आप

وَ تَوَسَّلْنَا بِكَ اِلَى اللّٰهِ. وَ قَدَّمْنَاكَ بَيْنَ يَدَىْ حَاجَاتِنَا.

की शफ़ाअत के ख़ास्तगार हैं ख़ुदा के वास्ते आपसे मुतवस्सल हुऐ हैं ौर सि तवक्कु पर कि उम्मीदें बर आयेंगी आप के

يَا وَجِيْهًا عِنْدَ اللّٰهِ اشْفَعْ لَنَا عِنْدَ اللّٰهِ. يَا اَبَا جَعْفَرٍ يَا

क़दम लिए हैं अल्लाह ने आपको श०र्फ बख़्शा आप ख़ुदा से हमारी सफ़ारिश कर दीजिए ऐ अबू जाफ़र ऐ मुहम्मदिबन

مُحَمَّدَ بْنَ عَلِيٍّ اَيُّهَا الْبَاقِرُ يَابْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ. يَا حُجَّةَ اللّٰهِ عَلٰى

अली अ0 ऐ ममलकते इल्म को वुस्अत अता फ़रमाने राले सिब्ते नबी स0 ऐ दीने इलाही की ज़िन्दा जावेद अलामत

خَلْقِهٖ يَا سَيِّدِنَا وَ مَوْلٰينَا. اِنَّا تَوَجَّهْنَا وَ اسْتَشْفَعْنَا وَ

ऐ हम पर अख़्तयार रखने वाले ऐ हमारे फ़रमारंवा हम आपकी तरफ देख रहे हैं खुदा के हुज़ूर आप स0 ही से कुमुक

تَوَسَّلْنَا بِكَ اِلَى اللّٰهِ. وَ قَدَّمْنَاكَ بَيْنَ يَدَىْ حَاجَاتِنَا.

की इलतेजा है आप ही हमें उसके दरबार तक पहुंचाने वाले हैं और हम अपनी हर आर्ज़ू व न्याज़ के लिए आप से लौ

يَا وَجِيْهًا عِنْدَ اللّٰهِ اشْفَعْ لَنَا عِنْدَ اللّٰهِ. يَا اَبَا عَبْدِ اللّٰهِ يَا

लगाये बेठे हैं पाक व परवरदिगार ने आप स0 को बहुत ऊँचा मर्तबा दिया हैं और उस पालने वाले से हमारी सफ़ारिश

جَعْفَرَبْنَ مُحَمَّدٍ. اَيُّهَا الصَّادِقُ يَابْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ يَا حُجَّةَ اللّٰهِ

कर दीजिए ऐ अबू अब्दुल्लाह। ऐ जाफ़र अ0 बिन मुहम्मद स0 ऐ सच्चाई के पेकर। ऐ रसूलुल्लाह के बेटे ऐ ख़ुदा की सच्ची

عَلٰى خَلْقِهٖ. يَا سَيِّدِنَا وَ مَوْلٰينَا اِنَّا تَوَجَّهْنَا وَ اسْتَشْفَعْنَا.

निशानी ऐ हमारे रास व रईस ऐ सब के सरकार हम ने आप अ0 के क़दमों में आँखे बिछा दी हैं और ख़ुदा से अपनी

وَ تَوَسَّلْنَا بِكَ اِلَى اللّٰهِ وَ قَدَّمْنَاكَ بَيْنَ يَدَیْ حَاجَاتِنَا. يَا

मुरादें हासिल करने के लिए आपकी मदद के खाहां हैं आप ही हमें रब्बे करीम तक पहुंचाने का ज़रिया हैं ऐ दरबार

وَجِيْهًا عِنْدَ اللّٰهِ اشْفَعْ لَنَا عِنْدَ اللّٰهِ. يَا اَبَا الْحَسَنِ يَا مُوْسَى

ख़ालिक़े यकता में बुलन्द व बाला हैसियत रखने वाले आप स ख़ुदाए करीम से हमारी सफ़ारिश कर दीजिए ऐ अबुल

بْنَ جَعْفَرٍ اَيُّهَا الْكَاظِمُ يَابْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ. يَا حُجَّةَ اللّٰهِ عَلٰى

हसन अ0 ऐ मूसा बिन जाफ़र अ0 ऐ नफ़्स की कैफ़यत पर पूरी गिरफ़्त रखने वाले फ़रज़न्दे रसूल स0 काइनात के लिए

خَلْقِهٖ يَا سَيِّدِنَا وَ مَوْلٰينَا. اِنَّا تَوَجَّهْنَا وَ اسْتَشْفَعْنَا وَ

अल्लाह की वाज़ेह दलील हमारे मालिक हमारे मुख़तार आप अ0 की ख़िदमत में हाज़र हैं आप की दस्तगीरी के तालिब

تَوَسَّلْنَا بِكَ اِلَى اللّٰهِ. وَ قَدَّمْنَاكَ بَيْنَ يَدَیْ حَاجَاتِنَا. يَا

और आप अ0 के तवस्सुल के गरवीदा हमने अपने मक़ासिद में कामयाब होने के लिए आप अ0 के साये में पनाह ली

وَجِيْهًا عِنْدَ اللّٰهِ اشْفَعْ لَنَا عِنْدَ اللّٰهِ. يَا اَبَا الْحَسَنِ يَا عَلِيَّ بْنَ

है अल्लाह ने आप को सरफ़राज़ फ़रमाया है आप अ0 ईजद व मुतआल से हमारी सफ़ारिश कर दीजिए। ऐ अबुल हसन

مُوسٰى اَيُّهَا الرِّضَا يَابْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ. يَا حُجَّةَ اللّٰهِ عَلٰى خَلْقِهٖ

ऐ अली बिन मूसा ऐ राज़ी व रज़ा ऐ रसूले ख़ुदा स0 के फ़रज़न्द ऐ सारी मख़लूक के लिए अल्लाह की हुज्जत ऐ हमारे

يَا سَيِّدِنَا وَ مَوْلٰينَا. اِنَّا تَوَجَّهْنَا وَ اسْتَشْفَعْنَا وَ تَوَسَّلْنَا

मुक़्तदा ऐ हमारे बुज़ुर्गवार आप अ0 के आगे सर ख़मीदा हैं आप की इआनत के मुलतजी हैं आप के तवस्सुत के

بِكَ اِلَى اللّٰهِ. وَ قَدَّمْنَاكَ بَيْنَ يَدَىْ حَاجَاتِنَا. يَا وَجِيْهًا

मोहताज अपनी बिगड़ी बनाने के लिए आप अ0 ही को यावर बनाया है ऐ साहते अज़मत इलाही की बा बरकत हस्ती।

عِنْدَ اللّٰهِ اشْفَعْ لَنَا عِنْدَ اللّٰهِ. يَا اَبَا جَعْفَرٍ يَا مُحَمَّدَ بْنَ عَلِيٍّ.

आप अ0 रब्बुल आलमीन से हमारी सफ़ारिश कर दीजिए ऐ अबु जाफ़र अ0 ऐ मुहम्मदिबन अली अ0 ऐ तक़वा की

اَيُّهَا التَّقِيُّ الْجَوَادُ يَابْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ. يَا حُجَّةَ اللّٰهِ عَلٰى خَلْقِهٖ

मिसाल ऐ दरया दिली का मेयार रसूले ख़ुदा के ०परज़न्द। खल्के ख़ुदा के लिए दलीले हक़ ऐ अमीरे उमम ऐ क़ायदे

يَا سَيِّدِنَا وَ مَوْلٰينَا. اِنَّا تَوَجَّهْنَا وَ اسْتَشْفَعْنَا وَ تَوَسَّلْنَا

मोहतरम इस बाइस की हमारी दुआ क़ुबूल हो और हमारी हाजत पुरी हो जाये कमाले अदब और मुंतहाये ख़ुलूस के

بِكَ اِلَى اللّٰهِ. وَ قَدَّمْنَاكَ بَيْنَ يَدَىْ حَاجَاتِنَا. يَا وَجِيْهًا

साथ आप अ0 की ख़िदमत में हाज़र हैं अल्लाह ने आपके दरजे बुलन्द फ़रमाये हैं उस रऊफ़ व रहीमसे हमारी सफ़ारिश

عِنْدَ اللّٰهِ اشْفَعْ لَنَا عِنْدَ اللّٰهِ. يَا اَبَا الْحَسَنِ يَا عَلِيَّ بْنَ مُحَمَّدٍ.

कर दीजिए ऐ अबुल हसन अ0 ऐ अली बिन मुहम्मद अ0 ऐ हादी बरहक़ ऐ फिक्र व अमल की तहारत के नज़हरे

اَيُّهَا الْهَادِى النَّقِيُّ يَابْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ. يَا حُجَّةَ اللّٰهِ عَلٰى خَلْقِهٖ يَا

उमम ऐ फ़रज़न्दे रसूल ऐ हुज्जते ख़ुदा ऐ हमारे सरवर ऐ हमारे सरदार आप अ0 ही से तमाम उम्मीदें वाबरस्ता हैं आप

سَيِّدَنَا وَ مَوْلٰينَا. اِنَّا تَوَجَّهْنَا وَ اسْتَشْفَعْنَا وَ تَوَسَّلْنَا بِكَ

ही हमारी कश्ती को किनारे लगा सकते हैं आप ही हमें ख़ुदा से क़रीब करने का वास्ता हैं और हमारी हाजत रवाई भी

اِلَى اللّٰهِ. وَ قَدَّمْنَاكَ بَيْنَ يَدَىْ حَاجَاتِنَا. يَا وَجِيْهًا عِنْدَ

आप ही की वजह से मुमकिन है ऐ ख़ुदा की बरगुज़ीदा हस्ती आप अ0 ाप परवरदिगार से हमारी सफ़ारिश कर दीजिए

اللّٰهِ اشْفَعْ لَنَا عِنْدَ اللّٰهِ. يَا اَبَا مُحَمَّدٍ يَا حَسَنَ بْنَ عَلِيٍّ. اَيُّهَا

ऐ अबू मुहम्मद स0 ऐ हसन अ0 बिन अली अ0 ऐ ख़ैर व ख़ूबी और जुरात व शुजाअत की तफ़्सीर ऐ रसूले ख़ुदा के

الزَّكِيُّ الْعَسْكَرِيُّ يَابْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ. يَا حُجَّةَ اللّٰهِ عَلٰى خَلْقِهٖ

पुत्र ऐ जहा ंपनाह ऐ सयादते मआब आपही की ख़ाके पा को अपनी आँखों मे लगाया है आप मारे यार व मददगार हैं

يَا سَيِّدَنَا وَ مَوْلٰينَا. اِنَّا تَوَجَّهْنَا وَ اسْتَشْفَعْنَا وَ تَوَسَّلْنَا

आप ही के सबब खुदा हमारी सुनेगा और आप ही के सदक़े में हमारी उम्मीदें बर आयेंगी खुदा ने आप को वजाहत

بِكَ اِلَى اللّٰهِ. وَ قَدَّمْنَاكَ بَيْنَ يَدَىْ حَاجَاتِنَا. يَا وَجِيْهًا

बख़्शी आप उस ख़ालिके यकता से हमारी उम्मीदें बर आयेंगी खुदा ने आप को वजाहत बख़्शी है आप उस ख़ालिके

عِنْدَ اللّٰهِ اشْفَعْ لَنَا عِنْدَ اللّٰهِ. يَا وَصِيَّ الْحَسَنِ وَ الْخَلَفَ

यकता से हमारी सफ़ारिश कर दीजिए ऐ हसन असकरी के जानशीन ऐ मासूम रहनुमा के नायब ऐ ख़ुदा की हुज्जत ऐ

الْحُجَّةَ. اَيُّهَا الْقَآئِمُ الْمُنْتَظَرُ الْمَهْدِيُّ يَابْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ

क़ायम मुंतिज़र ऐ मेहदी मौऊद ऐ ०नबी के नूरे नज़र ऐ खुदा की रौशन दलील ऐ ख़ातिमुल अंबिया के नूरे नज़र ऐ

. يَا حُجَّةَ اللّٰهِ عَلٰى خَلْقِهٖ يَا سَيِّدَنَا وَ مَوْلٰينَا. اِنَّا تَوَجَّهْنَا وَ

खुदा की रौशन दलील ऐ इमामे उमम ऐ रहबर वाला मक़ाम आप ही के लिए हम फ़र्शे राह हैं आप ही की इमदाद के

اسْتَشْفَعْنَا وَ تَوَسَّلْنَا بِكَ اِلَى اللّٰهِ. يَا وَجِيْهًا عِنْدَ اللّٰهِ

तालिब और आप ही से तवस्सुल के ख़ास्तगार हैं ख़ुदा से अपनी हाजतें मांगने के लिए आप ही पर हम आँखे लगाये

اشْفَعْ لَنَا عِنْدَ اللّٰهِ. وَ قَدَّمْنَاكَ بَيْنَ يَدَىْ حَاجَاتِنَا.

हैं ऐ बारगाहे खुदाए मुतआल की मुकर्रम व मोहतरम शिख़्सयत अल्लाह अज़्ज़ व शानहु से हमारी सफ़ारिश कर दीजिए।

फिर अपनी हाजत तलब करें इन्शाअल्लाह पूरी होगी। दूसरी रिवायत में है के इसके बाद पढ़े:

يَا سَادَاتِيْ وَ مَوَالِيَّ اِنِّيْ تَوَجَّهْتُ بِكُمْ اَئِمَّتِيْ. وَ عُدَّتِيْ

ऐ हमारे आक़ाओं ऐ हमारे सरदारों आप ही से हमने तमाम उम्मीदें बांध रखी हैं ऐ हमारी हयातो

لِيَوْمِ فَقْرِيْ وَ حَاجَتِيْ اِلَى اللّٰهِ. وَ تَوَسَّلْتُ بِكُمْ اِلَى اللّٰهِ،

काएनात के रहनुमाओं और फ़क्रो फाक़े के दिनों का ज़ख़ीरा ऐ हमारी बे मायगी में काम आने

وَ اسْتَشْفَعْتُ بِكُمْ اِلَى اللّٰهِ. فَاشْفَعُوْا لِيْ عِنْدَ اللّٰهِ، وَ

वालों अल्लाह के लिए तुम ही को वसीला बनाया है आप ही को अपना शफ़ी माना है आप ख़ुदा

اسْتَنْقِذُونِي مِنْ ذُنُوبِي عِنْدَ اللهِ، فَإِنَّكُمْ وَسِيلَتِي إِلَى اللهِ

की बारगाह में हमारी शफ़ाअत कर दीजिए हमारे गुनाहों को बख़्शवा दीजिए। आप ही हमें नजात

وَبِحُبِّكُمْ وَبِقُرْبِكُمْ. أَرْجُو نَجَاةً مِّنَ اللهِ، فَكُونُوا عِنْدَ اللهِ

दिलाने का ज़रिया हैं और आप ही की मुहब्बत और क़ुरबत से हम रूस्तगारी की तवक़्क़ो रखते

رَجَائِي. يَا سَادَاتِي يَا أَوْلِيَاءَ اللهِ، صَلَّى اللهُ عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ.

हैं हमने आप से आस लगाई है क़ायमत में मायूस न होने दीजिएगा ऐ हमारे सरदारों ऐ अल्लाह के

وَلَعَنَ اللهُ أَعْدَاءَ اللهِ ظَالِمِيهِمْ مِنَ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ.

दोस्तों तुम सब पर उसका दरूद व सलाम और तुम पर सितम ढाने वाले तमाम दुश्नाने ख़ुदा पर

آمِينَ رَبَّ الْعَالَمِينَ.

शुरू से आख़िर तक अल्लाह की लानत। अमीना रब्बुल आलमीन।

दुआ फ़रज

लेखक के अनुसार शेख़ कफ़अमी ने बलदुल अमीन में एक मुफ़स्सल दुआ नक़्ल की है जिसका नाम है दुआ फ़रज और यह दुआ तवस्सुल उसी में नक़्ल की गई है। और मेरा ख़याल है के ख़्वाजा नसीरूद्दीन के दवाज़दा इमाम भी इसी दुआ तवस्सुल से माखूज़ हैं जिनको इस सलवात के साथ जमा कर दिया गया है। जो एक बला॰rग ख़ुतबे में है। और जिसको कफ़अमी ने मिस्बाह के अंत में नक़्ल किया है। और मरहूम सय्यद अली ख़ान ने कलमे तय्यब में कबज़ुल मिस्बाह शेख़ महररती से यह दुआ तवस्सुल इस शरह के साथ नक़्ल की है जिसकी इस स्थान पर गुंजाइश नहीं है। बहर हाल वह दुआ फ़रज यह

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى ابْنَتِهٖ وَعَلٰى ابْنَيْهَا وَاَسْاَلُكَ بِهِمْ

परवरदिगार रहमत नाज़िल फ़र्मा हज़रत मुहम्मद (स) और उनकी दुख़तर और उनके दोनो बेटों पर। मै

اَنْ تُعِيْنَنِى عَلٰى طَاعَتِكَ وَرِضْوَانِكَ وَاَنْ تُبَلِّغَنِى بِهِمْ اَفْضَلَ مَا

उनही के वसीले से दुआ करता हूँ के अपनी इताअत और अपनी मर्जा के हुसूल मे मेरी मदद फ़र्मा, और

بَلَّغْتَ اَحَدًا مِنْ اَوْلِيَائِكَ اِنَّكَ جَوَادٌ كَرِيمٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّى اَسْاَلُكَ

मुझे उस अज़ीम मंज़ल तक पहुँचा दे। जहाँ तूने अपने किसी भी वली को पहुँचाया है। इस लिए के तूही

بِحَقِّ اَمِيرِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلِيِّ بْنِ اَبِى طَالِبٍ عَلَيْهِ السَّلاَمُ اِلَّا انْتَقَمْتَ

जवाद भी है और करिम भी। ख़ुदाया मै तुझसे अमीरूल मोमिनीन अली इबने अबी तालिब (अ) के हक़

بِهٖ مِمَّنْ ظَلَمَنِى وَغَشَمَنِى وَآذَانِى وَانْطَوٰى عَلٰى ذٰلِكَ وَكَفَيْتَنِى بِهٖ

के वास्ते से दुआ करता हूँ के मेरे ऊपर ज़ुल्म करनेवालों और मुझे धोका और आज़ियत देनेवालों और

مَؤُونَةَ كُلِّ اَحَدٍ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَللّٰهُمَّ اِنِّى اَسْاَلُكَ بِحَقِّ وَلِيِّكَ

मुझसे कीना रखनेवालोंसे मेरा इन्तेका०म लेना और हर एक के शर से मुझे महफ़ूज़ रखना ऐ बेहतरीन

عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ عَلَيْهِ السَّلاَمُ اِلَّا كَفَيْتَنِى بِهٖ مَؤُونَةَ كُلِّ شَيْطَانٍ

रहम करनेवाले। ख़ुदाया मै तुझसे सवाल करता हूँ तेरे वली अली इबनुल हुसैन (अ) के हक के वास्ते

مَرِيدٍ وَسُلْطَانٍ عَنِيدٍ يَتَقَوّٰى عَلَىَّ بِبَطْشِهٖ وَيَنْتَصِرُ عَلَىَّ بِجُنْدِهٖ

से के तू मुझे शर्रे शैतान और दुश्मन सुलतान के शर से बचा लेना, जो मुझपर किसी तरह भी हमला कर

اِنَّكَ جَوَادٌ كَرِيمٌ يَا وَهَّابُ اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَسْاَلُكَ بِحَقِّ وَلِيِّكَ مُحَمَّدِ

सकता है, और अपने लशकरों को मेरे ख़िलाफ़ खड़ा कर सकता है, इस लिए के तू जवाद व करीम भी है

بْنِ عَلِيٍّ وَجَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِمَا السَّلاَمُ اِلَّا اَعَنْتَنِي بِهِمَا عَلٰى اَمْرِ

और अता करने वाला भी। ख़ुदाया मै तुझसे सवाल करता हूँ हज़रत मुहम्मद बिन अली (अ) और जाफ़र

آخِرَتِي بِطَاعَتِكَ وَرِضْوَانِكَ وَبَلَّغْتَنِي بِهِمَا مَا يُرْضِيكَ اِنَّكَ فَعَّالٌ

बिन मुहम्मद (अ) के हक़ के वास्ते से मेरी मदद फ़र्मा। मेरे उमूरे आख़िरत मे अपनी इताअत और मर्ज़ी

لِمَا تُرِيدُ اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَسْاَلُكَ بِحَقِّ وَلِيِّكَ مُوسٰى بْنِ جَعْفَرٍ عَلَيْهِ

के ज़रिए, और मुझे अपनी मंज़िले रज़ा तक पहुँचा देना के तू जो चाहे वो कर सकता है। ख़ुदाया मै तुझसे

السَّلاَمُ اِلَّا عَافَيْتَنِي بِهِ فِي جَمِيعِ جَوَارِحِي مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ

सवाल करता हूँ तेरे वली मूसा बिन जाफ़र (अ) के हक़ के वास्ते से के मुझे तमाम आज़ा व जवारे मे

يَا جَوَادُ يَا كَرِيمُ اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَسْاَلُكَ بِحَقِّ وَلِيِّكَ الرِّضَا عَلِيِّ بْنِ

ज़ाहिर व बातिन सबसे आफ़ियत फ़र्मा, ऐ जवाद ऐ करीम। ख़ुदाया मै तुझसे सवाल करता हूँ तेरे वली

مُوسٰى عَلَيْهِ السَّلاَمُ اِلَّا سَلَّمْتَنِي بِهِ فِي جَمِيعِ اَسْفَارِي فِي الْبَرَارِي

अली इब्ने मूसा रज़ा (अ) के हक़ के वास्ते से के मुझे सैहरा मे दरया मे पहाड़ों पर बयाबानों मे वादियों

وَالْبِحَارِ وَالْجِبَالِ وَالْقِفَارِ وَ الْاَوْدِيَةِ وَالْغِيَاضِ مِنْ جَمِيعِ مَا

मे हर जगह हर सफ़र मे इन तमाम चीजों से महफ़ूज बनाए रखना जिनका ख़ौफ़ मेरे दिल मे पाया जाता

اَخَافُهُ وَاَحْذَرُهُ اِنَّكَ رَؤُوفٌ رَحِيمٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَسْاَلُكَ بِحَقِّ

है इसलिए के तू मेहेरबान भी है और करम करनेवाला भी है। ख़ुदा मै तुझसे सवाल करता हूँ तेरे वली

وَلِيِّكَ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ عَلَيْهِ السَّلاَمُ اِلَّا جُدْتَ بِهِ عَلَيَّ مِنْ فَضْلِكَ

हज़रत मुहम्मद बिन अली (अ) के हक़ के वास्ते से के अपने फ़ज़्लो करम से मुझपर मेहेरबानी फ़र्माना

وَتَفَضَّلْتَ بِهِ عَلَيَّ مِنْ وُسْعِكَ وَوَسَّعْتَ عَلَيَّ رِزْقَكَ وَاَغْنَيْتَنِي

और वुसअते रहमत इनायत फ़रमाना। मेरे रिज़्क़ को वसी बना देना अपने अलावा सबसे बेनियाज़ बना

عَمَّنْ سِوَاكَ وَجَعَلْتَ حَاجَتِي اِلَيْكَ وَقَضَاءَهَا عَلَيْكَ اِنَّكَ لِمَا

देना। मेरी हाजतों और उनकी बरआवरी को अपने ही ज़िम्मे रखना के तू जो चाहे कर सहता है। ख़ुदाया

تَشَاءُ قَدِيرٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَسْاَلُكَ بِحَقِّ وَلِيِّكَ عَلِيِّ بْنِ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِمَا

मै तुझसे सवाल करता हूँ तेरे वली हज़रत अली इब्ने मुहम्मद (अ) के हक़ के वास्ते से के मेरी मदद

السَّلاَمُ اِلَّا اَعَنْتَنِي بِهِ عَلٰى تَادِيَةِ فُرُوضِكَ وَبِرِّ اِخْوَانِيَ الْمُؤْمِنِينَ

करना फ़राएज़ को अदा करने मे और बिरादराने मोमिन के साथ नेक बरताओ करने मे। इन मसाएल

وَسَهِّلْ ذٰلِكَ لِي وَاقْرُنْهُ بِالْخَيْرِ وَاَعِنِّي عَلٰى طَاعَتِكَ بِفَضْلِكَ يَا

को मेरे लिए आसान करदे और मुझे ख़ैर अता फ़र्मा अपनी इताअत पर अपने फ़ज़्ल से मेरी मदद फ़र्मा ऐ

رَحِيمُ اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَسْاَلُكَ بِحَقِّ وَلِيِّكَ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ عَلَيْهِمَا

मेहेरबानी करनेवाले। ख़ुदाया मै तुझसे सवाल करता हूँ तेरे वली हज़रत हसन बिन अली (अ) के हक़ के

السَّلاَمُ اِلَّا اَعَنْتَنِی بِہٖ عَلٰی اَمْرِ آخِرَتِی بِطَاعَتِكَ وَرِضْوَانِكَ

वास्ते से के तू उमूरे आाख़िरत मे मेरी मदद फ़र्मा अपनी इताअत और रज़ा के ज़रिए और मुझे आख़िरत

وَسَرَرْتَنِی فِی مُنْقَلَبِی وَمَثْوَایَ بِرَحْمَتِكَ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ اَللّٰهُمَّ

मे अपनी रहमत से सुरूर अता फ़रमाना ऐ बेहतरीन रहेम करने वाले। ख़ुदाया मै तुझसे सवाल करता हूँ

اِنِّی اَسْاَلُكَ بِحَقِّ وَلِیِّكَ وَحُجَّتِكَ صَاحِبِ الزَّمَانِ عَلَیْهِ السَّلاَمُ اِلَّا

तेरे वली साहिबुज़्ज़मान (अ) के हक़ के वास्ते से के मेरी तमाम उमूर मे मदद करना और मुझे हर मूज़ी

اَعَنْتَنِی بِہٖ عَلٰی جَمِیعِ اُمُورِی وَكَفَیْتَنِی بِہٖ مَؤُونَةَ كُلِّ مُؤْذٍ وَطَاغٍ

ताग़ी व बाग़ी के शर से महफ़ूज़ रखना और मेरी मदद करना के बेपनाह ख़स्ता हाल हो चुका हूँ और मुझे

وَبَاغٍ وَاَعَنْتَنِی بِہٖ فَقَدْ بَلَغَ مَجْهُودِی وَكَفَیْتَنِی بِہٖ كُلَّ عَدُوٍّ وَهَمٍّ

हर दुश्मन हर हमो ग़म और हर मर्ज़ से बचा लेना और मुझसे और मेरी औलाद से और मेरे तमाम अहल

وَغَمٍّ وَدَیْنٍ وَعَنِّی وَعَنْ وُلْدِی وَجَمِیعِ اَهْلِی وَاِخْوَانِی وَمَنْ یَعْنِینِی

और बिरादरान से और जिनके मसाएल का मै ज़िम्मेदार हूँ और जो मेरे ख़वास हैं सबसे ज़ालिमों के शर

اَمْرُهُ وَخَاصَّتِی آمِیْنَ رَبَّ الْعَالَمِیْنَ

को दूर फ़र्मा देना, आमीन या रब्बल आलमीन।

ग़म दूर करने की दुआ

शेख़ कफ़अमी ने बलदुल अमीन में अमीरूल मोमिनीन (अ) से एक दुआ नक़्ल की है के जो भी रंजीदा परेशान हाल महज़ून गिरफ़तारे मसाएल ख़ौफ़ज़दा इसको पढ़ेगा उसको मुसीबत से नजात मिलेगी। उसके बाद हाजत तलब करें।

يَا عِمَادَ مَنْ لَا عِمَادَ لَهُ وَيَا ذُخْرَ مَنْ لَا ذُخْرَ لَهُ وَيَا سَنَدَ مَنْ لَا سَنَدَ

ऐ वो जो हर बेसहारे का सहारा हर बे ज़ख़ीरे का ज़ख़ीरा हर बे सनद के लए सनद हर बे पनाह के लिए

لَهُ وَيَا حِرْزَ مَنْ لَا حِرْزَ لَهُ وَيَا غِيَاثَ مَنْ لَا غِيَاثَ لَهُ وَيَا كَنْزَ مَنْ

पनाहगाह हर बे वसीले के लिए फ़रयादरस हर ख़ाली हाथ के लिए ख़ज़ाना और हर कमज़ोर के लिए

لَا كَنْزَ لَهُ وَيَا عِزَّ مَنْ لَا عِزَّ لَهُ يَا كَرِيمَ الْعَفْوِ يَا حَسَنَ التَّجَاوُزِ يَا

इज़्ज़त है। ऐ बेहतरीन माफ़ करने वाले और बेहतरीन दरगुज़र करने वाले ऐ कमज़ोरों के मददगार ऐ

عَوْنَ الضُّعَفَاءِ يَا كَنْزَ الْفُقَرَاءِ يَا عَظِيمَ الرَّجَاءِ يَا مُنْقِذَ الْغَرْقَى

फ़क़ीरों के ख़ज़ाने ऐ अज़ीम मरकज़े उम्मीद ऐ डूबने वालों को बचाने वाले हलाक होने वालों को नजात

يَا مُنْجِيَ الْهَلْكَى يَا مُحْسِنُ يَا مُجْمِلُ يَا مُنْعِمُ يَا مُفْضِلُ أَنْتَ الَّذِي

देने वाले बेहतरीन बरताओ करने वाले अहसान करने वाल नेमत देने वाले फ़ज़्लो करम करने वाले तू

سَجَدَ لَكَ سَوَادُ اللَّيْلِ وَنُورُ النَّهَارِ وَضَوْءُ الْقَمَرِ وَشُعَاعُ الشَّمْسِ

ही वह है जिसके सामने रात की सिहाई दिन की रौशनी चँद की चमक सूरज की शोआएं पेड़ों की आवाज़ें

وَحَفِيفُ الشَّجَرِ وَدَوِيُّ الْمَاءِ يَا اللّٰهُ يَا اللّٰهُ يَا اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ

पानी का ज़मज़मा सभी सजदा रेज़ हैं। ऐ अल्लाह, ऐ अल्लाह, ऐ अल्लाह, तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही है। तू

وَحْدَكَ لَا شَرِيكَ لَكَ يَا رَبَّاهُ يَا اللّٰهُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَافْعَلْ

अकेला है तेरा कोई शरीक नही है। ऐ परवरदिगार, ऐ अल्लाह, मुहम्मदो आल मुहम्मद पर रहमत नाज़ल

بِنَا مَا اَنْتَ اَهْلُه

फ़रमा और हमारे साथ वो बरताव कर जिसका तू अहल है।

लेखक के अनुसार रंजो ग़म और गिरफ़तारी को दूर करने के लिए इस ज़िक्र की पाबंदी भी बहुत मुफ़ीद है जो इमामे जवाद (अ) ने सिखाई है।

يَا مَنْ يَكْفِي مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَلَا يَكْفِي مِنْهُ شَيْءٌ اِكْفِنِي مَا

ऐ वो जो हर चीज़ से बचाता है और जिस से कोई चा०rज बचा नही सकती। मुझको बचा ले उस से जिस

اَهَمَّنِي

ने मुझे ग़मग़ीन किया है।

हिर्ज़े ज़हरा

क़ैद से आज़ादी की दुआ

सय्यद बिन ताऊस ने मोहिज्जुद दाअवात में फ़रमाया है कि रिवायत में वारिद हुआ है के एक व्यक्ति एक मुद्दत तक शाम में गिरफ़तार था तो उसने जनाबे फ़ातेमा (स) को ख़्वाब में देखा के आपने फ़रमाया के यह दुआ

पढ़ो। चुनांचे उसने इस दुआ को पढ़ा और क़ैद से आज़ाद हो कर अपने घर चला गया। दुआ यह है:

اَللّٰهُمَّ بِحَقِّ الْعَرْشِ وَمنْ عَلاَهُ وَبِحَقِّ الْوَحْيِ وَمَنْ اَوْحَاهُ وَبِحَقِّ

ख़ुदाया अर्श और साहिबे अर्श का वास्ता, वही और वही नाज़ल करने वाले के हक़ का वास्ता।

النَّبِيِّ وَمَنْ نَبَّاهُ وَبِحَقِّ الْبَيْتِ وَمَنْ بَنَاهُ يَا سَامِعَ كُلِّ صَوْتٍ

पैग़मबर ए इस्लाम और उन को पैग़मबर बनाने वाले के हक़ का वास्ता, ख़ाना ए काबा और उस

يَا جَامِعَ كُلِّ فَوْتٍ يَا بَارِءَ النُّفُوسِ بَعْدَ الْمَوْتِ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

के मेअमार का वास्ता, ऐ हर आवाज़ के सुनने वाले, हर गुमशुदा के जमा करने वाले मौत के बाद

وَاَهْلِ بَيْتِهِ وآتِنَا وَجَمِيعَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ فِي مَشَارِقِ

ज़िंदगी देने वाले, मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और हमें और तमाम मोमिन

الاَرْضِ وَمَغَارِبِهَا فَرَجًا مِنْ عِنْدِكَ عَاجِلًا بِشَهَادَةِ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا

व मोमिनात को श०र्क व ग़र्बे आलम मे कशाएश हाल फ़ौरन अता फ़र्मा। तुझे वास्ता ला इलाह

اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُولُكَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَعَلٰى ذُرِّيَّتِهِ

इल्लल्लाह और मुहम्मदन रसूलअल्लाह की शहादत का। तेरी रहमत पैग़मबर और उन की आल ए

الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ وَسَلَّمَ تَسْلِيمًا كَثِيرًا

तय्यबीन व ताहेरीन पर और उन सब पर तेरा बेहिसाब सलाम।

दुआ नूर

सय्यद बिन ताऊस ने मोहिज्जुद दाअवात में सलमान से एक रिवायत नक़्ल की है के जिसका ख़ुलासा यह है के हज़रते फ़ातेमा (स) ने मुझे रसूले अक्रम (स) से हाससिल किये हुए कलाम की तालीम दी। के इसे सुबह शाम पढ़ा जाए और फ़रमाया के अगर चाहते हो के कभी बुख़ार न आए तो इस दुआ को पाबंदी से पढ़ा करो:

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ख़ुदा के नाम से जो रहमान व रहीम है।

بِسْمِ اللهِ النُّوْرِ بِسْمِ اللهِ نُوْرِ النُّوْرِ بِسْمِ اللهِ نُوْرٌ عَلٰى

अल्लाह के नाम से जो नूर है, अल्लाह के नाम से जो नूरूल अन्वार है। अल्लाह के नाम से जो नूर

نُوْرٍ بِسْمِ اللهِ الَّذِىْ هُوَ مُدَبِّرُ الْاُمُوْرِ بِسْمِ اللهِ الَّذِىْ

ए अला नूर है, अल्लाह के नाम से जो अमूर की तदबीर करने वाला है। अल्लाह के नाम से जिस

خَلَقَ النُّوْرَ مِنَ النُّوْرِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ خَلَقَ النُّوْرَ مِنَ

ने नूर को नूर बानाया है। सारी हम्द इस अललाह के लिए है जिस ने नूर को नूर बनाया और नूर

النُّوْرِ وَ اَنْزَلَ النُّوْرَ عَلَى الطُّوْرِ فِىْ كِتَابٍ مَسْطُوْرٍ. فِىْ

को तूर पर उतारा। किताबे तौरैत की शक्ल में जो फैले हुए सहा◌ॉrफा में थी और मख़सूस मिक़दार

رَقٍّ مَنْشُوْرٍ بِقَدَرٍ مَقْدُوْرٍ عَلٰى نَبِىٍّ مَحْبُوْرٍ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

के साथ थी और उस को अपने नेक पैग़ामबर मूसा पर उतारा। सारी हम्द इस अल्लाह के लिए है

الَّذِیْ هُوَ بِالْعِزِّ مَذْكُوْرٌ وَ بِالْفَخْرِ مَشْهُوْرٌ وَ عَلَى السَّرَّآءِ

जिस का ज़िक्र इज़्ज़त के साथ होता है और जिस की शोहरत फ़ख़्र के साथ है। वो हर सहूलत

وَ الضَّرَّآءِ مَشْكُوْرٌ وَ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ آلِهِ

और परेशानी में क़ाबिले शुक्र है। अल्लाह हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद और उनकी आले ताहेरीन

الطَّاهِرِيْنَ

पर रहमत नाज़ल करे।

सलमान कहते हैं जब मैंने हज़रत फ़ातेमा (स) से इस दुआ को हासिल किया तो ख़ुदा गवाह है के अहले मक्का व मदीना के एक हज़ार से ज़्यादा व्यक्ति जो बुख़ार में मुब्तेला थे मैंने उनको सिखाई और हुक्मे ख़ुदा से सब शिफ़ायाब हो गए।

हिर्ज़े ज़ैनुल आबिदीन

सय्यद बिन ताऊस ने मोहिज्जुद दावात के दो जगहों पर इस हिर्ज़ को इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ) से नक़्ल किया है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ يَا اَسْمَعَ السَّامِعِيْنَ يَا اَبْصَرَ

ख़ुदा के नाम से जो रहमान व रहीम है। ऐ सब से ज़्यादा सुनने वाले और सब से ज़्यादा देखने

النَّاظِرِيْنَ يَا اَسْرَعَ الْحَاسِبِيْنَ يَا اَحْكَمَ الْحَاكِمِيْنَ يَا خَالِقَ

वाले। सब से तेज़ हिसाब करने वाले, सब से बेहतर फ़ैसला करने वाले, ऐ मख़लुक़ात के

الْمَخْلُوقِيْنَ يَا رَازِقَ الْمَرْزُوقِيْنَ يَا نَاصِرَ الْمَنْصُورِينَ يَا اَرْحَمَ

ख़ालिक़, ऐ मोहताजों के राज़क़, ऐ कमज़ोरों के मददगार ऐ बेहतरीन रहम करने वाले, ऐ

الرَّاحِمِيْنَ يَا دَلِيلَ الْمُتَحَيِّرِيْنَ يَا غِيَاثَ الْمُسْتَغِيثِيْنَ اَغِثْنِى

परेशान हालों की रहनुमाई करने वाले, ऐ फ़र्यादियों के फ़र्यादरस मेरी फ़रयाद को पहोच ऐ

يَا مَالِكَ يَوْمِ الدِّينِ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِينُ يَا صَرِيخَ

क़यामत के दिन के मालिक। मै तेरी ही इबादत करता हूँ और तुझ ही से मदद चाहता हूँ।

الْمَكْرُوبِيْنَ يَا مُجِيبَ دَعْوَةِ الْمُضْطَرِّيْنَ اَنْتَ اللّٰهُ رَبُّ الْعَالَمِيْنَ

ऐ रंजीदा लोगोंके फ़रयादरस ऐ मुज़्तर लोगों की दुआ को क़ुबूल करने वाले तू ही ख़ुदा ए

اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِينُ اَلْكِبْرِيَاءُ رِدَاؤُكَ

रब्बुल आलामीन है। तू वो ख़ुदा है जिसके अलावा कोई ख़ुदा नही है। तू बादशाहे बरहक़ व

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ الْمُصْطَفٰى وَعَلٰى عَلِيٍّ الْمُرْتَضٰى وَفَاطِمَةَ

आशकार है। किब्राई तेरी रिदा है। ख़ुदाया हज़रत मुहम्मदे मुस्तफ़ा (स), अलीए मुर्तज़ा (अ),

الزَّهْرَاءِ وَخَدِيجَةَ الْكُبْرٰى وَالْحَسَنِ الْمُجْتَبٰى وَالْحُسَيْنِ الشَّهِيدِ

फ़ातिमा ज़हरा (अ), ख़दीजा कुब्रा, हसन मुजतबा (अ), हुसैन शहीदे करबला (अ), अली इब्न

بِكَرْبَلاَءَ وَعَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ زَيْنِ الْعَابِدِيْنَ وَمُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ الْبَاقِرِ

हुसैन (अ), ज़ैनुल आबेदीन (अ), मुहम्मद बिन अला (अ)r बाक़र, जाफ़र बिन मुहम्मद (अ)

وَجَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ الصَّادِقِ وَمُوسَى بْنِ جَعْفَرٍ الْكَاظِمِ وَعَلِيِّ بْنِ

सादिक़, मूसा बिन जाफ़र (अ) काज़म, अली बिन मूसा (अ) अर्रिज़ा, मुहम्मद बिन अली (अ)

مُوسَى الرِّضَا وَمُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ التَّقِيِّ وَعَلِيِّ بْنِ مُحَمَّدٍ النَّقِيِّ وَالْحَسَنِ

तक़ी अली बिन मुहम्मद (अ) नक़ी, हसन बिन अली (अ) अस्करी, हुज्ज़त ए क़ायम महदी

بْنِ عَلِيٍّ الْعَسْكَرِيِّ وَالْحُجَّةِ الْقَائِمِ الْمَهْدِيِّ الْإِمَامِ الْمُنْتَظَرِ

सलवातुल्लाह अलैहिम पर रहमत नाज़ल फ़र्मा। ख़ुदाया उन के दोस्तों से मोहब्बत फ़र्मा, उन के

صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ اَللَّهُمَّ وَالِ مَنْ وَالَاهُمْ وَعَادِ مَنْ

दुश्मनों से अदावत फ़र्मा। उन के मददगारों की मदद फ़र्मा। उन्हें छो ड़ देने वालों को छोड़ दे।

عَادَاهُمْ وَانْصُرْ مَنْ نَصَرَهُمْ وَاخْذُلْ مَنْ خَذَلَهُمْ وَالْعَنْ مَنْ

उन के ज़ालिमों पर लानत फ़र्मा। आले मुहम्मद (स) के ज़हूर में उजलत फ़र्मा। उन के चाहने

ظَلَمَهُمْ وَعَجِّلْ فَرَجَ آلِ مُحَمَّدٍ وَانْصُرْ شِيعَةَ آلِ مُحَمَّدٍ وَاَهْلِكْ

वालों की मदद फ़र्मा और हमें क़ाएमे आले मुहम्मद (स) कि ज़ियारत नसीब फर्मा और उनके

اَعْدَاءَ آلِ مُحَمَّدٍ وَارْزُقْنِي رُؤْيَةَ قَائِمِ آلِ مُحَمَّدٍ وَاجْعَلْنِي مِنْ

इत्तबा और पैरोकारों में शामिल कर। उन के आमाल से राज़ी रहने वालों में क़रार दे, अपनी

اَتْبَاعِهِ وَاَشْيَاعِهِ وَالرَّاضِينَ بِفِعْلِهِ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ

रहमत के सहारे ऐ अरहमुर्राहेमीन।

सातवें:

दुआ ज़ैनुल आबिदीन (अ)

इमाम ज़ैनुल आबिदीन (अ) की तुरंत क़ुबूल होनेवाली दुआ।
शेख़ कफ़अमी ने बलदुल अमीन में एक दुआ हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन (अ) से नक़्ल की है, और फ़रमाया है के इस दुआ को मकातिब बिन सुलैमान ने हज़रत से नक़्ल किया है। और यह कहा है के अगर कोई व्यक्ति इसे सौ बार पढ़े और उसकी दुआ मुस्तेजाब न हो तो उसे हक़ है के मुझ पर लान करे। दुआ यह है:

اِلٰهِى كَيْفَ اَدْعُوكَ وَاَنَا اَنَا وَ كَيْفَ اَقْطَعُ رَجَائِى مِنْكَ

ख़ुदाया मैं कैसे तुझे पुकारूँ जब के मेरी औक़ात मालूम है और कैसे तुझ से उम्मीद क़तअ कर

وَاَنْتَ اَنْتَ اِلٰهِى اِذَا لَمْ اَسْأَلْكَ فَتُعْطِيَنِى فَمَنْ ذَا الَّذِى

लूँ जब के तेरा करम भी मालूम है। ख़ुदाया जब मैं तुझ से सवाल नहीं करता हूँ तब भी तू अता

اَسْأَلُهُ فَيُعْطِيَنِى اِلٰهِى اِذَا لَمْ اَدْعُكَ فَتَسْتَجِيبَ لِى فَمَنْ

कर देता है और कौन ऐसा है जो सवाल करने पर अता कर दे। मैं जब तुझे नाहीं पुकारता हूँ जब

ذَا الَّذِى اَدْعُوهُ فَيَسْتَجِيبَ لِى اِلٰهِى اِذَا لَمْ اَتَضَرَّعْ اِلَيْكَ

भी तू क़ुबूल कर लेता है। तो कौन ऐसा है जिस से दुआ करूँ और क़ुबूल कर ले। ख़ुदाया जब

فَتَرْحَمَنِى فَمَنْ ذَا الَّذِى اَتَضَرَّعُ اِلَيْهِ فَيَرْحَمَنِى اِلٰهِى فَكَمَا

मैं तुझ से फ़र्याद नही करता हूँ जब भी तू रहम कर देता है तो कौन ऐसा है जिस से फ़र्याद करूँ तो

فَلَقْتَ الْبَحْرَ لِمُوسٰى عَلَيْهِ السَّلاَمُ وَنَجَّيْتَهُ اَسْاَلُكَ اَنْ

वो रहम करदे। ख़ुदाया जिस तरह तूने दरया को मूसा (अ) के लिए शिगाफ़ता कर के उन्हें नजात

تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ واَنْ تُنَجِّيَنِي مِمَّا اَنَا فِيْهِ وَتُفَرِّجَ

दी है। अब मेरा सवाल ये है के मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और मुझे भी

عَنِّي فَرَجًا عَاجِلًا غَيْرَ آجِلٍ بِفَضْلِكَ وَرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ

उन मुसीबतों से नजात देदे और बहुत जल्द बिला किसी ताख़ीर कशाएशे हाल अता फ़र्मा अपने

الرَّاحِمِيْنَ

फ़ज़्ल व करम से ऐ बेहतरीन महरबानी करने वाले।

आठवें:

दुआ जिब्राईल

एक दुआ जो जिब्राईल ने रसूले ख़ुदा को सिखाई:
सय्यद बिन ताऊस ने मोहिज्जुद दावात में इमाम मोहम्मद बाक़र (अ) से रिवायत की है के आप ने फ़रमाया के जिब्राईल पैंगम्बरे इस्लाम की ख़िदमत में ख़ुदा का पैग़ाम लाए के मुझे आप से ज़्यादा कोई पैग़म्बर महबूब नहीं है लेहाज़ा आप इस विर्द को बराबर दोहराते रहें:

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ تَرٰى وَلَا تُرٰى وَاَنْتَ بِالْمَنْظَرِ الْاَعْلٰى وَاَنَّ

ख़ुदाया तू देखता है और तुझे कोई नहीं देखता है। तू बुलंदतरीन मंज़ल पर है। तेरी तरफ़

اِلَيْكَ الْمُنْتَهٰى وَالرُّجْعٰى وَاَنَّ لَكَ الْاٰخِرَةَ وَالْاُولٰى

इनतेहा है और तेरी ही तरफ़ बाज़गश्त है दुनिया व आख़िरत दोनों तेरे लिए हैं। मौत व

وَاَنَّ لَكَ الْمَمَاتَ وَالْمَحْيَا وَرَبِّ اَعُوذُ بِكَ اَنْ اُذَلَّ اَوْ

हयात तेरे इख़तियार में है ख़ुदाया मैं इस बात से पनाह चाहता हूँ के मैं ज़लील या रूस्वा हो

اُخْزٰ

जाऊँ।

नवें:

दुआ मूसा काज़म (अ)

इमाम मूसा काज़म (अ) की तुरंत कुबूल होनेवाली दुआ:
कफ़अमी ने बलदुल अमीन में इमाम मूसा काज़म (अ) से यह दुआ नक़्ल की है और उसे अज़ीमुश शान और सरीउल इजाबत क़रार दिया है। और वह दुआ यह है:

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَطَعْتُكَ فِىْ اَحَبِّ الْاَشْيَاءِ اِلَيْكَ وَهُوَ

ख़ुदाया मैं ने तेरे महबूबतरीन चीज़ों में तेरी इताअत की है जिस का नाम है तौहीद और तेरी

التَّوْحِيدُ وَلَمْ اَعْصِكَ فِي اَبْغَضِ الاَشْيَاءِ اِلَيْكَ وَهُوَ

बदतरीन और नापसंदीदा शै में तेरी नाफ़र्मानी नहीं की है जिस का नाम है कु०ा। लेहाज़ा इन

الْكُفْرُ فَاغْفِرْ لِي مَا بَيْنَهُمَا يَا مَنْ اِلَيْهِ مَفَرِّي آمِنِّي مِمَّا

दोनों के दरमियान जो कुछ भी है उसे माफ़ कर दे के मेरी फ़र्याद तेरी तरफ़ है। मुझे क़यामत

فَزِعْتُ مِنْهُ اِلَيْكَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيَ الْكَثِيرَ مِنْ مَعَاصِيكَ

के दिन के ख़ौफ से अमान दे दे। ख़ुदाया मेरे बेपनाह गुनाहों को माफ़ कर दे और मेरी थोड़ी

وَاقْبَلْ مِنِّيَ الْيَسِيرَ مِنْ طَاعَتِكَ يَا عُدَّتِي دُونَ الْعُدَدِ وَيَا

सी इताअत को क़ुबूल कर ले ऐ तमाम सहारों के मुक़ाबले में मेरे सहारे। ऐ मेरी मंज़ले उम्मीद

رَجَائِي وَالْمُعْتَمَدُ وَيَا كَهْفِي وَالسَّنَدُ وَيَا وَاحِدُ يَا اَحَدُ

व एतेमाद। ऐ मेरी पनाहगाह और मेरे मोतमिद। ऐ ख़ुदा ए वाहिदो अहद। वो ख़ुदाए अहद है।

يَا قُلْ هُوَ اللهُ اَحَدٌ اللهُ الصَّمَدُ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ

बेनियाज़ है। न इस का कोई बाप है न बेटा है, न कोई कफ़ू और हमसर है। मैं तुझ से उन लोगों

يَكُنْ لَهُ كُفُوًا اَحَدٌ اَسْأَلُكَ بِحَقِّ مَنِ اصْطَفَيْتَهُمْ مِنْ

के हक़ के वास्ते से सवाल करता हूँ जिन को तू ने मख़लुक़ात में मुस्तफ़ा बनाया है और उन का

خَلْقِكَ وَلَمْ تَجْعَلْ فِي خَلْقِكَ مِثْلَهُمْ اَحَدًا اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى

जैसा कोई नहीं बनाया है के मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और हमारे साथ

مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَتَفْعَلَ بِي مَا أَنْتَ أَهْلُهُ اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ

वो बरताव करना जिसका तू अहल है। ख़ुदाया मैं तुझ से वहदा नियते कुब्रा और मुहम्मदियत

بِالْوَحْدَانِيَّةِ الْكُبْرٰى وَالْمُحَمَّدِيَّةِ الْبَيْضَاءِ وَالْعَلَوِيَّةِ

दरख़शंदा और अलवियत बुलंद मरतबे के वसीले से और उन तमाम चीज़ों के वसीले से जिन

الْعُلْيَا وَبِجَمِيعِ مَا احْتَجَجْتَ بِهِ عَلٰى عِبَادِكَ وَبِالْاِسْمِ

के ज़रिए तू ने बंदों पर अपनी हुज्जत तमाम की और उस नाम के वास्ते से जिस को अपनी

الَّذِي حَجَبْتَهُ عَنْ خَلْقِكَ فَلَمْ يَخْرُجْ مِنْكَ إِلَّا إِلَيْكَ

मख़लूक़ात से पोशीदा रखा है और तेरे अलावा किसी को नहीं मालूम है ये सवाल करता हूँ के

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَاجْعَلْ لِي مِنْ أَمْرِي فَرَجًا وَمَخْرَجًا

मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और मुझे कशाइश अता फर्मा और ऐसी जगह

وَارْزُقْنِي مِنْ حَيْثُ أَحْتَسِبُ وَمِنْ حَيْثُ لَا أَحْتَسِبُ

से रिज़्क अता फर्मा जो मेरे गुमान में हो या मेरे गुमान में भी न हो इस लिए के तू जिस को चाहे

إِنَّكَ تَرْزُقُ مَنْ تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَا

रिज़्क बेहिसाब दे सकता है।

उसके बाद अपनी हाजत तलब करे:
दसवें:

दुआ अल-अम्न

अम्न व अमान की दुआ:
कफ़अमी ने मिसबाह में यह दुआ नक़्ल की है और फ़रमाया है कि सय्यद बिन ताऊस ने यह दुआ सुलताने ज़ालिम, बला, फ़क्रो फ़ाक़ा, तंगी, सीने से हिफ़ाज़त के लिए ज़िक्र की है। और यह सहा॰rफा सज्जादिया की दुआ है। लेहाज़ा जब भी किसी ज़रर का अंदेशा हो इस दुआ की तिलावत करनी चाहिए। दुआ यह है:

يَا مَنْ تُحَلُّ بِهٖ عُقَدُ الْمَكَارِهِ وَ يَا مَنْ يُفْثَأُ بِهٖ حَدُّ

ऐ वो परवर्दिगार जिस के ज़रिये दुश्वारियों में गिराहें खुल जाती हैं। ऐ वो ख़ुदा जिस से शदायत

الشَّدَآئِدِ وَ يَا مَنْ يُلْتَمَسُ مِنْهُ الْمَخْرَجُ اِلٰى رَوْحِ

की तेजी कुंद हो जाती है। ऐ वो ख़ुदा जिस से कशाइशे हाल की तरफ़ जाने की इल्तेमास

الْفَرَجِ ذَلَّتْ لِقُدْرَتِكَ الصِّعَابُ وَ تَسَبَّبَتْ بِلُطْفِكَ

की जाती है। तेरी क़ुद्रत के सामने सख़तियाँ नर्म हो गई हैं और तेरे लुत्फ़ से अज़्बाब फ़रहम

الْاَسْبَابُ وَ جَرٰى بِقُدْرَتِكَ الْقَضَآءُ وَ مَضَتْ عَلٰى

हो गए हैं। तेरी क़ुद्रत से कज़ा जारी होती है और तेरे ही इरादे से तमाम चीज़ें चलती हैं। सब

اِرَادَتِكَ الْاَشْيَآءُ فَهِيَ بِمَشِيَّتِكَ دُوْنَ قَوْلِكَ مُؤْتَمِرَةٌ وَ

तेरी मशियत के सामने बग़ैर कहे इताअत गुज़ार हैं और तेरे इरादे के सामने बग़ैर रोके रूके

بِإِرَادَتِكَ دُونَ نَهْيِكَ مُنْزَجِرَةٌ اَنْتَ الْمَدْعُوُّ لِلْمُهِمَّاتِ وَ

हुए हैं। तू हर मोहिम में क़ाबिले दुआ है और हर मुश्किल में पनाहगाह है। कोई मुश्किल तेरे

اَنْتَ الْمَفْزَعُ فِي الْمُلِمَّاتِ لَا يَنْدَفِعُ مِنْهَا اِلَّا مَا دَفَعْتَ

बग़ैर दफ़ा नहीं हो सकती है और कोई मुसीबत तेरे बगैर दूर नहीं हो सकती। इस वक़्त मुझ

وَلَا يَنْكَشِفُ مِنْهَا اِلَّا مَا كَشَفْتَ وَقَدْ نَزَلَ بِي يَا رَبِّ مَا

पर वो मुसीबत नाज़ल हुई है जिस की संगीनी ने मुझे थका दिया है और जिसके बोझ ने मुझे

قَدْ تَكَاَدَّنِي ثِقْلُهُ وَ اَلَمَّ بِي مَا قَدْ بَهَظَنِي حَمْلُهُ وَبِقُدْرَتِكَ

ख़स्ताहाल बना दिया है। तूने ही अपनी क़ुद्रत से इस मुसीबत को नाज़ल किया है और अपनी

اَوْرَدْتَهُ عَلَيَّ وَ بِسُلْطَانِكَ وَجَّهْتَهُ اِلَيَّ فَلَا مُصْدِرَ لِمَا

सलतनत से इस का रूख़ मेरी तरफ़ मोड़ दिया है। अब इसे कोई दूसरा पलटाने वाला या

اَوْرَدْتَ وَلَا صَارِفَ لِمَا وَجَّهْتَ وَلَا فَاتِحَ لِمَا اَغْلَقْتَ

वापस करनेवाला नहीं है के जिस दरवाज़े को तू बंद कर दे उसे कोई खोल नहीं सकता और

وَلَا مُغْلِقَ لِمَا فَتَحْتَ وَلَا مُيَسِّرَ لِمَا عَسَّرْتَ وَلَا نَاصِرَ

जिसे तू खोल दे उसे कोई बंद नहीं कर सकता। जिसे तू मुश्किल बना दे उसे कोई आसान नहीं

لِمَنْ خَذَلْتَ فَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ اٰلِهٖ وَ افْتَحْ لِي يَا رَبِّ بَابَ

कर सकता और जिसको तू छोड़ दे उसका कोई मददगार नहीं। मुहम्मदो आले मुहम्मद पर

الْفَرَجِ بِطَوْلِكَ وَاكْسِرْ عَنِّيْ سُلْطَانَ الْهَمِّ بِحَوْلِكَ

रहमत नाज़ल कर और हमारे लिए अपने करम की आसानी के लिए दरवाज़े खोल दे और

وَ اَنِلْنِيْ حُسْنَ النَّظَرِ فِيْمَا شَكَوْتُ وَ اَذِقْنِيْ حَلَاوَةَ

हमो ग़म की ताक़त तोड़ दे। हमें अपनी बेहतरीन निगाहे करम इनायत फ़र्मा। और जो हम ने

الصُّنْعِ فِيْمَا سَاَلْتُ وَ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَ فَرَجًا

मांगा है उस में अपनी मेहरबानी की हलावत का ज़ाएक़ा चखा। हमें अपनी तरफ़ से रहमत

هَنِيْئًا وَاجْعَلْ لِيْ مِنْ عِنْدِكَ مَخْرَجًا وَحِيًّا وَلَا تَشْغَلْنِيْ

और बेहतरीन, ख़ुशगवार कशाइशे हाल अता कर और हमारे लिए मुसीबत से फ़ौरन निकलने

بِالْاِهْتِمَامِ عَنْ تَعَاهُدِ فُرُوْضِكَ وَاسْتِعْمَالِ سُنَّتِكَ

का सामान फराहम कर और हमें किसी ऐसे काम में मशग़ूल न होने दे के हम तेरे फ़राएज़ की

فَقَدْ ضِقْتُ لِمَا نَزَلَ بِيْ يَا رَبِّ ذَرْعًا وَامْتَلَأْتُ بِحَمْلِ مَا

पाबंदी न कर सकें और तेरी सुन्नत पर अमल न कर सकें। इस लिए के जो मुसीबत हमपर

حَدَثَ عَلَيَّ هَمًّا وَاَنْتَ الْقَادِرُ عَلٰى كَشْفِ مَا مُنِيْتُ بِهٖ

नाज़ल हुई है उसने दिलतंग बना दिया है और जो हादसा सामने है उसके तहम्मुल ने हमारे

وَدَفْعِ مَا وَقَعْتُ فِيْهِ فَافْعَلْ بِيْ ذٰلِكَ وَاِنْ لَمْ اَسْتَوْجِبْهُ

दिलको हमो ग़म से भर दिया है। जिस मुसीबत में मुबतिला हूँ उस के टालने पर क़ादिर और

مِنْكَ يَاذَا الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ يَاذَا الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ وَذَا

उसको दफा करने का साहिबे इख़तियार तू ही है। लेहाज़ा इस बला को टाल दे चाहे मैं इसका

الْمَنِّ الْكَرِيْمِ فَاَنْتَ قَادِرٌ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ آمِيْنَ رَبَّ

हक़दार न हूँ ऐ साहिबे अर्शे अज़ीम। ऐ साहिबे एहसाने करीम। तू हर शै पर क़ादिर है। ऐ

الْعَالَمِيْنَ

अर्रहमर राहेमीन। आमीन रब्बुलआलमीन।

ग्यारहवें:

दुआ साहिबुल अम्र

कफ़अमी ने बलदुल अमीन में फ़रमाया है कि यह दुआ हज़रत साहेबुल अम्र है। जो आपने एक क़ैदी को सिखाई और उसके नतीजे में आज़ाद हो गया।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.

اِلٰهِىْ عَظُمَ الْبَلَاۤءُ وَ بَرِحَ الْخَفَاۤءُ وَ انْكَشَفَ الْغِطَاۤءُ وَ انْقَطَعَ

ख़ुदाया, बला व मुसीबत बहुत अज़ीम है और मेरी बेचारगी भी वाज़ेह है। सारे पर्दे उठ चुके हैं और

الرَّجَاءُ وَضَاقَتِ الْاَرْضُ وَمُنِعَتِ السَّمَاۤءُ وَاَنْتَ الْمُسْتَعَانُ وَ

सारी उम्मीदें टूट चुकी हैं। ज़मीन तंग हो गई है और आसमान के रास्ते बंद हो गए है। अब तू ही

اِلَيْكَ الْمُشْتَكٰى وَعَلَيْكَ الْمُعَوَّلُ فِي الشِّدَّةِ وَالرَّخَاۤءِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ

मददगार है और तेरी तरफ़ फ़र्याद है और हर सख़्ती व नरमी में तेरे ही ऊपर भरोसा है। ख़ुदाया हज़रत

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ اُولِى الْاَمْرِ الَّذِيْنَ فَرَضْتَ عَلَيْنَا طَاعَتَهُمْ

मुहम्मद और उन की इस आल पर रहमत नाज़ल फ़र्मा जो साहिबे अम्र हैं। जिन की इताअत को तू ने

وَعَرَّفْتَنَا بِذٰلِكَ مَنْزِلَتَهُمْ فَفَرِّجْ عَنَّا بِحَقِّهِمْ فَرَجًا عَاجِلاً

फ़र्ज़ क़रार दिया है और इसी इताअत से तूने उनके मर्तबे को पहचन वाया है। उन के हक के वास्ते

قَرِيْبًا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْهُوَ اَقْرَبُ يَا مُحَمَّدُ يَا عَلِيُّ يَا عَلِيُّ يَا مُحَمَّدُ

से हम से फ़ौरन इस मुसीबत को पलक झपकते में या उस से भी कम वक़्फ़े में, ऐ मुहम्मद ऐ अली,

اِكْفِيَانِىْ فَاِنَّكُمَا كَافِيَانِ وَانْصُرَانِ فَاِنَّكُمَا نَاصِرَانِ يَا مَوْلاَنَا

ऐ अली ऐ मुहम्मद, आप हमारे लिए काफ़ी हो जाएँ के आप काफ़ी हैं। आप हमारी मदद करें के आप

يَاصَاحِبَ الزَّمَانِ الْغَوْثَ الْغَوْثَ الْغَوْثَ اَدْرِكْنِىْ اَدْرِكْنِىْ

मददगार हैं। ऐ हज़रते साहिबुज़्ज़मान फ़र्याद है फ़र्याद है फ़र्याद है, मेरी मदद करें, मेरी मदद करें, मेरी

اَدْرِكْنِىْ السَّاعَةَ السَّاعَةَ السَّاعَةَ الْعَجَلَ الْعَجَلَ الْعَجَلَ يَا اَرْحَمَ

मदद करें, अभी अभी अभी, फ़ौरन फ़ौरन फ़ौरन। ऐ ख़ुदाए अर्रहमानोरहीम बह०व०के मुहम्मद व

الرَّاحِمِيْنَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهِ الطَّاهِرِيْنَ.

आले मुहम्मद हमारी मदद फ़र्मा।

बारहवें:

दुआ अल-महदी

कफ़अमी ने मिस्बाह में इस दुआ को भी हज़रत इमामे अñा (अ) से नक़्ल किया है।

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا تَوْفِيْقَ الطَّاعَةِ وَبُعْدَ الْمَعْصِيَةِ وَصِدْقَ النِّيَّةِ وَعِرْفَانَ

ख़ुदाया हमें इताअत की तौफ़ा०rक, मासियत से दूरी, नियत में सदाक़त, मोहतरम चीज़ों का

الْحُرْمَةِ وَاَكْرِمْنَا بِالْهُدٰى وَالْاِسْتِقَامَةِ وَسَدِّدْ اَلْسِنَتَنَا بِالصَّوَابِ وَ

इ०फर्ान अता फ़र्मा। हमें हिदायत व इस्तेक़ामत की करामत अता फ़र्मा। हमारी जबानों को

الْحِكْمَةِ وَامْلَأْ قُلُوْبَنَا بِالْعِلْمِ وَ الْمَعْرِفَةِ وَطَهِّرْ بُطُوْنَنَا مِنَ الْحَرَامِ وَ

सदाक़त व हिक्मत के रास्ते पर लगा दे। हमारे दिलों को इल्म व मारेफ़त से भर दे। हमारे

الشُّبْهَةِ وَاكْفُفْ اَيْدِيَنَا عَنِ الظُّلْمِ وَ السَّرِقَةِ وَاغْضُضْ اَبْصَارَنَا عَنِ

शिकम को हराम और मुश्तबा चीज़ों से पाक कर दे हमारे हाथों को ज़ुल्म और चोरी से रोक

الْفُجُوْرِ وَ الْخِيَانَةِ وَاسْدُدْ اَسْمَاعَنَا عَنِ اللَّغْوِ وَالْغِيْبَةِ وَ تَفَضَّلْ عَلٰى

दे। हमारी निगाहों को फ़ुजूर और ख़यानत से बंद कर दे। हमारे कानों के रास्ते लग़ु और ग़ीबत

عُلَمَآئِنَا بِالزُّهْدِ وَ النَّصِيْحَةِ وَعَلَى الْمُتَعَلِّمِيْنَ بِالْجُهْدِ وَ الرَّغْبَةِ وَعَلٰى

से मसदूद कर दे। हमारे ओलमा को ज़ोहद व नसियत, मुतालीम को कोशिश और रग़बत,

الْمُسْتَمِعِيْنَ بِالْاِتِّبَاعِ وَ الْمَوْعِظَةِ وَ عَلٰى مَرْضَى الْمُسْلِمِيْنَ بِالشِّفَآءِ

सुनने वालों को इतबा और मोअज़्ज़त की तौफ़ा०rक अता फ़र्मा। बीमार मुसालमानों को शिफ़ा

وَالرَّاحَةِ وَ عَلٰى مَوْتَاهُمْ بِالرَّافَةِ وَ الرَّحْمَةِ وَعَلٰى مَشَايِخِنَا بِالْوَقَارِ وَ

व राहत दे। मरने वालो पर मेहरबानी और रहमत फ़र्मा। बुज़ुर्गों को विक़ार और सुकून अता

السَّكِيْنَةِ وَعَلٰى الشَّبَابِ بِالْاِنَابَةِ وَالتَّوْبَةِ وَعَلٰى النِّسَاءِ بِالْحَيَآءِ وَالْعِفَّةِ

फर्मा। नौजवानों को तौबा व इस्तग़फ़ार और औरतों को हया व इ०प०फत, मालदारों को

وَ عَلٰى الْاَغْنِيَاءِ بِالتَّوَاضُعِ وَ السَّعَةِ وَ عَلٰى الْفُقَرَاءِ بِالصَّبْرِ وَ الْقَنَاعَةِ

तवाजेह और वुसअत, फ़ुकरा को सब्र और क़नात, मुजाहिदों को नुात और ग़लवा, क़ैदियों

وَعَلٰى الْغُزَاةِ بِالنَّصْرِ وَ الْغَلَبَةِ وَعَلٰى الْاُسَرَاءِ بِالْخَلَاصِ وَ الرَّاحَةِ وَعَلٰى

को आज़ादी व राहत, अमीरों को अद्ल व शफ़०व०कत रिआया को इनसाफ़ और हुस्ने सीरत

الْاُمَرَاءِ بِالْعَدْلِ وَ الشَّفَقَةِ وَعَلٰى الرَّعِيَّةِ بِالْاِنْصَافِ وَحُسْنِ السِّيْرَةِ وَ

की तौफ़ा०rक अता फ़र्मा। हुज्जाज व ज़व्वार के ज़दे राह और नफ़क़े में बर्कत अता फ़र्मा और

بَارِكْ لِلْحُجَّاجِ وَ الزُّوَّارِ فِي الزَّادِ وَ النَّفَقَةِ وَ اقْضِ مَا اَوْجَبْتَ عَلَيْهِمْ

जो फ़रीज़ाए हजो उमराह उन के ाज़िम्मे वाजिब किया है उसे अदा फ़र्मा दे अपने फ़ज़्ल व रहमत

مِنَ الْحَجِّ وَ الْعُمْرَةِ بِفَضْلِكَ وَرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

से ऐ अर्हमुर्राहेमीन।

तेरहवें:

दुआ अल-हुज्रह

मोहिज्जुद दावात में यह दुआ भी इमामे अñा (अ) से ही नक़्ल की गई है:

اِلٰهِی بِحَقِّ مَنْ نَاجَاكَ وَبِحَقِّ مَنْ دَعَاكَ فِی الْبَرِّ وَالْبَحْرِ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ

ख़ुदाया हर मुनाजात करने वाले और बहरोबर में दुआ करने वाले के हक़ का वास्ता के

وَآلِهِ وَتَفَضَّلْ عَلٰی فُقَرَاءِ الْمُؤْمِنِینَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بِالْغَنَاءِ وَالثَّرْوَةِ

मा॰हम्म्द व आले मा॰हम्म्द पर रहमत भेज। और ग़रीब मोमिनीन व मोमिनात पर मालदारी

وَعَلٰی مَرْضَی الْمُؤْمِنِینَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بِالشِّفَاءِ وَالصِّحَّةِ وَعَلٰی اَحْیَاءِ

ओर दौलत अता फ़र्मा। बीमार मोमिनीन व मोमिनात को शिफ़ा व सेहत अता फ़र्मा। ज़िदा

الْمُؤْمِنِینَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بِاللُّطْفِ وَالْكَرَمِ وَعَلٰی اَمْوَاتِ الْمُؤْمِنِینَ

मोमिनीन व मोमिनात पर लुत्फ़ व करम फ़र्मा। मुरदा मोमिनीन व मोमिनात पर मग़्फ़िरत व

وَالْمُؤْمِنَاتِ بِالْمَغْفِرَةِ وَالرَّحْمَةِ وَعَلٰی غُرَبَاءِ الْمُؤْمِنِینَ وَالْمُؤْمِنَاتِ

रहमत नाज़िल फ़र्मा। जो मोमिनीन व मोमिनात मुसाफ़िर हैं उन्हें उन के वतन तक सेहत व

بِالرَّدِّ اِلٰی اَوْطَانِهِمْ سَالِمِینَ غَانِمِینَ بِمُحَمَّدٍ وَآلِهِ اَجْمَعِین

सलामती से पहुँचा दे। हज़रत मुहम्मद व आले मुहम्मद का वास्ता।

चौदहवें:

अल-इसतिग़ासा बिल हुज्जह

सय्यद अली ख़ान ने कलमे तय्यब में फ़रमाया है कि यह इमामे ज़माना (अ) की बारगाह में इस्तेग़ासा है। दो रकत नमाज़: हम्द और किसी सूरह के साथ पढ़ने के बाद रू ब क़िबला ज़ेरे आसमान यह इस्तेग़ासा इस प्रकार पढ़े:

سَلاَمُ اللهِ الْكَامِلُ التَّامُّ الشَّامِلُ الْعَامُّ وَصَلَوَاتُهُ الدَّائِمَةُ

अल्लाह का कामिल व ताम व शामिल व आम सलाम और अल्लाह की दाएमी सलवात और

وَ بَرَكَاتُهُ الْقَائِمَةُ التَّامَّةُ عَلٰى حُجَّةِ اللهِ وَوَلِيِّهِ فِي اَرْضِهِ وَبِلاَدِهِ

उस की हमेशा रहने वाली कामिल बर्कत इस हुज्जते ख़ुदा पर जो उस के शहरों में उस का

وَخَلِيفَتِهِ عَلٰى خَلْقِهِ وَعِبَادِهِ وَسُلاَلَةِ النُّبُوَّةِ وَبَقِيَّةِ الْعِتْرَةِ

वली है और उस की मख़लूक़ात और बंदों में उस का ख़ला०rफा है नबुव्वत का ख़ुलासा

وَالصَّفْوَةِ صَاحِبِ الزَّمَانِ وَمُظْهِرِ الاِيمَانِ وَمُلَقِّنِ اَحْكَامِ

इतरत का बक़ीया, अल्लाह का मुंतख़ब बंदा, साहिबुज़्ज़मान, ईमान का ज़ाहिर करने वाला

الْقُرْآنِ وَمُطَهِّرِ الاَرْضِ وَنَاشِرِ الْعَدْلِ فِي الطُّولِ وَالْعَرْضِ

अहकाम व क़ुरआन की तलक़ीन करनेवाला, ज़मीन को पाक करनेवाला और तूल व अर्ज़

وَالْحُجَّةِ الْقَائِمِ الْمَهْدِيِّ الاِمَامِ الْمُنْتَظَرِ الْمَرْضِيِّ وَابْنِ

में अद्ल व इंसाफ़ का फैलानेवाला हज़रत मुहम्मद क़ाएम ए महदी, इमाम ए मुंताज़िर ए

الاَئِمَّةِ الطَّاهِرِيْنَ الْوَصِيِّ ابْنِ الاَوْصِيَاءِ الْمَرْضِيِّيْنَ الْهَادِی

मर्ज़ा, फ़र्ज़ंदे आइम्मा ए ताहेरीन वसी इब्ने औसिया हादी ए मासूम फ़र्ज़ंद आइम्मा ए हुदाद

الْمَعْصُومِ ابْنِ الاَئِمَّةِ الْهُدَاةِ الْمَعْصُومِيْنَ السَّلاَمُ عَلَيْكَ

मासूमीन है। सलाम हो आप पर ऐ कमज़ोर मोमिनों को इज़्ज़त देनेवाले। सलाम हो आप

يَا مُعِزَّ الْمُؤْمِنِيْنَ الْمُسْتَضْعَفِيْنَ السَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا مُذِلَّ

पर ऐ ज़ालिम मुतकब्बिर काफ़िरों को ज़लील करनेवाले। सलाम हो आप पर ऐ मेरे मौला

الْكَافِرِيْنَ الْمُتَكَبِّرِيْنَ الظَّالِمِيْنَ السَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا مَوْلاَیَ يَا

साहिबुज़्ज़मान। सलाम हो आप पर ऐ फ़र्ज़ंदे रसूल। सलाम हो आप पर ऐ फ़र्ज़ंदे अमीरूल

صَاحِبَ الزَّمَانِ السَّلاَمُ عَلَيْكَ يَابْنَ رَسُولِ اللهِ السَّلاَمُ عَلَيْكَ

मोमिनीन। सलाम हो आप पर ऐ फ़र्ज़ंदे फ़ातेमा ज़हरा सय्यदतुन्निसा ए आलमीन। सलाम

يَابْنَ اَمِيرِ الْمُؤْمِنِيْنَ السّلاَمُ عَلَيْكَ يَابْنَ فَاطِمَةَ الزَّهْرَاءِ سَيِّدَةِ

हो आप पर ऐ फ़र्ज़ंदे अइम्माए हुज्जाजे मासूमीन और तमाम मख़लूक़ात पर अल्लाह की तरफ़

نِسَاءِ الْعَالَمِيْنَ السَّلاَمُ عَلَيْكَ يَابْنَ الاَئِمَّةِ الْحُجَجِ الْمَعْصُومِيْنَ

से इमाम। सलाम हो आप पर ऐ मेरे मौला। इस बंदे का सलाम जो विलायत में मुख़लिस

وَالاِمَامُ عَلَى الْخَلْقِ اَجْمَعِيْنَ السَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا مَوْلاَیَ سَلاَمَ

है मैं गवाही देता हूँ के आप क़ौलो फ़ेल में इमाम महदी है और आप ही ज़मीन को ज़ुल्म व

مُخْلِصٍ لَكَ فِي الْوِلايَةِ أَشْهَدُ أَنَّكَ الإِمَامُ الْمَهْدِيُّ قَوْلًا وَفِعْلًا

ज़ोर के बाद अदलो इंसाफ़ से भरने वाले हैं। अल्लाह आप के ज़हूर में ताज़ील फ़र्माए और

وَأَنْتَ الَّذِي تَمْلَأُ الأَرْضَ قِسْطًا وَعَدْلًا بَعْدَ مَا مُلِئَتْ ظُلْمًا

आप के ख़ुरूज को आसान बना दे और आप के ज़माने को क़रीबतर बना दे और आप के

وَجَوْرًا فَعَجَّلَ اللهُ فَرَجَكَ وَسَهَّلَ مَخْرَجَكَ وَقَرَّبَ زَمَانَكَ وَكَثَّرَ

अंसारो आवाम को कसीर क़रार दे दे इस वादे को पूरा कर दे जो आप से किया है के वो

أَنْصَارَكَ وَأَعْوَانَكَ وَأَنْجَزَ لَكَ مَا وَعَدَكَ فَهُوَ أَصْدَقُ الْقَائِلِينَ:

सब से ज़्यादा सच बोलनेवाला है और उस का वादा है के जिन्हें रूए ज़मीन पर कमज़ोर

(وَنُرِيدُ أَنْ نَمُنَّ عَلَى الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا فِي الأَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ أَئِمَّةً

बना दिया गया है हम उन पर एहसान करेंगे और उन को इमाम, और ज़मीन का वारिस

وَنَجْعَلَهُمُ الْوَارِثِينَ) يَا مَوْلَايَ يَا صَاحِبَ الزَّمَانِ يَا بْنَ رَسُولِ

बनाएँगे। मेरे मौला हज़रत साहिबुज़्ज़मान फ़र्ज़ंदे रसूल ये हमारी हाजत है...

اللهِ حَاجَتِي...

यह कहकर अपनी हाजत बयान करे:

فَاشْفَعْ لِي فِي نَجَاحِهَا فَقَدْ تَوَجَّهْتُ اِلَيْكَ بِحَاجَتِي لِعِلْمِي اَنَّ لَكَ

आप ख़ुदा की बार्गाह में इनके पूरा होनेकी सिफ़ारिश करें हम इन हाजतों को लेकर आप की बार्गाह में हाज़िर हुए हैं ये जानते

عِنْدَ اللهِ شَفَاعَةً مَقْبُولَةً وَمَقَامًا مَحْمُودًا فَبِحَقِّ مَنِ اخْتَصَّكُمْ

हुए के अल्लाह के नज़दिक़ आप की शिफ़ाअत मक़बूल है और आप की मंज़िल क़ाबिले सताएश है। इस ख़ुदाए बरहक

بِاَمْرِهِ وَارْتَضَاكُمْ لِسِرِّهِ وَبِالشَّانِ الَّذِي لَكُمْ عِنْدَ اللهِ بَيْنَكُمْ

का वास्ता जिस ने आप को अपने अम्र के लिए मख़सूस किया है और आपने राज़ के लिए पसंदीदा क़रार दिया है और इस

وَبَيْنَهُ سَلِ اللّٰهَ تَعَالٰى فِي نُجْحِ طَلِبَتِي وَاِجَابَةِ دَعْوَتِي وَكَشْفِ

शान का वास्ता जो आप हज़रात के लिए परवर्दिगार के नज़दीक है। परवर्दिगार से दुआ करें के वो हमारी हाजतों को पूरा

كُرْبَتِي

फ़र्मा दे हमारी दुआ को क़ुबूल करे और हमारे रंज व ग़म को दूर कर दे।

उसके बाद जो भी दुआ करे अल्लाह ने चाहा तो पूरी होगी:
लेखक के अनुसार बेहतर यह है के इस इस्तेग़ासा की नमाज़ में पहली रकत में सूरह हम्द के बाद सूरह फ़त्ह पढ़े और दूसरी रकत में सूरह नñा पढ़े।

वर्ग - 8

इमाम ज़ैनुल आबिदीन (अ) की पंद्रह मुनाजातें
यह अध्याय मुनाजातों के बारे में है जिनमें इमामे सज्जाद (अ.स.) की उन पंद्रह मुनाजातों का तज़केरा होगा जिनके बारे में अल्लामा मजलिसी ने बेहारूल अनवार में लिखा है के मैने इन मुनाजातों को बाज़ असहाब की किताबों में हज़रत से रवायत शुदा देखा है।

पहली मुनाजात

मुनाजात ताईबीन

तौबा करनेवालों की मुनाजात

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.

ख़ुदा के नाम से जो बहुत मेहेरबान और निहायत रहमवाला है।

اِلٰهِىْ اَلْبَسَتْنِى الْخَطَايَا ثَوْبَ مَذَلَّتِىْ وَ جَلَّلَنِى التَّبَاعُدُ مِنْكَ

परवर्दिगार मुझे खताओं ने ज़िल्लत का लिबास पहना दिया है। तुझ से दूरी ने मुझे आजज़ी और बेवफाई का

لِبَاسَ مَسْكَنَتِىْ وَ اَمَاتَ قَلْبِىْ عَظِيْمُ جِنَايَتِىْ فَاَحْيِهٖ

जामा पहना दिया है और मेरे अज़ीम जराएम ने मेरे दिल को मुर्दा बना दिया है लेहाज़ा तू उसे मेरी तौबा के

بِتَوْبَةٍ مِنْكَ يَا اَمَلِىْ وَ بُغْيَتِىْ وَ يَا سُؤْلِىْ وَ مُنْيَتِىْ فَوَعِزَّتِكَ مَآ

ज़रिए ज़िंदा बना दे ऐ मेरी उम्मीद, ऐ मेरी आरज़ू। ऐ मेरे परवर्दिगार जिस से मेरा हर सवाल है और मेरी

اَجِدُ لِذُنُوبِي سِوَاكَ غَافِرًا وَلَا اَرٰى لِكَسْرِي غَيْرَكَ جَابِرًا

हर आरज़ू वाबस्ता है। तेरी इज़्ज़त की कसम अपने गुनाहों के लिए तेरे अलावा कोई बक्शने वाला, अपनी

وَ قَدْ خَضَعْتُ بِالْاِنَابَةِ اِلَيْكَ وَ عَنَوْتُ بِالْاِسْتِكَانَةِ لَدَيْكَ

शकिस्तगी के लिए कोई जोड़नेवाला नहीं पाता हूँ। मैं तौबा के ज़रिए तेरे सामने खाज़े हूँ और अपनी आजज़ी

فَاِنْ طَرَدْتَنِي مِنْ بَابِكَ فَبِمَنْ اَلُوذُ وَاِنْ رَدَدْتَنِي عَنْ جَنَابِكَ

की पनाह पर अपना सर झुकाए हुए हूँ। अगर तू अपने दरवाज़े से हटा देगा तो मैं किस की पनाह लूँगा

فَبِمَنْ اَعُوذُ فَوَا اَسَفَاهُ مِنْ خَجْلَتِي وَافْتِضَاحِي وَوَا لَهْفَاهُ مِنْ

और अगर अपनी बार्गाह से पलटा देगा तो किस का सहारा लूँगा। हाए मेरी खजालत और मेरी रिस्वाई।

سُوٓءِ عَمَلِي وَاجْتِرَاحِي اَسْئَلُكَ يَا غَافِرَ الذَّنْبِ الْكَبِيرِ وَ يَا

और अफसोस मेरी बदअमली और मेरे गुनाहों के इरतेकाब पर। अब तुझ से सवाल कर रहा हूँ ऐ बड़े बड़े

جَابِرَ الْعَظْمِ الْكَسِيرِ اَنْ تَهَبَ لِي مُوبِقَاتِ الْجَرَآئِرِ وَ تَسْتُرَ

गुनाहों को बक्शने वाले और टूटी हि·यों को जोड़ने वाले के मेरे मोहलक जराएम को माफ कर दे और

عَلَيَّ فَاضِحَاتِ السَّرَآئِرِ وَ لَا تُخْلِنِي فِي مَشْهَدِ الْقِيَامَةِ مِنْ

मेरे रूस्वाकन असरार पर परदा डाल दे मुझे कयामत के दिन अपनी माफी और मगफिरत की खनकी से

بَرْدِ عَفْوِكَ وَ غَفْرِكَ وَلَا تُعْرِنِي مِنْ جَمِيلِ صَفْحِكَ وَ سَتْرِكَ

मेहरूम न करना और मुझे अपनी बेहतरीन परदापोशी और बखशिश से आरी न रखना। ख़ुदाया मेरे गुनाहों

اِلٰهِیْ ظَلِّلْ عَلٰی ذُنُوْبِیْ غَمَامَ رَحْمَتِكَ وَ اَرْسِلْ عَلٰی عُيُوْبِیْ

पर रहमत के बादलों का साया कर दे और मेरी अय्यूब पर मेहरबानियों के बादल बरसा दे। ख़ुदा क्या भागा

سَحَابَ رَافَتِكَ اِلٰهِیْ هَلْ يَرْجِعُ الْعَبْدُ الْاٰبِقُ اِلَّا اِلٰی مَوْلَاهُ

हुआ गलाम मौला के अलावा कहीं और पलट कर जाएगा और क्या मौला की नाराज़गी से खुद उस के

اَمْ هَلْ يُجِيْرُهُ مِنْ سَخَطِهٖ اَحَدٌ سِوَاهُ اِلٰهِیْ اِنْ كَانَ النَّدَمُ

अलावा कोई और भी बचा सकता है। ख़ुदाया अगर गुनाहों पर पशेमानी ही तौबा है तो तेरी इज़्ज़त की कसम

عَلَی الذَّنْبِ تَوْبَةً فَاِنِّیْ وَ عِزَّتِكَ مِنَ النَّادِمِيْنَ وَ اِنْ كَانَ

मैं पशेमान हूँ और अगर खताओं से असतगफार ही बख्शिश का जरिया है तो मैं यकीनन असतगफार कर

الْاِسْتِغْفَارُ مِنَ الْخَطِيْئَةِ حِطَّةً فَاِنِّیْ لَكَ مِنَ الْمُسْتَغْفِرِيْنَ

रहा हूँ। मैं तुझ से बार बार गरजारिश करूँगा यहाँ तक के तू राज़ी हो। ख़ुदाया अपनी कुद्रत के जरिए मेरी

لَكَ الْعُتْبٰی حَتّٰی تَرْضٰی اِلٰهِیْ بِقُدْرَتِكَ عَلَیَّ تُبْ عَلَیَّ وَ بِحِلْمِكَ

तौबा कुबूल कर ले और अपने हिल्म ले जरिए मुझे माफ कर दे। अपने इल्म के सहारे मुझ पर मेहरबानी

عَنِّیْ اَعْفُ عَنِّیْ وَ بِعِلْمِكَ بِیْ اَرْفَقْ بِیْ اِلٰهِیْ اَنْتَ الَّذِیْ فَتَحْتَ

फर्मा। ख़ुदाया तू ही वो है जिस ने बंदों के लिए माफी का एक दरवाज़ा खोला है जिस का नाम तौबा रखा

لِعِبَادِكَ بَابًا اِلٰی عَفْوِكَ سَمَّيْتَهُ التَّوْبَةَ فَقُلْتَ تُوْبُوْا اِلَی اللّٰهِ

है और फिर फर्माया है के अपने खुदा की बार्गाह में खालिस तौबा करो। तो अब इस का क्या अज़र होगा

تَوْبَةً نَصُوحًا فَمَا عُذْرُ مَنْ اَغْفَلَ دُخُوْلَ الْبَابِ بَعْدَ فَتْحِهٖ

जो दरवाज़ा खुलने के बाद भी इस में दाखिल न हो। ख़ुदाया अगर तेर बंदे के गुनाह कबीह हैं तो तेरी माफी

اِلٰهِیْ اِنْ كَانَ قَبُحَ الذَّنْبُ مِنْ عَبْدِكَ فَلْيَحْسُنِ الْعَفْوُ مِنْ

को हसन होना चाहिए। ख़ुदाया मैं कोई पहला गुनहगार नहीं हूँ जिस की तौबा को तू ने कुबूल किया हो।

عِنْدِكَ اِلٰهِیْ مَا اَنَا بِاَوَّلِ مَنْ عَصَاكَ فَتُبْتَ عَلَيْهِ وَ تَعَرَّضَ

उस् ाने नेकी का मुतालेआ किया हो ओर तू ने उस पर करम किया हो। ऐ मुजतर लोगों की दुआ कुबूल

لِمَعْرُوْفِكَ فَجُدْتَ عَلَيْهِ يَا مُجِيْبَ الْمُضْطَرِّ يَا كَاشِفَ الضُّرِّ يَا

करने वाले, ऐ रंज व ग़म को दूर करनेवाले। ऐ अज़ीम एहसान करने वाले, ऐ हर राज़क के जानने वाले।

عَظِيْمَ الْبِرِّ يَا عَلِيْمًا بِمَا فِی السِّرِّ يَا جَمِيْلَ السِّتْرِ اسْتَشْفَعْتُ

ऐ बेहतरीन परदापोशी करने वाले। मैं ने तेरे जवद व करम ही को शफी बनाया है और तेरी जानिब मैं तेरी

بِجُوْدِكَ وَ كَرَمِكَ اِلَيْكَ وَ تَوَسَّلْتُ بِجَنَابِكَ وَ تَرَحُّمِكَ لَدَيْكَ

रहमत ही को वसीला करार दिया है। लेहाज़ा मेरी दुआ को कुबूल कर ले और मेरी उम्मीद को नउम्मीद

فَاسْتَجِبْ دُعَآئِیْ وَ لَا تُخَيِّبْ فِيْكَ رَجَآئِیْ وَ تَقَبَّلْ تَوْبَتِیْ وَ

न करना। मेरी तौबा को कुबूल फर्मा ले और मेरे गुनाहों से दरगुज़ार फर्मा अपनी मेहरबानी और रहमत के

كَفِّرْ خَطِيْئَتِیْ بِمَنِّكَ وَ رَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

सहारे। या अर्हमुर्राहेमीन।

दूसरी मुनाजात

मुनाजात शाक्क़ीन

शिकायत करनेवालों की मुनाजात

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.

ख़ुदा के नाम से जो रहमान व रहीम है।

اِلٰهِىْ اِلَيْكَ اَشْكُوْ نَفْسًا بِالسُّوْٓءِ اَمَّارَةً وَ اِلَى الْخَطِيْٓئَةِ

ख़ुदाया मैं तुझ से नफस की शिकायत करता हूँ जो बुराईयों का अम्र कर रहा है और ख़ताओं की तरफ

مُبَادِرَةً وَ بِمَعَاصِيْكَ مُوْلَعَةً وَ لِسَخَطِكَ مُتَعَرِّضَةً تَسْلُكُ

तेज़ी से दौड़ रहा है। और तेरी मासियतों पर हरीस है और तेरी नाराज़गी की मंज़ल में है। मेरा नफ्स मुझ

بِىْ مَسَالِكَ الْمَهَالِكِ وَ تَجْعَلُنِىْ عِنْدَكَ اَهْوَنَ هَالِكٍ كَثِيْرَةَ

को हलाकतों के रास्ते पर ले जा रहा है। और तेरे नजदीक बदतरीन हलाकत होने वाला है। उस की

الْعِلَلِ طَوِيْلَةَ الْاَمَلِ اِنْ مَسَّهَا الشَّرُّ تَجْزَعُ وَ اِنْ مَسَّهَا

बीमारियाँ कसीर और उम्मीदें तवील हैं। जब कोई बुराई आती है तो फर्याद करता है और जब कोई नेकी

الْخَيْرُ تَمْنَعُ مَيَّالَةً اِلَى اللَّعِبِ وَ اللَّهْوِ مَمْلُوَّةً بِالْغَفْلَةِ وَ السَّهْوِ

आती है तो अकड़ जाता है। हमेशा लहो लाब की तरफ माइल। सहु व ग़फलत में डूबा हुआ गुनाहों की

تُسْرِعُ بِیْ اِلَی الْحَوْبَةِ وَ تُسَوِّفُنِیْ بِالتَّوْبَةِ اِلٰهِیْ اَشْكُوْ اِلَیْكَ

तरफ तेजी स ले जाता है और तौबा को टाल देता है। ख़ुदाया मैं उस दुश्मन की शिकायत कर रहा हूँ जो

عَدُوًّا یُضِلُّنِیْ وَ شَیْطَانًا یُغْوِیْنِیْ قَدْ مَلَاَ بِالْوَسْوَاسِ صَدْرِیْ

मुझे गुमराह कर रहा है और वो शैतान जो मुझे बेहका रहा है। जिस ने मेरे सीने को वसवास से भर दिया

وَ اَحَاطَتْ هَوَاجِسُهٗ بِقَلْبِیْ یُعَاضِدُ لِیَ الْهَوٰی وَ یُزَیِّنُ لِیْ

है और उस के खयालात मेरे कल्ब पर ग़ालिब आ गए हैं। ख़्वाहिशात को सहारा देता है और हुब्बे दुनिया

حُبَّ الدُّنْیَا وَ یَحُوْلُ بَیْنِیْ وَ بَیْنَ الطَّاعَةِ وَالزُّلْفٰی اِلٰهِیْ

को आरास्ता बना देता है। फिर मेरे और इताअत व तकरब के दरमियान हाइल हो जाता है। ख़ुदाया मैं

اِلَیْكَ اَشْكُوْ قَلْبًا قَاسِیًا مَعَ الْوَسْوَاسِ مُتَقَلِّبًا وَ بِالرَّیْنِ

तुझ से उस सख्त दिल की भी शिकायत कर रहा हूँ जो वसवास के साथ करवटें बदलता है और जिस पर

وَالطَّبْعِ مُتَلَبِّسًا وَ عَیْنًا عَنِ الْبُكَآءِ مِنْ خَوْفِكَ جَامِدَةً وَ

ज़ंग या मोहर लग गई है और उस आँख की भी शिकायत कर रहा हूँ जो तेरे खौफ के आँसुओं से ख़ुश्क

اِلٰی مَا یَسُرُّهَا طَامِحَةً اِلٰهِیْ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِقُدْرَتِكَ وَلَا

हो गई है और मुसलसिल अपनी लज़्ज़तों की तरफ निगाह रखती है। ख़ुदाया तेरी क़ुदरत के बगैर कोई

نَجَاةَ لِیْ مِنْ مَكَارِهِ الدُّنْیَا اِلَّا بِعِصْمَتِكَ فَاَسْئَلُكَ بِبَلَاغَةِ

कुदरत और ताकत नहीं है और तेरी हिफाजत के बगैर दुनिया की बुराइयों से निजात का कोई ज़रिया नहीं

حِكْمَتِكَ وَ نَفَاذِ مَشِيَّتِكَ اَنْ لَا تَجْعَلَنِيْ لِغَيْرِ جُوْدِكَ

है। मैं तुझ से तेरी बलीग़ हुक्मत और नाफज मशिय्यत के वसीले से दुआ करता हूँ के मुझे अपने करम

مُتَعَرِّضًا وَلَا تُصَيِّرَنِيْ لِلْفِتَنِ غَرَضًا وَ كُنْ بِيْ عَلَى الْاَعْدَآءِ

के अलावा किसी और को हवाले न करना ओर मुझे फितनों का निशाना न बनने देना। उन के मुकाबले

نَاصِرًا وَعَلَى الْمَخَازِيْ وَالْعُيُوْبِ سَاتِرًا وَمِنَ الْبَلَآءِ وَاقِيًا وَ

में मेरी मदद फर्माना। बुराईयों और कमजोरियों की परदापोशी फर्माना। मुझे बलाओं से बचा लेना और

عَنِ الْمَعَاصِيْ عَاصِمًا بِرَافَتِكَ وَرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

गुनाहों से मेरी हिफाज़त फर्माना अपनी राफतो रहमत के वसीले से ऐ बेहतरीन महरबानी करने वाले।

तीसरी मुनाजात

मुनाजात ख़ाएफ़ीन

भयभीत लोगों की मुनाजात

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ख़ुदा के नाम से जो रहमान व रहीम है।

اِلٰهِيْ اَتَرَاكَ بَعْدَ الْاِيْمَانِ بِكَ تُعَذِّبُنِيْ اَمْ بَعْدَ حُبِّيْ اِيَّاكَ

ख़ुदाया क्या मैं ये बावर कर लूँ के तू ईमान के बाद भी मुझ पर अज़ाब करेगा या तुझ से मेरी मोहब्बत

تُبَعِّدُنِيْ اَمْ مَعَ رَجَآئِيْ لِرَحْمَتِكَ وَ صَفْحِكَ تَحْرِمُنِيْ اَمْ مَعَ

के बाद भी तू मुझे दूर कर देगा या तेरे रहम व करम की उम्मीद के बाद भी तू मुझे महरूम कर देगा

اسْتِجَارَتِيْ بِعَفْوِكَ تُسْلِمُنِيْ حَاشَا لِوَجْهِكَ الْكَرِيْمِ اَنْ

या तेरी माफी की पनाह चाहने के बाद भी तू मुझे छोड़ देगा हरगिज़ ऐसा नहीं हो सकता है। तेरी ज़ाते

تُخَيِّبَنِيْ لَيْتَ شِعْرِيْ اَ لِلشَّقَآءِ وَلَدَتْنِيْ اُمِّيْ اَمْ لِلْعَنَآءِ

करीम नउम्मीद नहीं कर सकती है। ऐ काश मुझे मालूम हो जाता के मेरी माँ ने मुझे उस बदबक्ती के

رَبَّتْنِيْ فَلَيْتَهَا لَمْ تَلِدْنِيْ وَ لَمْ تُرَبِّنِيْ وَ لَيْتَنِيْ عَلِمْتُ اَ مِنْ

लिए पैदा किया था और इस ही रंज व ग़म के लिए पाला था। अगर ऐसा है तो काश न मुझे पैदा करती

اَهْلِ السَّعَادَةِ جَعَلْتَنِيْ وَبِقُرْبِكَ وَجِوَارِكَ خَصَصْتَنِيْ فَتَقَرَّ

और न मेरी पर्वरिश करती। और ऐ काश मुझे मालूम हो जाता के तू ने मुझे नेकबक्तों में मुझे करार

بِذٰلِكَ عَيْنِيْ وَ تَطْمَئِنَّ لَهٗ نَفْسِيْ اِلٰهِيْ هَلْ تُسَوِّدُ وُجُوْهًا

दिया है और अपने कर्ब और हमसाएगी से महफ़ूज़ किया है तो मेरी आँख ठंडी हो जाती और मेरा

خَرَّتْ سَاجِدَةً لِعَظَمَتِكَ اَوْ تُخْرِسُ اَلْسِنَةً نَطَقَتْ بِالثَّنَآءِ

दिल मुतमइन हो जाता। ख़ुदाया क्या तू इन चहरों को भी सियाह कर देगा जो तेरी अज़्मत के सामने

عَلٰى مَجْدِكَ وَ جَلَالَتِكَ اَوْ تَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبٍ انْطَوَتْ عَلٰى

सजदारेज़ हैं और क्या तू इन जबानों को भी गूँगा कर देगा जो तेरे मज्द व जलाल की सना कर रही हूँ

مَحَبَّتِكَ اَوْ تُصِمُّ اَسْمَاعًا تَلَذَّذَتْ بِسَمَاعِ ذِكْرِكَ فِيْ اِرَادَتِكَ

और क्या इन दिलों पर भी मोहर लगा देगा जिन में तेरी मोहब्बत पाई जाती है और क्या इन कानों को

اَوْ تَغُلُّ اَكُفًّا رَفَعَتْهَا الْاٰمَالُ اِلَيْكَ رَجَاءَ رَاْفَتِكَ اَوْ تُعَاقِبُ

भी बहरा कर देगा जो तेरे जिक्र सुनने से लज़्ज़त हासिल करते हों और क्या इन हाथों को भी गिरफतार

اَبْدَانًا عَمِلَتْ بِطَاعَتِكَ حَتّٰى نَحِلَتْ فِيْ مُجَاهَدَتِكَ اَوْ تُعَذِّبُ

कर देगा जिन्हें आरज़ुएँ तेरी बार्गाह में उठाए हुए हैं। तेरी मेहरबानियों की उम्मीद में या उन अजसाम

اَرْجُلًا سَعَتْ فِيْ عِبَادَتِكَ اِلٰهِيْ لَا تُغْلِقْ عَلٰى مُوَحِّدِيْكَ

पर भी इक़ाब करेगा जो तेरी इताअत करते करते कमजोर हो गए है फकत राहे जिहाद में। या उन पैरों

اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ وَلَا تَحْجُبْ مُشْتَاقِيْكَ عَنِ النَّظَرِ اِلٰى جَمِيْلِ

पर भी अज़ाब करेगा जो तेरी इबादत की राह पर चले हों। ख़ुदाया अपने मुहद्दों पर अपनी रहमत के

رُؤْيَتِكَ اِلٰهِيْ نَفْسٌ اَعْزَزْتَهَا بِتَوْحِيْدِكَ كَيْفَ تُذِلُّهَا

दरवाजे बंद न करना और अपने मुश्ताकों को अपने बेहतरीन अलताफ से मेहरूम न करना। ख़ुदाया

بِمَهَانَةِ هِجْرَانِكَ وَضَمِيْرٌ انْعَقَدَ عَلٰى مَوَدَّتِكَ كَيْفَ تُحْرِقُهٗ

जिस मफ्स को तू ने तौहीद की इज़्ज़त दी है कैसे उसे अपने फिराक की जिल्लत से दो चार करेगा और

بِحَرَارَةِ نِيْرَانِكَ اِلٰهِيْ اَجِرْنِيْ مِنْ اَلِيْمِ غَضَبِكَ وَ عَظِيْمِ

जिस दिल में अपनी मुहब्बत रखी है उसे कैसे अपनी आग की गरमी से जला देगा। ख़ुदाया मुझे अपने

سَخَطِكَ يَا حَنَّانُ يَا مَنَّانُ يَا رَحِيمُ يَا رَحْمٰنُ يَا جَبَّارُ يَا قَهَّارُ

दर्दनाक ग़ज़ब और अज़ीम अज़ाब से पनाह देदे। ऐ मेहरबान, ऐ करीम, ऐ रहीम, ऐ रहमान, ऐ जब्बार,

يَا غَفَّارُ يَا سَتَّارُ نَجِّنِي بِرَحْمَتِكَ مِنْ عَذَابِ النَّارِ وَ فَضِيحَةِ

ऐ क़हार, ऐ सत्तार, अपनी रहमत से अज़ाबे जहन्नुम और जिल्लते आर से पनाह दे देना उस वक्त जब नेक

الْعَارِ إِذَا امْتَازَ الْأَخْيَارُ مِنَ الْأَشْرَارِ وَ حَالَتِ الْأَحْوَالُ

बद से अलग हो जाएँ। हालात बदल जाएँ और हौलनाक मनाज़र सामने आ जाएँ, नेक किरदार तुझ

وَ هَالَتِ الْأَهْوَالُ وَ قَرُبَ الْمُحْسِنُونَ وَ بَعُدَ الْمُسِيئُونَ وَ

से क़रीब हों और गुनहगार दूर हो जाएँ और हर नफ्स को उस के किए गए का पूरा पूरा बदला दे दिया

وُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ.

जाए और किसी पर कोई जुल्म न हो।

चौथी मुनाजात

मुनाजात अल-राजीन

उम्मीद करनेवालों की मुनाजात

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ.

ख़ुदा के नाम से जो रहमान व रहीम है।

يَا مَنْ إِذَا سَأَلَهُ عَبْدٌ أَعْطَاهُ وَإِذَا أَمَّلَ مَا عِنْدَهُ بَلَّغَهُ مُنَاهُ

ऐ वो ख़ुदा जिस से बंदा सवाल करे तो अता कर देता है और उम्मीद वाबस्ता करे तो उम्मीदों को पूरा कर

وَإِذَا أَقْبَلَ عَلَيْهِ قَرَّبَهُ وَ أَدْنَاهُ وَإِذَا جَاهَرَهُ بِالْعِصْيَانِ سَتَرَ

देता है। उस की तरफ मुतवज्ज़ो हो तो अपने से करीब कर लेता है और खुल कर गुनाह करे तो भी परदा

عَلَى ذَنْبِهِ وَ غَطَّاهُ وَ إِذَا تَوَكَّلَ عَلَيْهِ أَحْسَبَهُ وَ كَفَاهُ إِلٰهِي

डाल देता है। जब उस पर भरोसा करता है तो इसके लिए काफी हो जाता है। ख़ुदाया कौन ऐसा है जो तेरी

مَنِ الَّذِي نَزَلَ بِكَ مُلْتَمِسًا قِرَاكَ فَمَا قَرَيْتَهُ وَمَنِ الَّذِي

बार्गाह में उम्मीद ज़ियाफत से लेकर आया हो और तू ने उसकी महमाननवाजी न की हो ऊौर कौन ऐसा

أَنَاخَ بِبَابِكَ مُرْتَجِيًا نَدَاكَ فَمَا أَوْلَيْتَهُ أَيَحْسُنُ أَنْ أَرْجِعَ

है जिस ने उम्मीद ए करम में तेरे दरवाजे पर अपनी सवारी को बिठा दिया हो और तू ने उसे कुछ अत ान

عَنْ بَابِكَ بِالْخَيْبَةِ مَصْرُوفًا وَ لَسْتُ أَعْرِفُ سِوَاكَ مَوْلًى

किया हो। क्या ये मुमकिन है के मैं तेरे दरवाजे से नउम्मीद पलट जाऊँ जब के मैं तेरे अलावा कोई ऐसा

بِالْإِحْسَانِ مَوْصُوفًا كَيْفَ أَرْجُو غَيْرَكَ وَالْخَيْرُ كُلُّهُ بِيَدِكَ

मौला नहीं जानता जिस की सिफत एहसान व करम हो। मैं किसी गैर से कैसे उम्मीद करूँ जब के सारा ख़ैर

وَ كَيْفَ أُؤَمِّلُ سِوَاكَ وَالْخَلْقُ وَالْأَمْرُ لَكَ أَأَقْطَعُ رَجَائِي

तेरे हाथों में है और तेरे अलावा किसी से कैसे आरजू वाबस्ता करूँ जबके खल्क व अम्र सब तेरे हाथों में

مِنْكَ وَ قَدْ أَوْلَيْتَنِي مَا لَمْ أَسْأَلْهُ مِنْ فَضْلِكَ أَمْ تُفْقِرُنِي إِلَى

है। क्या मैं तुझ से उम्मीद खता कर लूँ जबके तू ने अपने फज़्ल से वो भी दिया है जिसका मैं ने सवाल नहीं

مِثْلِي وَ أَنَا أَعْتَصِمُ بِحَبْلِكَ يَا مَنْ سَعِدَ بِرَحْمَتِهِ الْقَاصِدُونَ

किया था। क्या तू मुझे मेरे जैसे लोगों का मोहताज बना देगा जबके मैं तेरे रिश्ते से वाबस्ता हूँ। ऐ वो खुदा

وَ لَمْ يَشْقَ بِنِقْمَتِهِ الْمُسْتَغْفِرُونَ كَيْفَ أَنْسَاكَ وَ لَمْ تَزَلْ

जिसकी रहमत से इरादा करने वाले नेकबख्त हुए और जिस के अज़ाब से असतगफार करने वाले बदबख्त

ذَاكِرِي وَ كَيْفَ أَلْهُو عَنْكَ وَ أَنْتَ مُرَاقِبِي إِلَهِي بِذَيْلِ

नहीं हो सकते हैं। मैं तुझे कैसे भूल जाऊँ जबके तू हमेशा याद रखता है ओर कैसे गाफिल हो जाऊँ जबके

كَرَمِكَ أَعْلَقْتُ يَدِي وَ لِنَيْلِ عَطَايَاكَ بَسَطْتُ أَمَلِي

तू हमेशा निग्रानी करता है। ख़ुदाया मैं तेरे दामने करम से वाबस्ता हूँ। मैं ने तेरे अता या हासिल करने के

فَأَخْلِصْنِي بِخَالِصَةِ تَوْحِيدِكَ وَ اجْعَلْنِي مِنْ صَفْوَةِ عَبِيدِكَ

लिए उम्मीदों का दामन फैला दिया है। लेहाज़ा मुझे खालिस तौहीद का ख़ूगर बना दे और अपने पाकीज़ा

يَا مَنْ كُلُّ هَارِبٍ إِلَيْهِ يَلْتَجِئُ وَ كُلُّ طَالِبٍ إِيَّاهُ يَرْتَجِي يَا خَيْرَ

बंदों में करार देदे। ऐ वो खुदा जिस की तरफ हर भागा हुआ पनाह ढूंडता है और जिस से हर उम्मीदवार

مَرْجُوٍّ وَ يَا أَكْرَمَ مَدْعُوٍّ وَ يَا مَنْ لَا يَرُدُّ سَائِلَهُ وَ لَا يُخَيِّبُ

उम्मीद वाबस्ता करता है। ऐ बेहतरीन मर्कज़े उम्मीद और ऐ करीमतरीन मंजिले दुआ, ऐ वो जिस का

اِلٰهِىْ يَا مَنْ بَابُهٗ مَفْتُوْحٌ لِدَاعِيْهِ وَ حِجَابُهٗ مَرْفُوْعٌ لِرَاجِيْهِ

साइल पलटाया नहीं जाता और जिस का उम्मीदवार न उम्मीद नहीं होता। ऐ वो जिस का दरवाज़ा दुआ

اَسْئَلُكَ بِكَرَمِكَ اَنْ تَمُنَّ عَلَىَّ مِنْ عَطَآئِكَ بِمَا تَقَرُّ بِهٖ عَيْنِىْ

करने वालों के लिए खुला रहता है और जहाँ के परदे आरजूमंदों के लिए उठे होते है। मैं तेरे करम के जरिए

وَ مِنْ رَجَآئِكَ بِمَا تَطْمَئِنُّ بِهٖ نَفْسِىْ وَ مِنَ الْيَقِيْنِ بِمَا تُهَوِّنُ

तुझ से सवाल करता हूँ के मुझे वो कुछ अता फर्मा दे जिस से मेरी आँखों को ख़ुनकी हासिल हो और मेरे

بِهٖ عَلَىَّ مُصِيْبَاتِ الدُّنْيَا وَ تَجْلُوْ بِهٖ عَنْ بَصِيْرَتِىْ غَشَوَاتِ

दिल को इतमिनान हासिल हो। वो यकीन दे दे जो मासाएबे दुनिया को आसान बना दे और मेरी बसीरत से

الْعَمٰى بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

गुमराही के परदे उठा दे। अपनी रहमत के सहारे ऐ बेहतरीन मेहरबानी करने वाले।

पाँचवी मुनाजात

मुनाजात अल-राग़िबीन

लौ लगानेवालों की मुनाजात

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.

ख़ुदा के नाम से जो रहमान व रहीम है।

اِلٰهِیْ اِنْ کَانَ قَلَّ زَادِیْ فِی الْمَسِیْرِ اِلَیْکَ فَلَقَدْ حَسُنَ

खुदाया अगर तेरी तरफ आने मे मेरा जादे राह कम है। तो मै तुझपर तवक्कल करके हुस्ने जन

ظَنِّیْ بِالتَّوَکُّلِ عَلَیْکَ وَ اِنْ کَانَ جُرْمِیْ قَدْ اَخَافَنِیْ مِنْ

रखता हूँ। और अगर मेरे जुर्म ने मुझको अजाब से डरा रखा है नो मेरी उम्मीदोंने मुझे तेरे अजाब

عُقُوْبَتِکَ فَاِنَّ رَجَآئِیْ قَدْ اَشْعَرَنِیْ بِالْاَمْنِ مِنْ نِقْمَتِکَ وَ

से महफूज बनाने का इशरा दे रखा है। और अगर मेरे गुनाह मुझे मंजिले अजाब मे ले आए हैं

اِنْ کَانَ ذَنْبِیْ قَدْ عَرَضَنِیْ لِعِقَابِکَ فَقَدْ اٰذَنَنِیْ حُسْنُ ثِقَتِیْ

तो मेरा एतेमाद मुझे सवाब की खबर दे रहा है। और अगर गफलत ने मुझे तेरी मुलाकात की

بِثَوَابِکَ وَ اِنْ اَنَامَتْنِی الْغَفْلَةُ عَنِ الْاِسْتِعْدَادِ لِلِقَآئِکَ

तय्यारी से सुला दिया है। तो तेरे करम और नेमतों की मारेफत ने मुझे बेदार कर रखा है। और

فَقَدْ نَبَّهَتْنِی الْمَعْرِفَةُ بِکَرَمِکَ وَ اٰلَآئِکَ وَ اِنْ اَوْحَشَ مَا

अगर इसयान व तुगयान ने मुझे वहशत जदा बना दिया है तो मगफिरत और रिजवान की बशारत

بَیْنِیْ وَ بَیْنَکَ فَرْطُ الْعِصْیَانِ وَ الطُّغْیَانِ فَقَدْ اٰنَسَنِیْ

ने मुझे मानूस कर दिया है। ख़ुदाया तेरे चेहरे की नूरानियत और तेरे मकामे कुद्स के अनवार के

بُشْرَی الْغُفْرَانِ وَ الرِّضْوَانِ اَسْئَلُکَ بِسُبُحَاتِ وَجْهِکَ

द्वारा मै सवाल कर रहा हूँ। और तेरी बेहतरीन मेहेरबानियों और तेरे एहसानात के द्वारा तुझसे दुआ

وَ بِأَنْوَارِ قُدْسِكَ وَاَبْتَهِلُ اِلَيْكَ بِعَوَاطِفِ رَحْمَتِكَ

कर रहा हूँ। के जो मैने उम्मीद लगाई है मेरे इस खयाल को सहीह साबित कर देना अपने अजीम

وَلَطَآئِفِ بِرِّكَ اَنْ تُحَقِّقَ ظَنِّيْ بِمَا اُؤَمِّلُهُ مِنْ جَزِيْلِ

इक्राम और जमील इनाम के जरिए अपनी कुर्बत और अपनी बारगाह मे तकर्रुब इनायत फरमा

اِكْرَامِكَ وَ جَمِيْلِ اِنْعَامِكَ فِي الْقُرْبٰى مِنْكَ وَالزُّلْفٰى

कर और अपनी तरफ निगाह करने की लज़्ज़त अता फरमा कर मै इस समय तुझसे तेरी मेहेबानियों

لَدَيْكَ وَالتَّمَتُّعِ بِالنَّظَرِ اِلَيْكَ وَهَآ اَنَا مُتَعَرِّضٌ لِنَفَحَاتِ

और अतूफतों की खुशबू का उम्मीदवार हूँ। और तेरे जूद व करम की बारिश का मुनतजिर हूँ।

رَوْحِكَ وَعَطْفِكَ وَمُنْتَجِعٌ غَيْثَ جُوْدِكَ وَلُطْفِكَ فَآرٌّ مِنْ

तेरी नाताजगी से भाग कर तेरी रिजा की तरफ आया हूँ। तुझ ही से भाग कर तेरी ही तरफ आया

سَخَطِكَ اِلٰى رِضَاكَ هَارِبٌ مِنْكَ اِلَيْكَ رَاجٍ اَحْسَنَ مَا

हूँ। तेरे बेहतरीन करम कस उम्मीदवार हूँ। तेरे अताया पर एतेबार करता हूँ। और तेरी निगरानी

لَدَيْكَ مُعَوِّلٌ عَلٰى مَوَاهِبِكَ مُفْتَقِرٌ اِلٰى رِعَايَتِكَ اِلٰهِيْ مَا

का मोहताज हूँ। ख़ुदा जो फजल तूने शुरू किया है। उसे मुकम्मल करे द। और जो अपने करम से

بَدَاْتَ بِهٖ مِنْ فَضْلِكَ فَتَمِّمْهُ وَمَا وَهَبْتَ لِيْ مِنْ كَرَمِكَ

अता कर दिया है उसे वापस न लेना। और अपने इल्म से जो परदा पिशी कर दी है। उस परदे को

فَلَا تَسْلُبْهُ وَمَا سَتَرْتَهٗ عَلَيَّ بِحِلْمِكَ فَلَا تَهْتِكْهُ وَمَا

चाक न करना। और मेरे जो बुरे आमाल को जानता है उनहें माफ कर देना। ख़ुदाया मैने तुझको

عَلِمْتَهٗ مِنْ قَبِيْحِ فِعْلِيْ فَاغْفِرْهُ اِلٰهِيْ اِسْتَشْفَعْتُ بِكَ

तेरी बारगाह मे शफी बनाया है और तेरे ही जरिए तेरे कहर से पनाह चाहता हूँ। मै तेरे अहसान

اِلَيْكَ وَاسْتَجَرْتُ بِكَ مِنْكَ اَتَيْتُكَ طَامِعًا فِيْ اِحْسَانِكَ

की तमा और तेरे करम की रगबत लेकर तेरे अहसानात की बरसात का तलबगार हूँ। और तेरे

رَاغِبًا فِيْ امْتِنَانِكَ مُسْتَسْقِيًا وَابِلَ طَوْلِكَ مُسْتَمْطِرًا

फज्लो करम की बारिश की उम्मीद लेकर तेरी रजा का तालिब तेरी बारगाह का कासिद तेरे घाट

غَمَامَ فَضْلِكَ طَالِبًا مَرْضَاتَكَ قَاصِدًا جَنَابَكَ وَارِدًا

पर वारिद होनेवाला बनकर तेरे बुलंद तरीन खैरात की इल्तिमास लेकर तेरी बारगाहे लजाल मे

شَرِيْعَةَ رِفْدِكَ مُلْتَمِسًا سَنِيَّ الْخَيْرَاتِ مِنْ عِنْدِكَ وَافِدًا

हाजरी का इरादा लेकर तेरी जाते अकदस का कस्द करके तेरे गरवाजे को खटखटाने वाला और

اِلٰى حَضْرَةِ جَمَالِكَ مُرِيْدًا وَجْهَكَ طَارِقًا بَابَكَ مُسْتَكِيْنًا

तरी अजमत व जलालत के सामने हकीर व फकीर बनकर हाजिर हुआ हूँ। लेहाजा जिस बात का

لِعَظَمَتِكَ وَجَلَالِكَ فَافْعَلْ بِيْ مَا اَنْتَ اَهْلُهٗ مِنَ الْمَغْفِرَةِ

तू अहल है वही बरताओ मेरे साथ करना और मेरे गुनाहों को माफ कर देना। मुझ पर मेहेरबानी

وَالرَّحْمَةِ وَلَا تَفْعَلْ بِيْ مَا اَنَا اَهْلُهُ مِنَ الْعَذَابِ وَالنِّقْمَةِ

करना और वो बरताओ न करना जिस अजाब और इंतेकाम का मै हकदार हूँ। अपनी रहमत के

بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

सहारे ऐ अरहमर राहिमीन।

छटी मुनाजात

मुनाजात अल-शाकिरीन

शुक्र करनेवालों की मुनाजात

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ख़ुदा के नाम से जो रहमान व रहीम है।

اِلٰهِيْ اَذْهَلَنِيْ عَنْ اِقَامَةِ شُكْرِكَ تَتَابُعُ طَوْلِكَ وَ اَعْجَزَنِيْ

ख़ुदाया तेरा शुकर अदा करने से मुसलसल नेमतों ने गाफिल बना दिया है। और तेरी मदाह व

عَنْ اِحْصَآءِ ثَنَآئِكَ فَيْضُ فَضْلِكَ وَ شَغَلَنِيْ عَنْ ذِكْرِ

सना के अहसा करने से बराबर तेरे करम ने आजिज बना दिया मुसलसल अहसानात ने तेरे

مَحَامِدِكَ تَرَادُفُ عَوَآئِدِكَ وَ اَعْيَانِيْ عَنْ نَشْرِ عَوَارِفِكَ

औसाफ के जिक्र से मशगूल कर दिया है। और बराबर नाजिल होने वाली मेहेरबनियों ने तेरे

تَوَالِیْ اَیَادِیْكَ وَ هٰذَا مَقَامُ مَنِ اعْتَرَفَ بِسُبُوْغِ النَّعْمَآءِ وَ

अहसानात के नशर करने से आजिज बना दिया है। तेरे सामने वो शख्स हाजिर है। इस बात का

قَابَلَهَا بِالتَّقْصِيْرِ وَ شَهِدَ عَلٰى نَفْسِهٖ بِالْاِهْمَالِ وَ التَّضْيِيْعِ

मोतरिफ है के तूने मुकम्मल नेमतें दी हैं। और उसने जवाब मे कोताही की है। वो खुद अपने नफ्स

وَ اَنْتَ الرَّؤُفُ الرَّحِيْمُ الْبَرُّ الْكَرِيْمُ الَّذِیْ لَا يُخَيِّبُ

के बारे मे कोताही और बरबादी का गवाह है। तू ख़ुदाए राऊफ व रहीम और ख़ुदाए मिहसिन

قَاصِدِيْهِ وَلَا يَطْرُدُ عَنْ فِنَآئِهٖ اٰمِلِيْهِ بِسَاحَتِ تَحُطُّ رِحَالُ

व करीम है। जो अपने कासिदों को नाकाम नही करता है। और अपने उम्मीदवारों को अपनी

الرَّاجِيْنَ وَ بِعَرْصَتِكَ تَقِفُ اٰمَالُ الْمُسْتَرْفِدِيْنَ فَلَا

बारगाह से नही हटाता है। तमाम उम्मीदवारों का सामाने सफर तेरी ही बारगाह मे उतर गया है।

تُقَابِلْ اٰمَالَنَا بِالتَّخْيِيْبِ وَ الْاِيَاسِ وَلَا تُلْبِسْنَا سِرْبَالَ

और तमाम तलबगारों की उम्मीदें तेरे ही जनाब मे आकर ?ठहर गई हैं। लेहाजा हमारी उम्मीदों

الْقُنُوْطِ وَالْاِبْلَاسِ اِلٰهِیْ تَصَاغَرَ عِنْدَ تَعَاظُمِ اٰلَآئِكَ

को नाकामी और मायूसी से दो चार न करना और हमे मायूसी और नउम्मीदी का लिबास न

شُكْرِیْ وَ تَضَآئَلَ فِیْ جَنْبِ اِكْرَامِكَ اِيَّایَ ثَنَآئِیْ وَ نَشْرِیْ

पहनाना। ख़ुदाया तेरी अजीम नेमतों के मुकाबले मे मेरा शुक्र बहुत हकीर है और तेरे करम के

جَلَّلْتَنِیْ نِعَمُكَ مِنْ اَنْوَارِ الْاِيْمَانِ حُلَلًا وَ ضَرَبَتْ عَلَيَّ

सामने मेरी हम्द व सना बहुत कमजोर है। तेरू नेमतों ने मुझे अनवारे ईमान के लुबास पहनाए

لَطَائِفُ بِرِّكَ مِنَ الْعِزِّ كِلَلًا وَ قَلَّدَتْنِیْ مِنَنُكَ قَلَائِدَ لَا

हैं। और तेरे एसानात के अल्ताफ ने मेरे सर पर इज़्ज़त कस ताज तखा है। और तेरी मेहेरबानियों

تُحَلُّ وَ طَوَّقَتْنِیْ اَطْوَاقًا لَا تُفَلُّ فَاٰلَاۤئُكَ جَمَّةٌ ضَعُفَ لِسَانِیْ

ने मुझे वो हार पहनाए हैं जो उतर नही सकते और वो तौक पहनाए हैं जो कट नही सकते। तेरी

عَنْ اِحْصَاۤئِهَا وَ نَعْمَاۤؤُكَ كَثِيْرَةٌ قَصُرَ فَهْمِیْ عَنْ اِدْرَاكِهَا

नेमतें बहुत हैं और मेरी जबान उनका अहसा नही कर सकती और तेरे एसानात कसीर है। मेरी

فَضْلًا عَنِ اسْتِقْصَاۤئِهَا فَكَيْفَ لِیْ بِتَحْصِيْلِ الشُّكْرِ وَ

कुव्वते फहेम उनका इद्राक नही कर सकती चे जाए के उनहे शुमार कर सके। मै कैसे शुक्रिया

شُكْرِیْ اِيَّاكَ يَفْتَقِرُ اِلٰی شُكْرٍ فَكُلَّمَا قُلْتُ لَكَ الْحَمْدُ

अदा करूँ जबके हर शुक्र एक नए शुक्र का तलबगार है? न जब मै कहता हूँ तेरे लिए हम्द है। तो

وَجَبَ عَلَيَّ لِذٰلِكَ اَنْ اَقُوْلَ لَكَ الْحَمْدُ اِلٰهِیْ فَكَمَا غَذَّيْتَنَا

उसके लिए एक और फरीजा हो जाता है के एक बार फिर कहूँ के हम्द तेरे लिए है। ख़ुदाया जिस

بِلُطْفِكَ وَ رَبَّيْتَنَا بِصُنْعِكَ فَتَمِّمْ عَلَيْنَا سَوَابِغَ النِّعَمِ

तरह तूने अपने लुत्फ से गिज़ा दी है। और अपने अहसानात के साथ हमको पाला है। तू हमपर

وَادْفَعْ عَنَّا مَكَارِهَ النِّقَمِ وَ اٰتِنَا مِنْ حُظُوْظِ الدَّارَيْنِ

अपनी नेमतों को मुकम्मल करदे। और अपनी नाराजगी और अपने गजब को हमसे दूर करदे।

اَرْفَعَهَا وَ اَجَلَّهَا عَاجِلًا وَاجِلًا وَ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى حُسْنِ

दुनिया और आखिरत मे बुलंद दरजा और जलील इनायत फरमा। यहाँ भी और वहाँ भी। सारी

بَلَآئِكَ وَ سُبُوْغِ نَعْمَآئِكَ حَمْدًا يُوَافِقُ رِضَاكَ وَ يَمْتَرِى

हम्द तेरे लिए है के तूने बेहतरीन करम किया है। मुकम्मल नेमतें दी हैं। ऐसी हम्द जो तेरी रजा के

الْعَظِيْمَ مِنْ بِرِّكَ وَ نَدَاكَ يَا عَظِيْمُ يَا كَرِيْمُ بِرَحْمَتِكَ يَآ

अनुसार हो और तेरे अजीम एहसानात और अताया मेरे हिस्से मे करार देनेवाली है। ऐ ख़ुदा ए

اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

अजीम व करीम अपनी रहमत के सहारे ऐ बेहतरीन रहम करनेवाले।

सातवीं मुनाजात

मुनाजात अल-मुतीना ल्लिह

अल्ला की इताअत करनेवालों की मुनाजात

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ख़ुदा के नाम से जो रहमान व रहीम है।

اَللّٰهُمَّ اَلْهِمْنَا طَاعَتَكَ وَ جَنِّبْنَا مَعْصِيَتَكَ وَ يَسِّرْ لَنَا بُلُوْغَ مَا

ख़ुदाया मुझे अपनी इताअत का इलहाम फरमा। अपनी मासियत से महफूज फरमा। और हम जो

نَتَمَنّٰى مِنِ ابْتِغَآءِ رِضْوَانِكَ وَ اَحْلِلْنَا بُحْبُوحَةَ جِنَانِكَ وَاقْشَعْ عَنْ

तेरी रजा के हुसूल की आरजू रखते हैं उस राह को आसान करदे। हमे जनन्नत मे वारिद करदे।

بَصَائِرِنَا سَحَابَ الْاِرْتِيَابِ وَاكْشِفْ عَنْ قُلُوْبِنَا اَغْشِيَةَ الْمِرْيَةِ

हमारी निगाहों से शर के बादलों को हटा दे और हमारी निगाहों से शके के अंधेरे को दूर करदे।

وَالْحِجَابِ وَ اَزْهِقِ الْبَاطِلَ عَنْ ضَمَآئِرِنَا وَ اَثْبِتِ الْحَقَّ فِيْ سَرَآئِرِنَا

बातिल को हमारे जमीर से नाबूद करदे। और हक को हमारे बातिन मे साबित बनादे क्योंके

فَاِنَّ الشُّكُوْكَ وَالظُّنُوْنَ لَوَاقِحُ الْفِتَنِ وَ مُكَدِّرَةٌ لِصَفْوِ الْمَنَائِحِ

शुकूक व शुब्हात फितने पैदा करते हैं और बेहतरीन एहसानात व अताया को फासिद करदेते

وَالْمِنَنِ اَللّٰهُمَّ احْمِلْنَا فِيْ سُفُنِ نَجَاتِكَ وَ مَتِّعْنَا بِلَذِيْذِ مُنَاجَاتِكَ

हैं। ख़ुदॉया हमको अपनी नजात के सफीनों मे सवार करदे। और मुनाजात की बेहतरीन लज्ज्त

وَ اَوْرِدْنَا حِيَاضَ حُبِّكَ وَ اَذِقْنَا حَلَاوَةَ وُدِّكَ وَ قُرْبِكَ وَاجْعَلْ

इनायात फरमादे। अपनी मुहब्बत के हौज पर वारिद करदे। और अपनी मौत की मि?ठास का

جِهَادَنَا فِيْكَ وَ هَمَّنَا فِيْ طَاعَتِكَ وَ اَخْلِصْ نِيَّاتِنَا فِيْ مُعَامَلَتِكَ

मजा दे दे। हमारे जेहाद को अपने बारे मे और हमारे इरादों को अपनी इताअत के बारे मे करार दे

فَاِنَّا بِكَ وَ لَكَ وَلَا وَسِيْلَةَ لَنَا اِلَيْكَ اِلَّا اَنْتَ اِلٰهِىْ اِجْعَلْنِىْ مِنَ

दे। हमारी नीयतों के तू अपने मामलात मे खालिस बना दे। हम तेरे ही जरया है और तेरे ही लिये

الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ وَ اَلْحِقْنِىْ بِالصَّالِحِيْنَ الْاَبْرَارِ السَّابِقِيْنَ

हैं। तुझ तक आनेका कोई वसीला तेरे अलावा नही है। ख़ुदाया हमको अपने मुन्तखब नेक बंदोंमे

اِلَى الْمَكْرُمَاتِ الْمُسَارِعِيْنَ اِلَى الْخَيْرَاتِ الْعَامِلِيْنَ لِلْبَاقِيَاتِ

करार देदे। और हमे अपने सालेह और नेकबखत बंदोंसे मिलादे। जो बुजुर्गियों की तरफ सबकत

الصَّالِحَاتِ السَّاعِيْنَ اِلٰى رَفِيْعِ الدَّرَجَاتِ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ

करने वाले नेकियों की तरफ बढ़ने वाले और बाकी रहने वाले सालिहात के लिए काम करनेवाले

وَ بِالْاِجَابَةِ جَدِيْرٌ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

और बुलंदतरीन दरजात की तरफ कोशिश करनेवाले हैं। यकीनन तू हर शै पर कादिर और तीबा

आठवीं मुनाजात

मुनाजात अल-मुरीदीन

चाहनेवालों की मुनाजात

कर लेने का अहल है। अपनी रहमत के सहारे ऐ बेहतरीन रहम करनेवाले।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

ख़ुदा के नाम से जो रहमान व रहीम है।

سُبْحَانَكَ مَا اَضْيَقَ الطُّرُقَ عَلٰى مَنْ لَمْ تَكُنْ دَلِيلَهٗ وَمَا

पाक व बेनियाज है तू। उसके रास्ते इनतिहाई तंग हैं जिसका तू रहनुमा न हो। और उसके लिए

اَوْضَحَ الْحَقَّ عِنْدَ مَنْ هَدَيْتَهٗ سَبِيلَهٗ اِلٰهِىْ فَاسْلُكْ بِنَا سُبُلَ

हक इन्तेहाई स्पषट है जिसको तू अपने रास्ते की हिदायत देदे। ख़ुदाया हेम अपनी तरफ पगुचने

الْوُصُوْلِ اِلَيْكَ وَ سَيِّرْنَا فِيْۤ اَقْرَبِ الطُّرُقِ لِلْوُفُوْدِ عَلَيْكَ

के रास्तों की तरफ हिदायत फरमादे। और हमे अपनी बारगाह मे हाजरी के करीबतरीन रास्ते पर

قَرِّبْ عَلَيْنَا الْبَعِيْدَ وَ سَهِّلْ عَلَيْنَا الْعَسِيْرَ الشَّدِيْدَ وَ

चलादे। हर दूर को करीब और हर सख्त और मुश्किल को आसान बनादे। और हमे उन बंदोंसे

اَلْحِقْنَا بِعِبَادِكَ الَّذِيْنَ هُمْ بِالْبِدَارِ اِلَيْكَ يُسَارِعُوْنَ وَبَابَكَ

मिलादे जो तेजी के साथ तेरी तरफ बढ़नेवाले हैं। और हेमशाँ तेरेही दरे करम को खटखटाने वाले

عَلَى الدَّوَامِ يَطْرُقُوْنَ وَ اِيَّاكَ فِى اللَّيْلِ وَ النَّهَارِ يَعْبُدُوْنَ

हैं और दिन रात तेरी ही इबादत करते हैं और तेरी ही हैबत से खौफजदा रहते हैं। जिनके लिए

وَهُمْ مِنْ هَيْبَتِكَ مُشْفِقُوْنَ الَّذِيْنَ صَفَّيْتَ لَهُمُ الْمَشَارِبَ

तूने चश्मे साफ कर दिए हैं और उनको उम्मीदों तक पहुचा दिया है। उनके मतालिब को पूरा कर

وَ بَلَّغْتَهُمُ الرَّغَآئِبَ وَ اَنْجَحْتَ لَهُمُ الْمَطَالِبَ وَ قَضَيْتَ

दिया है। और अपने फजल से उनकी हाजतोंको मुकम्मल कर दिया है। अपनी मोहब्बत से उनके

لَهُمْ مِنْ فَضْلِكَ الْمَآرِبَ وَ مَلَأْتَ لَهُمْ ضَمَآئِرَهُمْ مِنْ

दिलों को भर दिया है। और अपने साफ चश्मे से उनहे सेराब कर दिया है। वो तेरे ही जरिए तेरी

حُبِّكَ وَ رَوَّيْتَهُمْ مِنْ صَافِيْ شِرْبِكَ فَبِكَ اِلٰى لَذِيْذِ مُنَاجَاتِكَ

लजीज मुनाजात तक पहुचे हैं और तेरे ही जरिए अपनी बुलंद तरीन मकासिद को हासिल किया

وَصَلُوْا وَ مِنْكَ اَقْصٰى مَقَاصِدِهِمْ حَصَّلُوْا فَيَا مَنْ هُوَ عَلَى

है। ऐ वो ख़ुदा जो अपनी तरफ आनेवालों का इसतेकबाल करता है। और उनपर मुसलसल

الْمُقْبِلِيْنَ عَلَيْهِ مُقْبِلٌ وَ بِالْعَطْفِ عَلَيْهِمْ عَآئِدٌ مُفْضِلٌ

मेहेबानी करता है। और अपनी याद से गाफिल रहने वालों पर भी मेहेरबान रहता है। और उनहे

وَ بِالْغَافِلِيْنَ عَنْ ذِكْرِهٖ رَحِيْمٌ رَؤُفٌ وَ بِجَذْبِهِمْ اِلٰى بَابِهٖ

मोहब्बत के साथ अपने दरवाजे की तरफ खीच लेता है। ख़ुदाया मेरा सवाल ये है के मेते लिए

وَدُوْدٌ عَطُوْفٌ اَسْئَلُكَ اَنْ تَجْعَلَنِيْ مِنْ اَوْفَرِهِمْ مِنْكَ حَظًّا

अपनी बेहतरीन नेमत का सबसे ज्यादा हिस्सा करार दे और बेहतरीन मंजिल का मालिक बना

وَ اَعْلَاهُمْ عِنْدَكَ مَنْزِلًا وَ اَجْزَلِهِمْ مِنْ وُدِّكَ قِسْمًا وَ

दे। और अपनी मोहब्बत का अजीमतरीन हिस्सा अता फरमा दे। और अपनी मारेफत का सबसे

اَفْضَلِهِمْ فِيْ مَعْرِفَتِكَ نَصِيْبًا فَقَدِ انْقَطَعَتْ اِلَيْكَ هِمَّتِيْ

बुलंद मरतबा देदे। इस लिए के मेरी हिम्मत तेरी ही तरफ है। और नेरी रगबत तेरी ही बारगाह की

وَانْصَرَفَتْ نَحْوَكَ رَغْبَتِيْ فَاَنْتَ لَا غَيْرُكَ مُرَادِيْ وَلَكَ لَا

तरफ है। केवल तू मेरी मुराद है। और तेरे ही लिए मै रातों को जागता हूँ किसी और के लिए नही।

لِسِوَاكَ سَهَرِيْ وَ سُهَادِيْ وَ لِقَآئُكَ قُرَّةُ عَيْنِيْ وَ وَصْلُكَ

तेरी मुलाकात मेरी आखोंकी ?ठंडक है। और तेरा विसाल मेरे नफ्स की उम्मीद है। तेरी ओर मेरा

مُنٰى نَفْسِيْ وَ اِلَيْكَ شَوْقِيْ وَ فِيْ مَحَبَّتِكَ وَ لَهِيْ وَاِلٰى هَوَاكَ

शौक है। और तेरी मुहब्बत मे मेरी बेकरारी है। तेरी ही ख्वाहिश की तरफ मेरा ध्यान है। और तेरी

صَبَابَتِيْ وَ رِضَاكَ بُغْيَتِيْ رُؤْيَتُكَ حَاجَتِيْ وَ جِوَارُكَ طَلِبَتِيْ

ही रझा मेरी आरजू है। तेरी ही मुलाकात मेरी हाजत है। और तेरा ही हमसाया मेरा मतलूब है।

وَ قُرْبُكَ غَايَةُ سُؤْلِيْ وَ فِيْ مُنَاجَاتِكَ رُوْحِيْ وَ رَاحَتِيْ وَ عِنْدَكَ

तेरा कुर्ब मेरे सवालात की इनतेहा है। और तेरी मुनाजात मे मेरी राहत और सुकून है। तेरे पास

دَوَآءُ عِلَّتِيْ وَ شِفَآءُ غُلَّتِيْ وَ بَرْدُ لَوْعَتِيْ وَ كَشْفُ كُرْبَتِيْ فَكُنْ

मेरी बीमारी की दवा है। और मेरी प्यास का इलाज है। गम की बेकरारी की ठंडक। रंज व गम

اَنِيْسِيْ فِيْ وَحْشَتِيْ وَ مُقِيْلُ عَثْرَتِيْ وَ غَافِرَ زَلَّتِيْ وَ قَابِلَ تَوْبَتِيْ

की दूरी तेरे ही जिम्मे है। तू मेरी वहशत मे मेरा अनीस लगजिशों मे संभालने वाला खताओं का

وَ مُجِيبَ دَعْوَتِيْ وَ وَلِيَّ عِصْمَتِيْ وَ مُغْنِيَ فَاقَتِيْ وَلَا تَقْطَعْنِيْ

माफ करनेवाला मेरी तौबा को कुबूल करनेवाला मेरी दुआ का कुबूल करनेवाला मेरी हिफाजत

عَنْكَ وَلَا تُبْعِدْنِيْ مِنْكَ يَا نَعِيْمِيْ وَ جَنَّتِيْ وَ يَا دُنْيَايَ وَ اٰخِرَتِيْ

का जिम्मेदार फाके मे गनी बनानेवाला। मुझे अपने से अलग न करना अपनी बारगाह से दूर न

يَآ اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ.

करना। ऐ मेरी नेमत ऐ मेरी जन्त ऐ मेरी दुनिया व आखिरत। ऐ बेहतरीन मेहेरबानी करनेवाले।

नवीं मुनाजात

मुनाजात अल-मोहिब्बीन

मोहब्बत करनेवालों की मुनाजात

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ख़ुदा के नाम से जो रहमान व रहीम है।

اِلٰهِيْ مَنْ ذَا الَّذِيْ ذَاقَ حَلَاوَةَ مَحَبَّتِكَ فَرَامَ مِنْكَ

ख़ुदाया वो कौन है जिसको तेरी महब्बत का मजा मिल गया है। और इसके बाद भी तेरा

بَدَلًا وَّمَنْ ذَا الَّذِيْ اَنِسَ بِقُرْبِكَ فَابْتَغٰى عَنْكَ حِوَلًا

बदल तलाश कर रहा है। और वो कौन है जो तेरे उन्स से मानूस हो गया और उसके बाद

اِلٰهِیْ فَاجْعَلْنَا مِمَّنِ اصْطَفَیْتَهُ لِقُرْبِكَ وَ وِلَایَتِكَ

तुझसे हटना चाहता है। ख़ुदाया हमे उन लोगों मे करार देदे। जिनको कुर्ब और अपनी

وَ اَخْلَصْتَهُ لِوُدِّكَ وَ مَحَبَّتِكَ وَ شَوَّقْتَهُ اِلٰی لِقَآئِكَ

महब्बत के लिए चुना है और अपनी चाहत और दोस्ती के लिए खालिस करार दिया है।

وَ رَضَّیْتَهُ بِقَضَآئِكَ وَ مَنَحْتَهُ بِالنَّظَرِ اِلٰی وَجْهِكَ وَ

अपनी मुलाकात का मुशताक बनाया है। अपने फैसले से राजी किया है। और अपनी तरफ

حَبَوْتَهُ بِرِضَاكَ وَ اَعَذْتَهُ مِنْ هَجْرِكَ وَ قِلَاكَ وَ بَوَّاْتَهُ

नजर करने की तौफीक इनायत की है। अपनी रिजा का तोहफा दिया है। अपने फिराक और

مَقْعَدَ الصِّدْقِ فِیْ جِوَارِكَ وَ خَصَصْتَهُ بِمَعْرِفَتِكَ وَ

नाराजगी से बचाया है। और अपने हमसाए मे बेहतरीन जगह इनायत की है। अपनी मारेफत

اَهَّلْتَهُ لِعِبَادَتِكَ وَ هَیَّمْتَ قَلْبَهُ لِاِرَادَتِكَ وَ اجْتَبَیْتَهُ

से मखसूस किया है। और अपनी इबादत का हकदार बनाया है। अपनी चाहत हे ले् उनके

لِمُشَاهَدَتِكَ وَ اَخْلَیْتَ وَجْهَهُ لَكَ وَ فَرَّغْتَ فُؤَادَهُ

दिलों को गिरवीदा कर लिया है। और अपने मुशाहिदे के लिए उनहे चुन लिया है। अपनी

لِحُبِّكَ وَ رَغَّبْتَهُ فِیْمَا عِنْدَكَ وَ اَلْهَمْتَهُ ذِكْرَكَ وَ

तरफ तवज्ञो की एक सूई इनायत की है। और अपनी मुहब्बत के लिए उनके दिलों को खाली

اَوْزَعْتَهُ شُكْرَكَ وَ شَغَلْتَهُ بِطَاعَتِكَ وَ صَيَّرْتَهُ مِنْ

कर लिया है। अपने सवाब के लिए रागिब बनाया है। और अपने जिक्र का इलहाम किया

صَالِحِيْ بَرِيَّتِكَ وَاخْتَرْتَهُ لِمُنَاجَاتِكَ وَ قَطَعْتَ عَنْهُ

है। अपनी शुक्र की तौफीक दी है। और अपनी इबादत के लिए मश्गूल किया है। अपने नेक

كُلَّ شَيْءٍ يَقْطَعُهُ عَنْكَ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنَا مِمَّنْ دَابُهُمُ

बंदोंमे करार दिया है। और अपनी मुनाजात के लिए चुन लिया है। और हर उस शै से अलग

الْاِرْتِيَاحُ اِلَيْكَ وَالْحَنِيْنَ وَدَهْرُهُمُ الزَّفْرَةُ وَالْاَنِيْنَ

कर दिया है जो बंदे को तुझसे अलग कर सके। ख़ुदाया मुझे उन लोगों मे करार देदे जिनका

جِبَاهُهُمْ سَاجِدَةٌ لِعَظَمَتِكَ وَ عُيُوْنُهُمْ سَاهِرَةٌ

तरीका तेरी तरफ तवज्ओ है और इश्तियाक है। और उनकी जिनदगी आशिकाना नाला व

فِيْ خِدْمَتِكَ وَ دُمُوْعُهُمْ سَآئِلَةٌ مِنْ خَشْيَتِكَ وَ

आह से पुर हैं। और पेशानियाँ तेरे सजदे मे झुकी हुई हैं। और आखें तेरी खिदमत मे बेदार

قُلُوْبُهُمْ مُتَعَلِّقَةٌ بِمَحَبَّتِكَ وَ اَفْئِدَتُهُمْ مُنْخَلِعَةٌ مِنْ

हैं। उनके आँसू तेरे खौफ से बह रहे हैं। और उनके दिल तेरी मुहब्बत से वाबस्ता हैं। उनके

مَهَابَتِكَ يَامَنْ اَنْوَارُ قُدْسِهِ لِاَبْصَارِ مُحِبِّيْهِ رَآئِقَةٌ وَ

कुलूब तेरे खौफ से दुनिया से अलाग हो गए हैं। ऐ वो के जिसके अनवारे कुदसिया चाहने

سُبُحَاتُ وَجْهِهٖ لِقُلُوْبِ عَارِفِيْهِ شَآئِقَةٌ يَا مُنٰى قُلُوْبِ

वालों की निगाह के लिए रौशन हैं। और उसकी जात की तजल्लिया आरिफीन के दिलों के

الْمُشْتَاقِيْنَ وَيَا غَايَةَ اٰمَالِ الْمُحِبِّيْنَ اَسْئَلُكَ حُبَّكَ

लिए नुमाया है। ऐ मुशताकीन के दिलों की आरजू और ऐ चाहने वालों की आरजू की इंतेहा।

وَحُبَّ مَنْ يُّحِبُّكَ وَحُبَّ كُلِّ عَمَلٍ يُوْصِلُنِيْ اِلٰى قُرْبِكَ

मै तुझसे तेरी और तेरे चाहने वालों की और हर नेक अमल की मोहब्बत चाहता हूँ। जो तेरे

وَاَنْ تَجْعَلَكَ اَحَبَّ اِلَيَّ مِمَّا سِوَاكَ وَاَنْ تَجْعَلَ حُبِّيْ

पास पहुचा`द। और तुझे सारी कायनात से ज्यादा मगबूब बना`द। और उसके बाद तू उसी

اِيَّاكَ قَائِدًا اِلٰى رِضْوَانِكَ وَشَوْقِيْ اِلَيْكَ ذَائِدًا عَنْ

रजा को अपनी रजा तल पहुचाने का जरिया है। और उसी शौक को अपनी मासियात से

عِصْيَانِكَ وَامْنُنْ بِالنَّظَرِ اِلَيْكَ عَلَيَّ وَانْظُرْ بِعَيْنِ

बचने का वसीला बना देना। मुझपर ये एहसान कर के मेरी निगाह तेरी तरफ रहे। और तू

الْوُدِّ وَالْعَطْفِ اِلَيَّ وَلَا تَصْرِفْ عَنِّيْ وَجْهَكَ وَاجْعَلْنِيْ

खुद मुझे मुहब्बत व नर्मा की निगाह से देखता रहे। अपने मूह को मुझसे मोड़ न लेना और

مِنْ اَهْلِ الْاِسْعَادِ وَالْحُظْوَةِ عِنْدَكَ يَا مُجِيْبُ يَا اَرْحَمَ

मुझे अहले सआदत और नेक बखतों मे करार दे देना ऐ दुआओं के कुबूल करने वाले और

الرَّاحِمِينَ.

ऐ बेहतरीन रहेम करने वाले।

दसवीं मुनाजात

मुनाजात मुतवस्सिलीन

वसीला मांगनेवालों की मुनाजात

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ख़ुदा के नाम से जो रहमान व रहीम है।

اِلٰهِىْ لَيْسَ لِىْ وَسِيْلَةٌ اِلَيْكَ اِلَّا عَوَاطِفُ رَاْفَتِكَ وَلَا

खुदाया मेरे पास तेरी तरफ आने का कोई वसीला तेरी राफ्त व अतूफत के अलावा नही है। और

لِىْ ذَرِيْعَةٌ اِلَيْكَ اِلَّا عَوَارِفُ رَحْمَتِكَ وَ شَفَاعَةُ نَبِيِّكَ

कोइ जरिया तेरी नुमाया रहमतों के अलावा नही है। या फिर तेरे उस नबी ए रहमत की शफाअत

نَبِيِّ الرَّحْمَةِ وَ مُنْقِذِ الْاُمَّةِ مِنَ الْغُمَّةِ فَاجْعَلْهُمَا لِىْ

है जो उम्मत को रंज व गम से नजात देने वाले हैं। ख़ुदाया उन दोनों को मेरे लिए जरिया करार देदे

سَبَبًا اِلٰى نَيْلِ غُفْرَانِكَ وَصَيِّرْهُمَا لِىْ وُصْلَةً اِلَى الْفَوْزِ

अपनी मगफिरत को हासिल करने का और अपनी रजा की मंजिल तक पहुचने का वसीला बना

بِرِضْوَانِكَ وَقَدْ حَلَّ رَجَآئِیْ بِحَرَمِ کَرَمِكَ وَحَطَّ طَمَعِیْ

दे। इस समाय मेरी उम्मीद तेरी हरीमे करम मे है। और मेरी तमाअ तेरे आसताना ए जूद व फजल

بِفِنَآءِ جُوْدِكَ فَحَقِّقْ فِيْكَ اَمَلِیْ وَاخْتِمْ بِالْخَيْرِ عَمَلِیْ

पर है। मेरी उम्मीदों को पूरा फरमा और मेरा अंजाम ब खैर फरमा। मुझे अपने उन मुनतखब

وَاجْعَلْنِیْ مِنْ صَفْوَتِكَ الَّذِيْنَ اَحْلَلْتَهُمْ بُحْبُوْحَةَ

बंदों मे करार देदे जिनको तूने जन्त मे जगह दी है। और दारे करमामत मे कयाम इनायात किया

جَنَّتِكَ وَ بَوَّاتَهُمْ دَارَ كَرَامَتِكَ وَ اَقْرَرْتَ اَعْيُنَهُمْ

है। और जिनकी निगाहों को रोजे कयामत नजर करने से खुनकी इनायत की है। और जिनको

بِالنَّظَرِ اِلَيْكَ يَوْمَ لِقَآئِكَ وَاَوْرَثْتَهُمْ مَنَازِلَ الصِّدْقِ

अपने हमसाए मे मंजिले सिद्‌क का वारिस बनाया है। ऐ वो परवरदिगार जिस्से ज्यादा करीम की

فِیْ جِوَارِكَ يَا مَنْ لَا يَفِدُ الْوَافِدُوْنَ عَلٰی اَكْرَمَ مِنْهُ وَلَا

बारगाह मे कोई वारिद होने वाला कहीं वारिद नही हुआ है। और जिस्से ज्यादा मेहेरबान किसी

يَجِدُ الْقَاصِدُوْنَ اَرْحَمَ مِنْهُ يَا خَيْرَ مَنْ خَلَا بِهٖ وَحِيْدٌ وَ

भी इरादा करने वाले को नही मिला है। ऐ वो बेहतरीन मोनिस जो तनहा लोगों के साथ रहता

يَا اَعْطَفَ مَنْ اٰوٰی اِلَيْهِ طَرِيْدٌ اِلٰی سَعَةِ عَفْوِكَ مَدَدْتُ

है। ऐ वो बेहतरीन मेहेरबान जिसकी तरफ हर भागा हुआ पनाह लेता है। मैने अपना हाथ तेरी

يَدِىْ وَبِذَيْلِ كَرَمِكَ اَعْلَقْتُ كَفِّىْ فَلَا تُوْلِنِىْ الْحِرْمَانَ

वुसअते मगफिरत की तरफ बढ़ा दिया है। और तेरे दामने करम से वाबस्ता हो गया हूँ। अब मुझे

وَلَا تُبْلِنِىْ بِالْخَيْبَةِ وَالْخُسْرَانِ يَا سَمِيْعَ الدُّعَاۤءِ يَا اَرْحَمَ

महरूम न रखना और नाकामी और नाउम्मीदी मे मुब्तिला न करना। ऐ दुआओं के सुनने् वाले

الرَّاحِمِيْنَ.

और बेहतरीन मेहेरबानी करने वाले।

ग्यारहंवी मुनाजात

मुनाजात अल-मुफ्ताक़िरीन

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ख़ुदा के नाम से जो रहमान व रहीम है।

اِلٰهِىْ كَسْرِىْ لَا يَجْبُرُهُ اِلَّا لُطْفُكَ وَ حَنَانُكَ وَ فَقْرِىْ

ख़ुदाया मेरी शिकस्तगी को तेरे लुत्फ व मेहेरबानी के अलावा कोई जोड़ नही सकता है। और मेरे

لَا يُغْنِيْهِ اِلَّا عَطْفُكَ وَ اِحْسَانُكَ وَ رَوْعَتِىْ لَا يُسَكِّنُهَا

फकर को तेरी मेहेबानी और एहसान के अलावा कोई गनी नही बना सकता है। मेरे खौफ को तेरी

اِلَّا اَمَانُكَ وَ ذِلَّتِىْ لَا يُعِزُّهَآ اِلَّا سُلْطَانُكَ وَاُمْنِيَّتِىْ

अमान के अलावा कोई सुकून नही दे सकता है। और मेरी जिल्लत को तेरी ताकत के अलावा

لَا يُبَلِّغُنِيْهَآ اِلَّا فَضْلُكَ وَ خَلَّتِىْ لَا يَسُدُّهَآ اِلَّا طَوْلُكَ

कोई इज्ज़त नही बना सकता है। मेरी उम्मीदों तक तेरे फजल के अलावा मुझे कोई पहुचा नही

وَ حَاجَتِىْ لَا يَقْضِيْهَا غَيْرُكَ وَ كَرْبِىْ لَا يُفَرِّجُهٗ سِوٰى

सकता है। और मेरी हाजतों को तेरे करम के अलावा कोई अत ानही कर सकता है। मेरी जरूरत

رَحْمَتِكَ وَ ضُرِّىْ لَا يَكْشِفُهٗ غَيْرُ رَافَتِكَ وَ غُلَّتِىْ لَا

को तेरे अलावा कोई पूरा नही कर सकता है। और मेरे रंज को तेरी रहमत के अलावा कोई दूर

يُبَرِّدُهَا اِلَّا وَصْلُكَ وَ لَوْعَتِىْ لَا يُطْفِيْهَا اِلَّا لِقَآؤُكَ وَ

नही कर सकता है। मेरे नुकसान को तेरी मेहेरबानी के अलावा कोई दफा नही कर सकता है।

شَوْقِىْ اِلَيْكَ لَا يَبُلُّهٗ اِلَّا النَّظَرُ اِلٰى وَجْهِكَ وَ قَرَارِىْ لَا

और मेरी हरारते शैक को तेरे विसाल के अलावा कोई सर्द नही कर सकता है। मेरे शोला ए सोज

يَقِرُّ دُوْنَ دُنُوِّىْ مِنْكَ وَ لَهْفَتِىْ لَا يَرُدُّهَا اِلَّا رَوْحُكَ وَ

व गुदाज को तेरी मुलाकात के अलावा कोई ?ठंडा नही कर सकता है। और मेरे शौक को तेरी

سُقْمِىْ لَا يَشْفِيْهِ اِلَّا طِبُّكَ وَ غَمِّىْ لَا يُزِيْلُهٗ اِلَّا قُرْبُكَ

जात की तरफ निगाह के अलावा कोई सेरान नही कर सकता है। मेरा सुकून तेरे कुर्ब के बगैर

وَ جُرْحِیْ لَا یُبْرِئُهُ اِلَّا صَفْحُكَ وَ رَیْنُ قَلْبِیْ لَا یَجْلُوْهُ اِلَّا

मुकम्म्ल नही हो सकता है। और मेरी तड़प तेरी मेहेरबानी के अलावा कोई दूर नही कर सकता

عَفْوُكَ وَ وَسْوَاسُ صَدْرِیْ لَا یُزِیْحُهُ اِلَّا اَمْرُكَ فَیَا

है। मेरी बीमारी को तेरे इलाज के अलावा कोई शफा नही दे सवता है। और मेरे गम को तेरे गम

مُنْتَهٰى اَمَلِ الْاٰمِلِیْنَ وَ یَا غَایَةَ سُؤْلِ السَّآئِلِیْنَ وَ یَا

के अलावा कोई जाएल नही कर सकता है। मेरे जखम को तेरी माफी के अलावा कोई भर नही

اَقْصٰى طَلِبَةِ الطَّالِبِیْنَ وَ یَآ اَعْلٰى رَغْبَةِ الرَّاغِبِیْنَ وَ

सकता है। और मेरे दिल के जंग को तेरे अफू व करम के अलावा कोइ साफ नही सकता है। मेरे

یَا وَلِیَّ الصَّالِحِیْنَ وَ یَا اَمَانَ الْخَآئِفِیْنَ وَ یَا مُجِیْبَ دَعْوَةِ

सीने के वसवास को तेरे हुक्म के अलावा कोइ जाएल नही सकता है। ऐ उम्मीदवारों की उम्मीद

الْمُضْطَرِّیْنَ وَ یَا ذُخْرَ الْمُعْدِمِیْنَ وَ یَا كَنْزَ الْبَآئِسِیْنَ

की इनतेहा। और साएलों के सवाल की हद्दे आखिर। तलब करने वालों की तलब की आखरी

وَ یَا غِیَاثَ الْمُسْتَغِیْثِیْنَ وَ یَا قَاضِیَ حَوَآئِجِ الْفُقَرَآءِ

मंजिल। और रगबत करने वालों की रगबत की बुलंद तरीन खाहिश। ऐ सालिहीन के पालने

وَالْمَسَاكِیْنِ وَ یَا اَكْرَمَ الْاَكْرَمِیْنَ وَ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ

वाले। खाएफीन को पनाह देने वाले। मुजतरों की दुआ सुन्ने वाले। फकीरों के जखीरे। परेशान

لَكَ تَخَضُّعِیْ وَ سُؤَالِیْ وَ اِلَیْكَ تَضَرُّعِیْ وَ ابْتِهَالِیْ اَسْئَلُكَ

हालों के खजाने। फरायादों के फरयाद रस। फुकरा व मसाकीन के हाजत रवा। बेहतरीन करम

اَنْ تُنِیْلَنِیْ مِنْ رَوْحِ رِضْوَانِكَ وَ تُدِیْمَ عَلَیَّ نِعَمَ

करनेवाले। बेहतरीन मेहेरबानी करनेवाले। तेरे ही लिए मेरा खुजू व खुशू मेरा सवाल मेरी फरयाद

امْتِنَانِكَ وَ هَا اَنَا بِبَابِ كَرَمِكَ وَاقِفٌ وَ لِنَفَخَاتِ

और मेरी दुआएं हैं। मेरा सवाल ये है के मुझे अपनी रिजा की राहत इनायत फरमा और मेरे ऊपर

بِرِّكَ مُتَعَرِّضٌ وَ بِحَبْلِكَ الشَّدِیْدِ مُعْتَصِمٌ وَ بِعُرْوَتِكَ

अपने इनामात को दायमी बना दे। मै इस समय तेरे करम के दरवाजे पर खडा हूँ। और तेरी

الْوُثْقٰى مُتَمَسِّكٌ اِلٰهِیْ ارْحَمْ عَبْدَكَ الذَّلِیْلَ ذَا اللِّسَانِ

मेहेरबानियों की नसीम का तलबगार हूँ। तेरे मजबूत रिशते से मुतमस्सिक हूँ। और तेरी मोहकम

الْكَلِیْلِ وَ الْعَمَلِ الْقَلِیْلِ وَ امْنُنْ عَلَیْهِ بِطَوْلِكَ الْجَزِیْلِ

हिदायत की रस्सी पकड़े हूँ। ख़ुदाया अपने इस बंदे जलील पर रहेम फरमा जिसकी जबान गूँगी है

وَ اكْنُفْهُ تَحْتَ ظِلِّكَ الظَّلِیْلِ یَا كَرِیْمُ یَا جَمِیْلُ یَا اَرْحَمَ

जिसका अमल कलील है। और उसपर अपनी कसीर मेहेरबानी से करम फरमा। अमनी रहमत

الرَّاحِمِیْنَ.

के जेरे साया पनाह देदे। ऐ करीम ऐ जमील ऐ बेहतरीन रहेम करने वाले।

बारहवीं मुनाजात

मुनाजात अल-आरिफ़ीन

मारिफ़त रखनेवालों की मुनाजात

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

ख़ुदा के नाम से जो रहमान व रहीम है।

اِلٰهِيْ قَصُرَتِ الْاَلْسُنُ عَنْ بُلُوْغِ ثَنَآئِكَ كَمَا يَلِيْقُ بِجَلَالِكَ وَ

परवरदिगार जबाने तेरी उस मदह व सना तक पहुचने से कासिर हैं जो तेरे जलाल की शायाने शान

عَجَزَتِ الْعُقُوْلُ عَنْ اِدْرَاكِ كُنْهِ جَمَالِكَ وَانْحَسَرَتِ الْاَبْصَارُ دُوْنَ

है। और अक्लें तेरे जमाल की हकीकत के इद्राक से आजिज है। निगाहें तेरे चेहरे की जलालत को

النَّظَرِ اِلٰى سُبُحَاتِ وَجْهِكَ وَلَمْ تَجْعَلْ لِلْخَلْقِ طَرِيْقًا اِلٰى مَعْرِفَتِكَ

देखने से कासिर हैं। और तूने अपनी मखलूकात के लिए अपनी मारेफत तक पहुचने का कोई

اِلَّا بِالْعَجْزِ عَنْ مَعْرِفَتِكَ اِلٰهِيْ فَاجْعَلْنَا مِنَ الَّذِيْنَ تَرَسَّخَتْ

रास्ता इसके अलावा नही करार दिया है के तेरी मगफिरत से आजिजी का इक्रार लर लें। ख़ुदाया

اَشْجَارُ الشَّوْقِ اِلَيْكَ فِيْ حَدَآئِقِ صُدُوْرِهِمْ وَاَخَذَتْ لَوْعَةُ مَحَبَّتِكَ

हमे उन लोगोच मे करार देदे जिनके दिलों के बागात मे तेरे शौक के दरखत रासिख हो गए हैं।

بِمَجَامِعِ قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ اِلٰى اَوْكَارِ الْاَفْكَارِ يَاْوُوْنَ وَفِيْ رِيَاضِ الْقُرْبِ

और तेरी मोगब्बत की तपिश ने जिनके दिलों पर छा गई है। वो फिलहाल आशियाना अफकार

وَ الْمُكَاشَفَةِ يَرْتَعُوْنَ وَ مِنْ حِيَاضِ الْمَحَبَّةِ بِكَاْسِ الْمُلَاطَفَةِ

मे पनाह लिए हुए हैं। और रियाजे कुर्ब और मुकाशिफात मे गर्दिश कर रहे है। तेरी माहब्बत के

يَكْرَعُوْنَ وَ شَرَايِعَ الْمُصَافَاتِ يَرِدُوْنَ قَدْ كُشِفَ الْغِطَآءُ عَنْ

हौज से पानी पीते हैं। और तेरे इखलास के घाट पर वरिद हो रहे हैं। उनकी निगाहों से परदे उ?ठा

اَبْصَارِهِمْ وَانْجَلَتْ ظُلْمَةُ الرَّيْبِ عَنْ عَقَآئِدِهِمْ وَ ضَمَآئِرِهِمْ

दिए गए हैं। और उनके दिल व जमीर से शुकूक के अंधेरे मिट गए हैं। उनके अकायद से शक व

وَانْتَفَتْ مُخَالَجَةُ الشَّكِّ عَنْ قُلُوْبِهِمْ وَ سَرَآئِرِهِمْ وَانْشَرَحَتْ

शुबाह की तारीकी महो हो गई है। और तहकीकी मारेफत से उनके सीने कुशादा हो गए हैं। और

بِتَحْقِيْقِ الْمَعْرِفَةِ صُدُوْرُهُمْ وَعَلَتْ لِسَبْقِ السَّعَادَةِ فِي الزَّهَادَةِ

सादत हासिल करने के लिए जोहद की राह मे उनकी हिम्मतें बुलंद हो गई हैं। और इताअत के

هِمَمُهُمْ وَ عَذُبَ فِيْ مَعِيْنِ الْمُعَامَلَةِ شِرْبُهُمْ وَ طَابَ فِيْ مَجْلِسِ

जरिए से उनका चश्मा मी?ठा हो गया है। मजलिसे उन्स मे उनका बातिन पाकीजा हो गया है।

الْاُنْسِ سِرُّهُمْ وَ اَمِنَ فِيْ مَوْطِنِ الْمَخَافَةِ سِرْبُهُمْ وَاطْمَاَنَّتْ

और महल्ले खौफ मे उनका रास्ता महफूज हो गया है। वो संतुष्ट हैं के उनके दिल रब्बुल आलमीन

بِالرُّجُوْعِ اِلٰى رَبِّ الْاَرْبَابِ اَنْفُسُهُمْ وَ تَيَقَّنَتْ بِالْفَوْزِ وَالْفَلَاحِ

की तरफ राजे हैं। और उनकी रूहोंको कामयाबी और फलाह का यकीन है। उनकी आखों को

اَرْوَاحُهُمْ وَقَرَّتْ بِالنَّظَرِ اِلٰى مَحْبُوْبِهِمْ اَعْيُنُهُمْ وَاسْتَقَرَّ بِاِدْرَاكِ

महबूब के दीदार से खुनकी हासिल हो गई है। और उनके दिलों को मुद्दुआ के हासिल होने से

السُّؤْلِ وَنَيْلِ الْمَاْمُوْلِ قَرَارُهُمْ وَرَبِحَتْ فِيْ بَيْعِ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ

सुकून मिल गया है। दनिया को आखिरत के बदले बचने मे उनकी तिजारत कामयान हो गई है।

تِجَارَتُهُمْ اِلٰهِىْ مَا اَلَذَّ خَوَاطِرَ الْاِلْهَامِ بِذِكْرِكَ عَلَى الْقُلُوْبِ

ख़ुदाया दिलों के लिए तेरे जिक्र का इलहाम किस कदर लजीज है। और तेरी बारगाह की तरफ

وَمَا اَحْلَى الْمَسِيْرَ اِلَيْكَ بِالْاَوْهَامِ فِيْ مَسَالِكِ الْغُيُوْبِ وَ مَا

आने मे हर खयाल किस कदर हलावत का अहसास करता है। तेरे प्रेम का स्वाद कितना पाक है।

اَطْيَبَ طَعْمُ حُبِّكَ وَمَا اَعْذَبَ شِرْبَ قُرْبِكَ فَاَعِذْنَا مِنْ طَرْدِكَ

और तेरे निकटत्व का झरना कितना मी?ठा है। हमे अपनी दूर से बचा ले। और अपने मखसूस

وَاِبْعَادِكَ وَجْعَلْنَا مِنْ اَخَصِّ عَارِفِيْكَ وَاَصْلَحِ عِبَادِكَ وَاَصْدَقِ

आरिफों और अपने सालेह बंदों मे से सच्चे इताअत गुजार और खालिस इबादत गुजारों मे करार

طَآئِعِيْكَ وَاَخْلَصِ عُبَّادِكَ يَا عَظِيْمُ يَا جَلِيْلُ يَا كَرِيْمُ يَا مُنِيْلُ

दे देना ऐ साहेबे अजमत व जलालत ऐ साहेबे करम व अता। अपनी रहमत व मेहेरबानी फरमा

بِرَحْمَتِكَ وَ مَنِّكَ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

ऐ बेहतरीन मेहेरबानी करने वाले।

तेरहवीं मुनाजात

मुनाजात अल-ज़ाकिरीन

याद करनेवालों की मुनाजात

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ख़ुदा के नाम से जो रहमान व रहीम है।

اِلٰهِیْ لَوْلَا الْوَاجِبُ مِنْ قَبُوْلِ اَمْرِكَ لَنَزَّهْتُكَ مِنْ

ख़ुदाया अगर तेरे अम्र का कुबूल करना वाजिब न होता मै तुझे अपने ज़िक्र करने से भी

ذِكْرِیْ اِيَّاكَ عَلٰی اَنَّ ذِكْرِیْ لَكَ بِقَدْرِیْ لَا بِقَدْرِكَ وَمَا

पाकीज़ातर क़रार देता। जब के मेरा ाज़िक्र मेरी औक़ात ही के मुताबिक़ है तेरी अज़मत के

عَسٰی اَنْ يَبْلُغَ مِقْدَارِیْ حَتّٰی اَجْعَلَ مَحَلًّا لِتَقْدِيْسِكَ وَ

मुताबिक़ नही है। और मेरी पहुँच ही कहाँ तक है के मै तेरी तक़दीस की मंज़िल क़रार पा

مِنْ اَعْظَمِ النِّعَمِ عَلَيْنَا جَرَيَانُ ذِكْرِكَ عَلٰی اَلْسِنَتِنَا وَ

सकूँ। हम पर तेरी अज़ीम तरीन नेमत ये है के तेरा ाज़िक्र हमारी ज़ाबानों पर जारी रहे। और

اِذْنُكَ لَنَا بِدُعَآئِكَ وَ تَنْزِيْهِكَ وَ تَسْبِيْحِكَ اِلٰهِيْ فَاَلْهِمْنَا

तूने हमके दुआ और तसबीह व तक़दीस की इजाज़त देदी है। ख़ुदाया अकेले मे और लोगों

ذِكْرَكَ فِي الْخَلَآءِ وَالْمَلَآءِ وَ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْاِعْلَانِ

मे दिन व रात मे अलल एलान व ख़ुफ़िया तरीक़े से ख़ुशी व रंज हर हाल मे अपने ज़िक्र

وَ الْاِسْرَارِ وَ فِي السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَ اٰنِسْنَا بِالذِّكْرِ الْخَفِيِّ

का इलहाम अता फ़रमा और अपने ख़ुफ़िया ज़िक्र से मानूस करदे और हमे पाका◌rजा

وَاسْتَعْمِلْنَا بِالْعَمَلِ الزَّكِيِّ وَالسَّعْيِ الْمَرْضِيِّ وَ جَازِنَا

अमल पसंददीदा सई की राह पर लगा दे। और हमे मुकम्मल मा◌rजान के साथ जज़ा अता

بِالْمِيْزَانِ الْوَفِيِّ اِلٰهِيْ بِكَ هَامَتِ الْقُلُوْبُ الْوَالِهَةُ وَ

फ़रमा। ख़ुदाया हैरान व सरगरदाँ दिल तेरी वजेह से सरगरदाँ है। और जुदागाना अक़्लें

عَلٰى مَعْرِفَتِكَ جُمِعَتِ الْعُقُوْلُ الْمُتَبَايِنَةُ فَلَا تَطْمَئِنُّ

तेरी मारेफ़त पर जमा कर दी गई हैं। अब दिलों को तेरी याद के अलावा कहीं इत्मेनान

الْقُلُوْبُ اِلَّا بِذِكْرَاكَ وَلَا تَسْكُنُ النُّفُوْسُ اِلَّا عِنْدَ

नही मिलता है। और नुफ़ूस को तेरे दीदार के अलावा कहीं सुकून नही मिलता है। तू वो है

رُؤْيَاكَ اَنْتَ الْمُسَبَّحُ كُلِّ مَكَانٍ وَالْمَعْبُوْدُ فِيْ كُلِّ زَمَانٍ

जिसकी तसबीह हर मंज़ल पर होती है। और जिसकी इबादत हर ज़माने मे की जाती है।

وَالْمَوْجُوْدُ فِيْ كُلِّ اَوَانٍ وَالْمَدْعُوُّ بِكُلِّ لِسَانٍ وَالْمُعَظَّمُ

तू हर लहज़े मे मौजूद है। और हर ज़बान से पुकारा जाता है। हर दिल मे तेरी अज़मत है।

فِيْ كُلِّ جَنَانٍ وَ اَسْتَغْفِرُكَ مِنْ كُلِّ لَذَّةٍ بِغَيْرِ ذِكْرِكَ وَ

ख़ुदाया मै तेरी याद के अलावा हर लज़्ज़त से माफ़ी चाहता हूँ। और तेरे उन्स के अलावा हर

مِنْ كُلِّ رَاحَةٍ بِغَيْرِ اُنْسِكَ وَ مِنْ كُلِّ سُرُوْرٍ بِغَيْرِ قُرْبِكَ

राहत से अलग हूँ। तेरे निकटत्व के अलावा हर सुरूर से और तेरी इताअत के अलावा हर

وَ مِنْ كُلِّ شُغْلٍ بِغَيْرِ طَاعَتِكَ اِلٰهِيْ اَنْتَ قُلْتَ وَ قَوْلُكَ

मशग़ले से पनाह माँगता हूँ। ख़ुदाया तूने फ़रमाया है और सच फ़रमाया है के ईमान वालों

الْحَقُّ يَآ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا وَ

अल्लाह को मुसलसल याद करते रहो और सुबह व शाम उसकी तसबीह करते रहो। और

سَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَ اَصِيْلًا وَ قُلْتَ وَ قَوْلُكَ الْحَقُّ فَاذْكُرُوْنِيْ

तूने ये भी फ़रमाया है तेरा क़ौल बरहक है के तुम मुझे याद करो मै तुम्हें याद करूँगा। ख़ुद

اَذْكُرْكُمْ فَاَمَرْتَنَا بِذِكْرِكَ وَ وَعَدْتَنَا عَلَيْهِ اَنْ تَذْكُرَنَا

तूने अपने ाज़िक्र का हुक्म दिया है। और ये वादा किया है के तू हमको याद करेगा हमे शरफ़

تَشْرِيْفًا لَنَا وَ تَفْخِيْمًا وَ اِعْظَامًا وَ هَا نَحْنُ ذَاكِرُوْكَ كَمَا

और अज़मत देगा के तू मालिक है अब हम तो तेरे हुक्म के अनुसार तेरा ज़िक्र कर रहे

اَمَرْتَنَا فَاَنْجِزْ لَنَا مَا وَعَدْتَنَا يَا ذَاكِرَ الذَّاكِرِيْنَ وَيَآ

हैं। तू अपने वादे को पूरा फ़रमा दे ऐ याद करनेवालों को याद रखने वाले और ऐ बेहतरीन

اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

मेहेरबानी करनेवाले।

चौदहवीं मुनाजात

मुनाजात अल-मोतसमीन

मज़बूती से पकड़नेवालों की मुनाजात

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ख़ुदा के नामसे जो रहमान व रहीम है।

اَللّٰهُمَّ يَا مَلَاذَ اللَّآئِذِيْنَ وَ يَا مَعَاذَ الْعَآئِذِيْنَ وَ يَا مُنْجِيَ

ऐ ख़ुदा ऐ पनाह तलब करनेवालों की पनाह गाह और नजात माँगने वालों की मंजिले नजात।

الْهَالِكِيْنَ وَيَا عَاصِمَ الْبَآئِسِيْنَ وَيَا رَاحِمَ الْمَسَاكِيْنِ وَيَا مُجِيْبَ

हलाक होनेवालों को नजात देनेवाले। और बेसहारा लोगों के बचाने वाले और मिसकीनों पर रहेम

الْمُضْطَرِّيْنَ وَ يَا كَنْزَ الْمُفْتَقِرِيْنَ وَ يَا جَابِرَ الْمُنْكَسِرِيْنَ وَ يَا

करने वाले। परेशान हालों की दुआ सुन्ने वाले। फ़क़ीरों के ख़ज़ाने। टूटे दिलों को जोड़नेवाले।

مَاْوَى الْمُنْقَطِعِيْنَ وَيَانَاصِرَ الْمُسْتَضْعَفِيْنَ وَيَا مُجِيْرَ الْخَآئِفِيْنَ

सबसे कट जानेवालों की पनाहगाह। कमज़ोरों के मददगार। डरे हुए लोगों के पनाह देनेवाले।

وَيَامُغِيْثَ الْمَكْرُوْبِيْنَ وَيَا حِصْنَ اللاّجِيْنَ اِنْ لَمْ اَعُذْ بِعِزَّتِكَ

उदास लोगों की फ़रयाद सुन्नेवाले। पनाह माँगनेवालों के क़िले। ख़ुदाया अगर तेरी इज़्ज़त मे

فَبِمَنْ اَعُوْذُ وَاِنْ لَمْ اَلُذْ بِقُدْرَتِكَ فَبِمَنْ اَلُوْذُ وَقَدْ اَلْجَاَتْنِى

पनाह न मिली तो किसकी पनाह तलाश करूँगा। और अगर तेरी क़ुदरत का सहारा न मिला तो

الذُّنُوْبُ اِلَى التَّشَبُّثِ بِاَذْيَالِ عَفْوِكَ وَ اَحْوَجَتْنِى الْخَطَايَا اِلَى

किसका सहारा तलाश करूँगा? मुझे गुनाहों ने मजबूर कर दिया है। के तेरी माफ़ी के दामन से

اسْتِفْتَاحِ اَبْوَابِ صَفْحِكَ وَ دَعَتْنِى الْاِسَآئَةُ اِلَى الْاِنَاخَةِ

वाबस्ता हो जाऊँ। ख़ताओं ने तेरी रहमत के दरवाज़े ख़ुलवाने का मोहताज कर दिया है। बुराईयों

بِفِنَآءِ عِزِّكَ وَ حَمَلَتْنِى الْمَخَافَةُ مِنْ نِقْمَتِكَ عَلَى التَّمَسُّكِ

ने दावत दी है के तेरी इज़्ज़त की बारगाह मे डेरे डाल दूँ। और अज़ाब के भय ने आमादा किया है

بِعُرْوَةِ عَطْفِكَ وَ مَا حَقُّ مَنِ اعْتَصَمَ بِحَبْلِكَ اَنْ يُخْذَلَ وَلَا

के तेरी मेहेरबानी के दामन से वाबस्ता हो जाऊँ। ख़ुदाया जो तेरे दामन से वाबस्ता हो जाए उसका

يَلِيْقُ بِمَنِ اسْتَجَارَ بِعِزِّكَ اَنْ يُسْلَمَ اَوْ يُهْمَلَ اِلٰهِى فَلَا تُخْلِنَا

हक़ ये नही है के उसे छोड़ दिया जाए और जो तेरी इज़्ज़त की पनाह तलाश करे वो इस लाएक़ नही

مِنْ حِمَايَتِكَ وَلَا تَعْرِنَا مِنْ رِعَايَتِكَ وَ ذُدْنَا عَنْ مَوَارِدِ الْهَلَكَةِ

है के उसे उसके हाल पर छोड़ दिया जाए। ख़ुदाया मुझे अपनी हिमायत से ख़ाली न करना और

فَاِنَّا بِعَيْنِكَ وَ فِيْ كَنَفِكَ وَلَكَ اَسْئَلُكَ بِأَهْلِ خَاصَّتِكَ مِنْ

अपनी निगरानी से महरूम न करना। और हलाक़त के मक़ामात से बचा लेना के हम तेरी निगाह

مَلاَئِكَتِكَ وَالصَّالِحِيْنَ مِنْ بَرِيَّتِكَ اَنْ تَجْعَلَ عَلَيْنَا وَاقِيَةً

के सामने और तेरे साया रहमत मे हैं। तुझसे सवाल करते हैं मलाएका और नेक मख़लूकात मे तेरे

تُنْجِيْنَا مِنَ الْهَلَكَاتِ وَ تُجَنِّبُنَا مِنَ الْاٰفَاتِ وَ تُكِنُّنَا مِنْ

ख़वास के वासते से के हमारे लिए वो तह०प०फुज क़रार देदे जो हमे हलाकतों से बचा ले और

دَوَاهِيْ الْمُصِيْبَاتِ وَ اَنْ تُنْزِلَ عَلَيْنَا مِنْ سَكِيْنَتِكَ وَ اَنْ

आफ़तों से महफ़ूज़ करके मुसीबतों से अपनी पनाह मे रखे। हम पर अपना सुकून नाज़िल करदे

تُغَشِّيَ وُجُوْهَنَا بِأَنْوَارِ مَحَبَّتِكَ وَ اَنْ تُؤْوِيَنَا اِلٰى شَدِيْدِ رُكْنِكَ

अल्लाह हमारे चेहरों पर अपने प्रेम की चमक दिखा दे। हमे अपने मुस्तहकम रूकुन की पनाह मे

وَ اَنْ تَحْوِيَنَا فِيْ اَكْنَافِ عِصْمَتِكَ بِرَأْفَتِكَ وَ رَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ

लेले। और हमे अपनी मेहेरबानियों की इस्मत के जेरे साया महफ़ूज़ बना दे मेहेरबानी और रहमत

الرَّاحِمِيْنَ.

के सहारे। ऐ मेहेरबानी करनेवाले।

पंद्रहवीं मुनाजात

मुनाजात अल-ज़ाहिदीन

ज़ाहिदों की मुनाजात

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

ख़ुदा के नाम से जो रहमान व रहीम है।

اِلٰهِيۡ اَسۡكَنۡتَنَا دَارًا حَفَرَتۡ لَنَا حُفَرَ مَكۡرِهَا وَ عَلَّقۡتَنَا

ऐ ख़ुदा तूने हमे ऐसे घर मे साकिन बनाया है, जिस्मे हमारे सामने मक्र के गढ़े खोद रखे हैं। और आरजुओं

بِاَيۡدِي الۡمَنَايَا فِيۡ حَبَآئِلِ غَدۡرِهَا فَاِلَيۡكَ نَلۡتَجِئُ مِنۡ

के हाथों ने धोके की रस्सीयों मे जकड़ दिया है। अब हम उसके मक्र व फ़रेब से तेरी पनाह मे आ रहे

مَكَآئِدِ خُدَعِهَا وَ بِكَ نَعۡتَصِمُ مِنَ الۡاِغۡتِرَارِ بِزَخَارِفِ

हैं। और उसकी जीनतों के धोके मे पड़ने से बचने के लिए तेरी हिफ़ाज़त चाहते हैं। ये दुनिया अपने

زِيۡنَتِهَا فَاِنَّهَا الۡمُهۡلِكَةُ طُلَّابَهَا الۡمُتۡلِفَةُ حُلَّالَهَا الۡمَحۡشُوَّةُ

चाहनेवालों को हलाक़ करनेवाली है। और अपने वारिदों को निकाल देने वाली है। आफ़तों से भरी हुई

بِالۡاٰفَاتِ الۡمَشۡحُوۡنَةُ بِالنَّكَبَاتِ اِلٰهِيۡ فَزَهِّدۡنَا فِيۡهَا وَ

और मुसीबतों से ममलू है। ख़ुदाया इस दुनिया मे हमे ज़ोहद अता फ़रमा और उसके शर से महफ़ूज़ फ़रमा

سَلِّمْنَا مِنْهَا بِتَوْفِيْقِكَ وَ عِصْمَتِكَ وَ انْزَعْ عَنَّا جَلَابِيْبَ

अपनी तौफ़ा०rक और इस्मत के ज़रिए हमसे अपनी मुख़ालिफ़त के लिबास उतरवा दे। और हमारे उमूर

مُخَالَفَتِكَ وَ تَوَلَّ اُمُوْرَنَا بِحُسْنِ كِفَايَتِكَ وَ اَوْفِرْ مَزِيْدَنَا

के लिए तू ही ज़िम्मेदार बनकर उनकी बेहतरीन किफ़ायत कर। अपनी वसी रहमत से ज़्यादा अता कर।

مِنْ سَعَةِ رَحْمَتِكَ وَ اَجْمِلْ صِلَاتِنَا مِنْ فَيْضِ مَوَاهِبِكَ

और अपने बेहतरीन अताया से हमारे साथ अच्छे अच्छे बरताओ करना। हमारे दिलों मे अशजारे मुहब्बत

وَ اَغْرِسْ فِيْ اَفْئِدَتِنَا اَشْجَارَ مَحَبَّتِكَ وَ اَتْمِمْ لَنَا اَنْوَارَ

बिठा दे और हमारे लिए अनवारे मारेफ़त को मुकम्मला् करदे। हमे अपनी माफ़ी की हलावत अता फ़रमा

مَعْرِفَتِكَ وَ اَذِقْنَا حَلَاوَةَ عَفْوِكَ وَ لَذَّةَ مَغْفِرَتِكَ وَ اَقْرِرْ

और हमे मग़ाफ़िरत की लज़्ज़त से आशना बना दे। हमारी आखों को क़यामत के दिन अपने दीदार से

اَعْيُنَنَا يَوْمَ لِقَآئِكَ بِرُؤْيَتِكَ وَ اَخْرِجْ حُبَّ الدُّنْيَا مِنْ

ठंडा कर देना और हमारे दिलोंसे दुनिया की मुहब्बत निकाल देना। जैसे तूने अपने नेक और चुने हुए और

قُلُوْبِنَا كَمَا فَعَلْتَ بِالصَّالِحِيْنَ مِنْ صَفْوَتِكَ وَ الْاَبْرَارِ مِنْ

तमाम मख़लूक़ात मे नेक किरदार लिगों के साथ सुलूक किया है। अपनी रहमत के सहारे ऐ अरहमर

خَاصَّتِكَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ وَ يَا اَكْرَمَ الْاَكْرَمِيْنَ.

राहिमीन और ऐ बेहतरीन करम करनेवाले।

इमाम अली (अ) की मुनाजात

सहीफ़ा अलविया की एक मुनाजात:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

ख़ुदा के नाम से जो रहमान व रहीम है।

لَكَ الْحَمْدُ يَا ذَا الْجُودِ وَالْمَجْدِ وَالْعُلٰى تَبَارَكْتَ تُعْطِي مَنْ

हम्द तेरी मालिके मज्द व करम रब्बे अला। तेरी ही बरकत से वाबस्ता है हर मना व अता।

تَشَاءُ وَتَمْنَعُ اِلٰهِي وَخَلَّاقِي وَحِرْزِي وَمَوْئِلِي اِلَيْكَ لَدَى

मेरे मालिक मेरे ख़ालिक मेरा मल्जा तू ही है। तेरी ही दरगाह है मावा ए हर फ़क्र व ग़िना।

الْاِعْسَارِ وَالْيُسْرِ اَفْزَعُ اِلٰهِي لَئِنْ جَلَّتْ وَجَمَّتْ خَطِيئَتِي

मेरे मालिक लाख हो जाएं मेरे गुनाह अज़ीम। अफ़ू से तेरे नही बाला मेरी कोई ख़ता। मेरे

فَعَفْوُكَ عَنْ ذَنْبِي اَجَلُّ وَاَوْسَعُ اِلٰهِي لَئِنْ اَعْطَيْتُ نَفْسِيَ

मालिक कर के पूरी नफ़्स की हर आरज़ू। आज बूस्ताने पशेमानी मे है मेरी ाग़िज़ा। मेरे

سُؤْلَهَا فَهَا اَنَا فِي رَوْضِ النَّدَامَةِ اَرْتَعُ اِلٰهِي تَرٰى حَالِي

मालिक फ़क्र व फ़ाक़े का है मेरे तू अलीम। और फ़िर सुनता है तू ही मेरी हर मख़्फ़ी दुआ।

وَفَقْرِي وَفَاقَتِي وَاَنْتَ مُنَاجَاتِي الْخَفِيَّةَ تَسْمَعُ اِلٰهِي

मेरे मालिक हूँ तेरे अलताफ़ का उम्मीदवार। नाउम्मीदी और गुमराही से अब तू ही बचा।

فَلَا تَقْطَعْ رَجَائِي وَلَا تُزِغْ فُؤَادِي فَلِي فِي سَيْبِ جُودِكَ

मेरे मालिक के किया अगर तूने रूस्वा व ज़लील। किस से माँगूंगा मदद और कौन है शाफ़े

مَطْمَعٌ اِلٰهِي لَئِنْ خَيَّبْتَنِي اَوْ طَرَدْتَنِي فَمَنْ ذَا الَّذِي اَرْجُو

मेरा? मेरे मालिक दे मुझे नारे जहन्नम से नजात। मै ज़लील व ख़ाएफ व ख़ाजे हूँ एक बंदा

وَمَنْ ذَا اُشَفِّعُ اِلٰهِي اَجِرْنِي مِنْ عَذَابِكَ اِنَّنِي اَسِيرٌ ذَلِيلٌ

तेरा। मेरे मालिक ह०र्फे हक़ की मुझको तलकीं चाहिए। गोशा ए तारीक तुरबत मे हो जिस

خَائِفٌ لَكَ اَخْضَعُ اِلٰهِي فَآنِسْنِي بِتَلْقِينِ حُجَّتِي اِذَا كَانَ

दम मेरी जाँ। मेरे मालिक अगर हज़ारों साल हो मुझ पर अज़ाब। रिशता ए उम्मीद तुझसे

لِي فِي الْقَبْرِ مَثْوًى وَمَضْجَعٌ اِلٰهِي لَئِنْ عَذَّبْتَنِي اَلْفَ حِجَّةٍ

हो नही सकता जुदा। मेरे मालिक मालो औलाद जब बेफ़ाएदा हों तू चखा देना मुझे अपने

فَحَبْلُ رَجَائِي مِنْكَ لَا يَتَقَطَّعُ اِلٰهِي اَذِقْنِي طَعْمَ عَفْوِكَ

करम का ज़ाएका। मेरे मालिक मै फ़ना हो जाऊँगा तेरे बग़ैर। तू महाफ़ज है तो ाफ़िर मुझको

يَوْمَ لَا بَنُونَ وَلَا مَالٌ هُنَالِكَ يَنْفَعُ اِلٰهِي لَئِنْ لَمْ تَرْعَنِي

नही ख़ाफ़े फ़ना। मेरे मालिक ग़ैरे मोहसिन को न अगर बख़्शेगा तू। ख़्वाहिशों से खेलनेवाले

كُنْتُ ضَائِعًا وَاِنْ كُنْتَ تَرْعَانِي فَلَسْتُ اُضَيَّعُ اِلٰهِي اِذَا

का आाख़िर होगा क्या? मेरे मालिक राहे तक़्वा मे जो है कोताहियाँ। उनकी ख़ातिर ढूंडता

لَمْ تَعْفُ عَنْ غَيْرِ مُحْسِنٍ فَمَنْ لِمُسِيءٍ بِالْهَوٰى يَتَمَتَّعُ اِلٰهِي

हूँ मग़ाफ़िरत के नख़्शे पा। मेरे मालिक अगर जेहालत से किये मैने गुनाह। इस कदर रोया

لَئِنْ فَرَّطْتُ فِي طَلَبِ التُّقٰى فَهَا اَنَا اِثْرَ الْعَفْوِ اَقْفُو وَاَتْبَعُ

तेरी रहमत को जोश आ ही गया। मेरे मालिक हैं गुनाह मेरे पहाड़ों से बुलंद। पर माफ़ी है

اِلٰهِي لَئِنْ اَخْطَاْتُ جَهْلًا فَطَالَمَا رَجَوْتُكَ حَتّٰى قِيلَ مَا

तेरी उन रफ़अतों से मा सिवा। मेरे मालिक अगरचे है बादे करम वझे सुकून। फिर भी रूला

هُوَ يَجْزَعُ اِلٰهِي ذُنُوبِي بَذَّتِ الطَّوْدَ وَاعْتَلَتْ وَصَفْحُكَ عَنْ

देता है मुझको अपना एहसासे ख़ता। मेरे मालिक लगाज़िशों को मेरी करदे अब माफ़। मै हूँ

ذَنْبِي اَجَلُّ وَاَرْفَعُ اِلٰهِي يُنَجِّي ذِكْرُ طَوْلِكَ لَوْعَتِي وَذِكْرُ

ख़ाएफ मोतरिफ़ गिरया कुना बंदा तेरा। मेरे मालिक कर अता मुझको सुकून व मरहमत। मैं

الْخَطَايَا الْعَيْنَ مِنِّي يُدَمِّعُ اِلٰهِي اَقِلْنِي عَثْرَتِي وَامْحُ حَوْبَتِي

नही करता कभी ग़ैरों के दर पर इलतिजा। मेरे मालिक कर दिया अगर तूने मरदूदो ज़लील।

فَاِنِّي مُقِرٌّ خَائِفٌ مُتَضَرِّعُ اِلٰهِي اَنِلْنِي مِنْكَ رَوْحًا وَرَاحَةً

किससे उम्मीदे करम है कौन है शाफे मेरा? मेरे मालिक दोस्त तेरे ऐसे हैं शब जिंदादार।

فَلَسْتُ سِوٰى اَبْوَابِ فَضْلِكَ اَقْرَعُ اِلٰهِي لَئِنْ اَقْصَيْتَنِي

ग़ाफ़िलों के ख़ाब के हंगाम करते हैं दुआ। मेरे मालिक अगर तेरे कुछ बंदे महवे ख़ाब हैं। कुछ

اَوْ اَهَنْتَنِى فَمَا حِيلَتِى يَارَبِّ اَمْ كَيْفَ اَصْنَعُ اِلٰهِى حَلِيفُ

हैं ऐसे भी जो हैं बेदार और स०र्फे बुका। मेरे मालिक सब हैं तेर लुत्फ़ के उम्मीदवार। तेरी

الْحُبِّ فِى اللَّيْلِ سَاهِرٌ يُنَاجِى وَيَدْعُو وَالْمُغَفَّلُ يَهْجَعُ اِلٰهِى

जन्नत के सवाली तेरी रहमत के गवाह। मेरे मालिक है उम्मीदों से उम्मीदे आफ़ियत। वरना

وَهٰذَا الْخَلْقُ مَا بَيْنَ نَائِمٍ وَمُنْتَبِهٍ فِى لَيْلِهِ يَتَضَرَّعُ وَكُلُّهُمْ

हैं सारी ख़ताएँ तनाज़े बर हाले मा। मेरे मालिक तेरी बख़्शिश से ही मुम्किन है नजात। वरना

يَرْجُو نَوَالَكَ رَاجِيًا لِرَحْمَتِكَ الْعُظْمٰى وَفِى الْخُلْدِ يَطْمَعُ

ये मोहलिक खताएं मुझ को कर देंगी फ़ना। मेरे मालिक तेरे पैग़म्बर नबी ए हाशमी। और

اِلٰهِى يُمَنِّينِى رَجَائِى سَلَامَةً وَقُبْحُ خَطِيئَاتِى عَلَىَّ يُشَنِّعُ

उनकी पाको ख़ाशे आल का है वास्ता। मेरे मालिक मुस्तफ़ा और उनके इब्ने अम के साथ।

اِلٰهِى فَاِنْ تَعْفُو فَعَفْوُكَ مُنْقِذِى وَاِلَّا فَبِالذَّنْبِ الْمُدَمِّرِ

वास्ता उन नेक बंदों का जो हैं तुझ पर फ़िदा। मेरे मालिक दीने अहमद पर उठाना क़ब्र से।

اُصْرَعُ اِلٰهِى بِحَقِّ الْهَاشِمِىِّ مُحَمَّدٍ وَحُرْمَةِ اَطْهَارٍ هُمْ لَكَ

मुत्तकी पाकीज़ा सीरत ब अमल और ब सफ़ा। मेरे मालिक मै न महरूमे शफ़ाअत हो सकूँ।

خُضَّعُ اِلٰهِى بِحَقِّ الْمُصْطَفٰى وَابْنِ عَمِّهِ وَحُرْمَةِ اَبْرَارٍ هُمْ

हश्र मे उनको बनाना मेरा शाफ़े ऐ ख़ुदा। मेरे मालिक ता अबद हों उनपे रहमत का नुज़ूल।